यर्मियाह

यर्मियाह नामक पुस्तक

1 हिल्किय्याह के बेटे यर्मियाह का संदेश,
जो बिन्यामीन के इलाके के अनातोत में
रहनेवाले पुरोहितों में से एक था। 2 आमोन
के बेटे यहूदा के राजा योशिय्याह के दिनों में
अर्थात उसके राज्य के तेरहवें साल में याहवे
की ओर से यह समाचार पहुँचा। 3 योशिय्याह
के बेटे यहूदा के राजा यहोयाकीम के समय
में तथा योशिय्याह के बेटे यहूदा के राजा
सिदकिय्याह के राज्य के ग्यारहवें साल के
आखिर तक भी, अर्थात उसी साल के पांचवे
महीने तक मिलता रहा, जब तक यरूशलेम
में रहनेवाले गुलामी में न चले गए। 4 याहवे
की ओर से यह संदेश मुझे मिला, 5 माँ की
कोख में तुम्हें बनाने से पहले मैं तुम्हे जानता
था। तुम्हारे पैदा होने से पहले मैंने तुम्हारा
अभिषेक किया था। तुम्हें मैंने तमाम देशों
के लिए नबी ठहराया है।" 6 मैंने जवाब
में कहा, " हाय याहवे देखिए, मैं अभी
बच्चा हूँ और मैंने बोलना तक नहीं सीखा
है।" 7 लेकिन याहवे मुझ से बोले, "ऐसा
मत बोलो, मैं तुम्हें जहाँ भेजूँगा, तुम वहीं
जाओगे। तुम्हें वही कहना होगा जो आदेश
मैं दूँगा। 8 "तुम उन से डरना नहीं, क्योंकि मैं
तुम्हारे साथ हूँ ताकि तुम्हें छुडा लूँ।" यह
मेरी कही बात है। 9 इसके बाद याहवे ने
हाथ बढ़ाया और मेरे ओठों को छू लिया
और कहा, "मैंने अपनी बातों को तुम्हारे
मुँह में डाल दिया है। 10 हाँ और यह भी कि
आज मैंने देशों और राज्यों पर तुम्हें ठहराया
है, ताकि तुम उन्हें उखाड़ फेंको, बर्बाद
कर डालो, उनका तख्ता पलटो, बनाओ
और रोपो।" 11 तब याहवे के ये शब्द मेरे
पास पहुँचे, "हे यर्मियाह, तुम क्या देख
रहे हो ?" मैंने कहा," मैं बादाम की एक
डाली देख रहा हूँ" 12 तब याहवे ने कहा,
" बिल्कुल ठीक, मैं अपनी कही बात को
पूरा करने के लिए लालायित हूँ।" 13 तब
याहवे का संदेश दूसरी बार मुझे मिला,"तुम
क्या देख रहे हो?" मैं बोला,"एक बर्तन,
जिसका मुँह उत्तर की ओर झुका हुआ है
और उस में जो कुछ है, उबल रहा है।"
14 तब याहवे ने कहा, "इस देश के रहनेवालों
पर उत्तर से मुसीबत आने वाली है। 15 देखो
मैं, उत्तरी राज्य के कुलों को बुला रहा हूँ
ताकि वे आएँ। उन्हें आकर यरूशलेम के
फाटकों पर और इसकी शहरपनाह के चारों
ओर तथा यहूदा के सभी शहरों के सामने
अपना अपना राजासन लगाएँ। 16 उनके
नैतिक पतन (सही रास्ते पर न चलने) के
कारण मैं उन पर सज़ा उण्डेलूँगा। इस सज़ा
का कारण यह है कि उन्होंने मुझे छोड़
दिया और दूसरे ईश्वरों और मूरतों के लिए
भजन-कीर्तन किया। 17 तुम अपनी कमर
कस लो और मैं जो आदेश दूँ, उन तक
पहुँचाओ। उन्हें देखकर डरना नहीं, ताकि
मैं तुम्हें उनके सामने घबराहट में न डाल
दूँ। 18 आज मैंने तुम्हें पूरे देश और यहूदा
के राजा, उसके अधिकारियों, पुरोहितों और
उसके देशवासियों के खिलाफ़ मजबूत नींव
वाला शहर, लोहे का खंभा और काँस की

शहरपनाह बनाया है। 19 वे तुम्हारे खिलाफ़
लड़ेंगे लेकिन जीत न सकेंगे। ऐसा इसलिए
क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ।

2 याहवे की ओर से मुझे संदेश मिलाः
2 यरूशलेम के कानों में यह एलान
करो,"तुम्हारी जवानी का प्यार और विवाह
के समय का तुम्हारा प्यार मुझे याद है
कि तुम जंगल में किस तरह मेरे पीछे-पीछे
ऐसी ज़मीन में होकर चली आती थी, जिसे
जोता-बोया न गया था। 3 याहवे के लिए
इस्राएल अलग किया हुआ फसल का फल
था। उसमें से खाने वाले सभी लोग दोषी
ठहरे और उन पर मुसीबत आ गई।" 4 हे
याकूब के कुटुम्ब, इस्राएल के घराने और
कुल के लोगो, याहवे की बातें सुनों, 5 "मैंने
तुम्हारे पुरखों के साथ क्या बेईन्साफी का
काम किया, कि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और
बेकार की चीज़ों को अपनाने लगे? 6 वे कहने
लगे,"वह याहवे कहाँ है जो हमें मिस्र की
गुलामी से निकाल कर लाए थे? एक ऐसा
देश जो सूखा था और बहुत गड्ढे थे। वहाँ
पानी की कमी थी और घुप्प अन्धेरा था। वह
ऐसा देश था, जिस से होकर कोई चला नहीं
था और न ही वहाँ कोई रहता था। 7 तुमको
मैं इस उपजाऊ ज़मीन पर इसलिए लाया
कि तुम यहाँ की उपज का फ़ायदा उठाओ।
लेकिन यहाँ आकर तुमने इस ज़मीन को
अशुद्ध कर दिया और मेरी मीरास को घिनौना
बना डाला। 8 पुरोहित (याजकों) ने भी ये
सवाल नहीं किया, याहवे कहाँ हैं? वे लोग
जो परमेश्वर के नैतिक नियमों को सिखाया
करते थे। मुझे नहीं जानते थे। अधिकारियों
ने भी मेरे खिलाफ़ बगावत की। नबियों ने
बाऊल की ओर से नबूवत की और बेकार
की बातों को मानने व करने लगे। 9 याहवे
कहते हैं, इसी वजह से मै, तुम्हारे बेटों और
पोतों से बातचीत (विवाद) करूँगा। 10 समुद्र
को पार करो और कित्तियों के समुद्र तटों
पर नज़र डालो और केदार में दूत भेज कर
अच्छी तरह से देखो कि ऐसा कभी और
कहीं हुआ। 11 क्या कोई देश अपने देवताओं
को जो ईश्वर नहीं हैं, बदल सका है ?
लेकिन मेरे लोगों ने अपनी शान को बेकार
की चीज़ों से बदल दिया है। 12 याहवे का
कहना है,"हे आकाश इस बात पर आश्चर्य
करो, काँपो और उजाड़ हो जाओ। 13 क्योंकि
मेरे लोगों ने दो बुराईयाँ की हैः उन्होंने मुझे
अर्थात जीवन के पानी के सोते को छोड़
दिया है और अपने लिए हौज बनाए हैं। ऐसे
टूटे हुए हौज़ जिनमें पानी रूकता भी नहीं
है। 14 क्या इस्राएल दास है या मेरे घर में
पैदा हुआ नौकर है? तो वह शिकार क्यों
बन गया ? 15 जवान शेर उस पर गरज उठे,
वे उस पर ऊँची आवाज से गुर्राए। उन्होंने
उसके देश को बर्बाद कर डाला है। उसके
नगर भी नाश किए जा चुके हैं। 16 मेम्फिस
और तहपन्हेस के आदमियों ने तुम्हारे सिर
के बाल उतार डाले हैं। 17 क्या यह तुम्हारे
उनकामों का नतीज़ा नहीं है, कि तुमने अपने
परमेश्वर तो तज दिया है, जिन्होंने तुम्हें
रास्ता दिखाया था। 18 अब तुम मिस्र के रास्ते
पर क्या करने जा रहे हो ? क्या नील नदी
का पानी पीना है? या असीरिया के रास्ते
पर क्या करोगे ? फरात का पानी पिओगे
? 19 तुम्हारी बुराई तुम्हें ठीक कर देगी और
तुम्हारे अनैतिक काम तुम्हें डाँट लगाएँगे।
तुम यह जान लो कि याहवे परमेश्वर को
छोड़ देना नुकसानदायक और कड़वा होगा।
तुम मेरी बातों को मानने में दिलचस्पी नहीं
लेते हो। 20 बहुत समय पहले, मैंने तुम्हारे
बोझ को हटाया था और बन्धनों को तोड़ा
था। लेकिन तुम कहते थे, " मैं परमेश्वर

के कहे अनुसार न करूँगी। हर एक ऊँचे
टीले और हर एक हरे पेड़ के नीचे तुम यौन
व्यापार करने वाली महिला की तरह लेटी
रही। 21 मैंने तुम्हें बोते समय सोचा था कि
यह बीज काम का है। तब तुम मेरे लिए
एक जंगली अंगूर की बेल की सड़ी डालियाँ
कैसे बन गयी? 22 हालाँकि तुम अपने आप
को सज्जी से धोए और साबुन का इस्तेमाल
करो, फिर भी अनैतिक कामों का दाग मुझे
दिखता रहता है। 23 तुम यह सवाल कैसे
पूछ सकती हो, मैं अशुद्ध नहीं हूँ, मैं बाअल
देवता को नहीं मानती हूँ ? जिस तरह का
जीवन तुमने तराई में जिया है तुम एक जवान
फुर्तीली ऊँटनी की तरह हो जो मटकती है।
24 तुम जंगल में पली जंगली गदही की तरह
हो, जो कामाग्नि में इधर-उधर भाग रही
हो और सूँघती हो। ऐसे समय में उसे कौन
भगा सकेगा ? उसे ढूँढने वाले थकते नहीं
है, क्योंकि उसको ऋतु में वे उसे पा लेंगे।
25 नंगे पैर मत रहो, न ही गला सूखने दो।
लेकिन तुमने कहा,"यह सब बेकार है। मैंने
पराए लोगों से मोहब्बत की है और मैं उन्हीं
के पीछे जाऊँगी। 26 जिस तरह चोर पकड़े
जाने पर शर्मिन्दा होता है, वैसे ही इस्राएल
अपने राजाओं, अधिकारियों, पुरोहितों और
नबियों के साथ शर्मिन्दा होगा। 27 वे लकड़ी
से कहते हैं, "तुम मेरे पिता हो", पत्थर
से कहते हैं, "तुमने मुझे जन्म दिया है।"
उन लोगो ने अपनी पीठ मेरी ओर कर दी
है। परेशानी के समय में मुझ से मदद पाना
चाहते है। 28 लेकिन जिन देवताओं को तुमने
अपने लिए बनाया था, वे अभी कहाँ है?
यदि तुम्हारी मुसीबत से वे तुम्हें छुड़ा नहीं
सकते, तो वे उठें। इसलिए कि तुम्हारे नगरों
की संख्या जितनी है, उतनी ही देवताओं
की भी है। 29 तुम मुझ से क्या वाद-विवाद
करते हो ? तुम सभी ने मेरे खिलाफ़ अपराध
किया है। 30 मैंने बेकार में तुम्हारे बेटों को
मारा। डाँट-डपट की उन लोगों ने परवाह
नहीं की। तुम्हारी तलवारों ने तुम्हारे नबियों
को खूँखार शेरों की तरह निगल लिया है।
31 इस पीढ़ी के लोगों याहवे से बातों पर
ध्यान दो। क्या मैं इस्राएल के लिए जंगल का
घोर अन्धकार वाला देश बना ? मेरे लोग
यह कह क्यों कहते है, " कि हम भटकते
रहने के लिए आज़ाद है ? हम आपके पास
अब नहीं आएँगे। 32 क्या कोई कुँवारी अपना
सिंगार या दुल्हिन अपने सिंगार का साज
समान भूल सकती है ? फिर भी मेरे लोग मुझे
भुला चुके है। 33 आकर्षित करने के लिए तुम
कैसी नज़ाकत से चलती हो। बुरी महिलाओं
को भी तुमने अपनी सी चाल सिखा दी है।
34 तुम्हारे घाघरे में गरीबों के खून का दाग
लगा है। तुमने इन्हें सेज लगाते नहीं पाया था।
इन सब बातों के बावजूद तुम्हारा कहना है,
"मैं अबोध हूँ। 35 मुझ पर से उनका गुस्सा
मुझ से दूर हो चुका है।" देखो, मैं तुम्हारा
इन्साफ करूँगा, क्योंकि तुम कहती हो, "मैंने
परमेश्वर के विरोध में कुछ नहीं किया।
36 अपना चालचलन बदल कर तुम इतना
क्यों फिरती हो ? जिस तरह तुम अश्शूरियों
द्वारा शर्मिंदा कर दी गई थी। उसी तरह तुम
मिस्री लोगों से शर्मिन्दा की जाओगी। 37 यहाँ
से भी तुम्हें अपने सिर पर हाथ रखे जाना
होगा। इसलिए कि याहवे उन्हें ठुकरा चुके
हैं, जिन पर तुमने भरोसा रखा था। तुम्हें उनके
साथ सफलता न मिलेगी।

3 परमेश्वर कहते हैं,"यदि कोई पति
अपनी पत्नी को त्याग दे और वह
महिला किसी और की हो जाए,तो क्या फिर
से उसके पास जाएगा? क्या वह मुल्क पूरी
तरह से गंदा न हो जाएगा? लेकिन तुम

वेश्या हो और तुम्हारे चाहने वाले बहुत
से हैं लेकिन तुम फिर भी मेरे पास लौट
आती हो,“यह याहवे का कहना है। 2 अपनी
आँखे उठाओ और नंगे टीलों पर दृष्टि डालो।
कौनसी जगह है जहाँ तुम्हारे साथ बुरा काम
न किया गया था ? तुम रास्तों में अपने
चाहने वालो के लिए ऐसे बैठी रहती थी,
जैसे अरबी रेगिस्तान में और तुमने अपने
यौन अपराध और दुष्टता से एक देश को
गंदा कर दिया है। 3 इसी कारणवश पानी
नहीं बरस रहा है और बसन्त की बौछार भी
नहीं है। तुम्हारा माथा यौन व्यापार में लगी
महिला की तरह है, क्योंकि शर्म तो आती
नहीं है। 4 क्या तुमने अभी -अभी यह कहकर
मुझे नहीं पुकारा, हे पिता, तुम मेरी जवानी
का दोस्त है 5 क्या वह हमेशा गुस्सा और
नाराज़ रहेंगे ? देखों, तुम ऐसी बातें तो कह
चुकी लेकिन जहाँ तक तुम से बना, तुमने
गलत काम किए। 6 तब योशिय्याह राजा
के शासन में याहवे ने मुझ से कहा,“क्या
तुमने देखा कि धोखा देनेवाले इस्राएल ने
क्या किया ? उसने हर एक हरे पेड़ के
नीचे जाकर व्यभिचार किया। 7 मेरा विचार
था,“ इन सभी कामों को करने के बाद वह
वापस आएगी, लेकिन ऐसा हुआ नहीं उसकी
विश्वासघाती बहन यहूदा, यह देखती रही।
8 मैंने देखा कि विश्वासघातिनी इस्राएल के
व्यभिचार (परमेश्वर को त्याग कर दूसरे
ईश्वरों को मानने लगता) की वजह से
तलाकनामा दे दिया। 9 उसने यौन व्यापार
(लकड़ी और पत्थर की मूर्तियों की पूजा)
को एक मामूली सी बात समझी और देश
को गंदा कर डाला। 10 यह सब हो गया फिर
भी उसकी बहन यहूदा धोखेबाज निकली,
क्योंकि उसने पूरे मन से मन बदलाव नहीं
किया। 11 याहवे मुझसे बोले, “विश्वासघात
करने वाली इस्राएल ने धोखा देने वाले यहूदा
से ज्यादा खुद को चरित्रवान सिध्द किया है।
12 जाकर उत्तर दिशा में इन शब्दों को कहते
है विश्वासघातिनी इस्राएल लौट आओ। मैं
याहवे तुम को सज़ा नहीं दूँगा, क्योंकि मैं
कृपा करने वाला हूँ। 13 अपनी गलत राह
पर चलने को मान लो कि परमेश्वर याहवे
के खिलाफ़ तुमने बगावत की है और हर
एक हरे पेड़ के नीचे पराए ईश्वरों की पूजा
है। 14 याहवे का कहना है, “विश्वासहीन
बच्चो वापस लौट आओ, क्योंकि मैं तुम्हारा
मालिक हूँ। मैं एक एक परिवार एक या दो
को लेकर सिय्योन पहुँचा दूँगा। 15 तब मैं
तुम्हें अपनी इच्छा के अनुसार ऐसे रखवाले
दूँगा, जो तुम्हें ज्ञान और समझ रूपी खाना
खिलाएँगे। 16 याहवे कहते है,“ उस समय
जब तुम देश में समृध्द होंगे और गिनती
में भी बढ़ जाओंगे। तब लोग याहवे की
वाचा के सन्दूक की बात न करेंगे। यह
बात न उनके मन में आएगी, न ही उसे याद
करेंगे। उन्हें उसकी कमी महसूस न होगी
और न व फिर से बसाया जाएगा। 17 तब
वे यरूशलेम को याहवे का राजासन कहेंगे
और सभी देश याहवे के नाम से यरूशलेम
में इकट्ठा किये जाएँगे। फिर वे कभी अपनी
ढिठाई से न जिएँगे। 18 उन दिनों, यहूदा का
घराना इस्राएल के घराने के साथ होगा।
और वे दोनों मिलकर उत्तर के देश से इस
देश में आएँगे, जिसे मैंने तुम्हारे पुरूखाओं
को दिया था। 19 तब मैंने कहा,“ मैं अपने
बच्चो के बीच में तुम्हें लुभानेवाला देश देता
हूँ, दुनिया में जिसकी खूबसूरती समझ से
बाहर है।” मैंने सोचा था कि तुम मेरे पिता
कहोगी और मेरे पीछे चलोगी। 20 अवश्य,
जिस तरह एक महिला अपने प्रेमी को धोखा
देकर चली जाती है, उसी तरह हे इस्राएल,

तुमने मेरे साथ दगाबाज़ी की है। 21 नंगे टीलों
से इस्राएल के बेटों को रोने -गिडगिड़ाने
की आवाज आ रही है, क्योंकि वे रास्ते
से भटक गए हैं। अपने परमेश्वर को वे
भुला चुके हैं। 22 हे भरोसेमन्द बेटो, वापस
आ जाओ मैं तुम्हारी अविश्वासयोग्यता को
ठीक करूँगा। “ देखिए हम आपके पास
आए हैं, क्योंकि आप हमारे परमेश्वर हैं।”
23 सचमुच में पहाड़ियाँ छल हैं , पहाड़ो का
हल्ला-गुल्ला बेकार है। इस्राएल के परमेश्वर में
ही बचाव है। 24 हमारी जवानी के दिनों से ही
उस शर्मनाक वस्तु ने हमारे पूर्वजों की कमाई
अर्थात उनकी भेड़-बकरियों, गाय-बैल और
उनके बच्चों को समाप्त कर दिया है। 25 अपनी
शर्म में हम लेट जाएँ। हमारा निरादर हमें ढँक
ले। अपने पुरखों के परमेश्वर के खिलाफ़
हमने जीवन जिया है और हमारे पुरखाओं
ने भी। हमने याहवे परमेश्वर की बात नहीं
मानी।

4 याहवे कहते हैं, “हे इस्राएल यदि तुम
लौटो, तो मेरे पास ही आना। यदि तुम
अपनी घिनौनी चीज़ो को मुझ से दूर करो
और न घबराओ। 2 और सच्चाई, इन्साफ
तथा खराई में याहवे की शपथ खाओ, तब
देश उसके कारण अपने को धन्य कहेंगे
और उस पर घमण्ड करेंगे। 3 यहूदा और
यरूशलेम के निवासियों से याहवे कहते हैं,“
अपनी ज़मीन को जोतो। कँटीली झाड़ियों में
बीज मत बोना। 4 हे यहूदा और यरूशलेम
में रहनेवालो, याहवे के लिए अपने मन का
खतना करो। नहीं मेरा गुस्सा आग की तरह
भड़क उठेगा। इस आग को कोई बुझा न
पाएगा। 5 यहूदा और यरूशलेम में नरसिंगा
फूँककर एलान करो “सब यहाँ इकट्ठा हो,
फिर हम गढ़वाले नगर को एक चलेंगे।
6 सिय्योन की ओर झण्डा लगाओ अपना
सामान लेकर भागो खड़े मत रहो, क्योंकि
मैं उत्तर दिशा से मुसीबत लाऊँगा। 7 एक शेर
झाड़ियों से निकल पड़ा है, ताकि तुम्हारे राष्ट्र
को नाश कर दे। तुम्हारे नगर उजाड़ दिए
जाएँगे। 8 इसलिए टाट ओढ़ लो और रोओ,
क्योंकि हम पर से परमेश्वर का भयंकर
क्रोध हटा नहीं है। 9 उस दिन राजा और
अधिकारियों का मन घबरा जाएगा। पुरोहित
और नबी लोगों के पैर से ज़मीन खिसक
जाएगी।” 10 तब मैं बोला, “प्रभुजी अपनी
प्रजा से शान्ति का वायदा करके आपने
झूठी आशा दी है।” 11 उस समय इस प्रजा
और यरूशलेम को बताया जाएगा। जंगल के
झुण्ड टीलों से मेरी प्रजा की बेटी की ओर
लू चलेगी। यह लू फटकने और साफ करने
के लिए न होगी। 12 लेकिन मेरे आदेश से
तेज हवा बहेगी। अब मैं उन पर दण्ड का
आदेश दूँगा। 13 देखो वह बादलों की तरह
चढ़ा आ रहा है। उसके रथ बवण्डर की
तरह और घोड़े उकाब से ज़्यादा तेज रफ्तार
रखने वाले हैं। हम पर अफसोस क्योंकि
हमारे दिन गिने हुए हैं। 14 हे यरूशलेम अपने
बुराई छोड़ दो, ताकि बच सको। बुराई
के विचार तुम्हारे अन्दर कब तक रहेंगे?
15 दान नामक जगह से आवाज आ रही है।
एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र से मुसीबत की खबर
आ रही है। 16 देशों में और यरूशलेम में
यह समाचार दो, “ हमला करने वाले, दूर
देश से आकर यहूदा के शहरों के खिलाफ़
ललकार रहे हैं। 17 खेत के रखवालों की
तरह उसको चारो ओर से घेर रहे हैं, क्योंकि
उसने मेरी बात नहीं मानी है, याहवे के ये
वचन हैं। 18 तुम्हारे अनैतिक कामों (सच्ची
राह) से भटकने के कारण ऐसा हो रहा है। यह
तुम्हारी दुष्टता है। इस से तुम्हारे मन का हाल
बेहाल है। 19 अफसोस मेरा मन अन्दर ही

अन्दर तड़पता है, घबराता है। मेरा चुप रहना
मुश्किल है, क्योंकि ऐ मेरी जान, नरसिंगे की
आवाज़ और युद्ध की ललकार तुम तक आ
चुकी है। 20 पूरा देश लुट चुका है और बर्बादी
का समाचार मिल रहा है। अचानक ही मेरे
घर लूटे जा चुके हैं। 21 मुझे और कितने दिनों
तक उनका झुण्डा देखना होगा और उनके
नरसिंगे की आवाज़ सुननी होगी। 22 मेरी प्रजा
बेवकूफ है, वह मुझे नहीं जानती। गलत
काम करने में वे बहुत बुद्धिमान हैं, लेकिन
अच्दा काम नहीं करना जानते है। 23 जब मैंने
अपनी नज़र इस पृथ्वी पर डाली, तो उसे
सुनसान पाया। आकाश में भी कोई रोशनी
नहीं थी। 24 पहाड़ों पर मैने नज़र दौड़ायी
तो देखा कि वे हिल रहे हैं। पहाड़ियाँ भी
डोलती दिखीं। 25 मुझे न ही कोई इन्सान
दिखा, न ही कोई चिड़िया। 26 फिर मैंने देखा
कि याहवे की शक्ति और भड़के हुए गुस्से
के कारण उपजाऊ देश जंगल और उसके
सभी शहर खण्डहर हो गए हैं। 27 याहवे
यह कह चुके थे कि पूरा देश बर्बाद तो
हो जाएगा, लेकिन फिर भी उसका अन्त
न होगा। 28 इसलिए सारी दुनिया रोएगी।
आकाश दुख का काला कपड़ा पहनेगा
क्योंकि ऐसे करने का निश्चय मैं कर चुका
था। यह भी मैं पछताऊँगा नहीं। 29 शहर के
सभी लोग सवारों और धनुर्धारियों का शोर
सुनकर भाग खड़े होते है। वे झाड़ियों में
छिपते और चट्टानों पर चढ़ जाते हैं। सभी
शहर सुनसान हो चुके हैं। उनमें अब कोई भी
नहीं है। 30 उजड़ जाने पर तुम क्या करोगी ?
चाहे तुम लाल रंग के कपड़े पहनो और सोने
के जेवर पहनो, आँखों में अंजन लगाओ,
लेकिन तुम्हारे सिंगार बेकार होगा, क्योंकि
तुम्हारे दोस्त तुम्हें बेकार समझते हैं। वे
तुम्हारे खून के प्यासे हैं। 31 मैंने जच्चा की
आवाज सुनी जैसा पहलौठा जन्मने के समय
आती है। यह सिय्योन की बेटी (यहूदियों)
की आवाज़ है। वह हाँफते और हाथ फैलाते
कहती है, "हाय मुझ पर। मैं हत्यारों के हाथ
में पड़ने के कारण बेहोश हो रही हूँ।"

5 यरूशलेम की गलियों में जाकर ध्यान से
देखो और चौराहों पर ढूँढो। यदि तुम्हें
एक भी ऐसा इन्सान मिल जाए जो ईमानदारी
और सच्चाई से जीता हो, तो मैं उसे माफ कर
दूँगा। 2 हालांकि वे याहवे के नाम की कसम
खाते हैं, लेकिन वे सब झूठी होती हैं। 3 हे
याहवे क्या आप सच्चाई की तलाश में नहीं
रहते हैं? आपने उन्हें सज़ा दी लेकिन उन्हें
दुख न हुआ और ताड़ना का भी कोई प्रभाव
न हुआ। उन्होंने अपना चेहरा चट्टान से ज़्यादा
सख्त कर लिया है वे मन बदलाव के लिए भी
तैयार नहीं है। 4 तब मैं बोला, "वे दिवालिया
हैं और बेवकूफ (बलवई) भी, क्योंकि वे
याहवे या अपने परमेश्वर के रास्ते का ज्ञान
नहीं रखते हैं। 5 अधिकारियों के पास जाकर
उन्हें मैं सुनाऊँगा, क्योंकि उन्हें परमेश्वर
का रास्ता अच्छी तरह से मालूम है। लेकिन
वे एक हो गए है और विरोध किया है।
6 इसलिए जंगल से एक शेर निकल कर
आएगा और उन्हें मारेगा। सुनसाह जगहों से
भेड़िया आएगा और उन्हें बर्बाद कर डालेगा।
एक चीता भी ऐसा ही करेगा। जो कोई बाहर
निकलेगा, उसके टुकडे-टुकड़े हो जाएँगे।
क्योंकि उनके अपराधों की गिनती बहुत बढ़
चुकी है। 7 तुमको मैं माफी क्यों दूँ? तुम्हारे
बेटों ने मुझे छोड़ दिया है। वे जो परमेश्वर
नहीं है, उसे मानने लगे हैं। मैंने जब उनकी
सारी ज़रूरतों को पूरा किया लेकिन वे यौन
व्यापार में लगी महिलाओं के पास गए। 8 वे
खा-खाकर अघा गए और कामुक घोड़ों की
तरह करने लगे। उन में से हर एक दूसरे की

पत्नी को चाहता है। 9 ऐसे लोगों को मैं क्या
सज़ा न दूँ? याहवे का यह कहना है। 10 उसके
दाख की कतारों से होकर जाओ और उन्हें
पूरी तरह नष्ट कर दो। उसकी डालियाँ याहवे
की नहीं हैं, उन्हें तोड़ डालो। 11 इस्राएल
और यहूदा के घराने ने मुझे धोखा दिया है।
12 उन्होंने याहवे की बातों को झूठा कहकर
कहा,"वह हैं ही नहीं। हम पर कोई मुसीबत
नहीं आने की। न ही हमें कोई तलवार से
मारेगा और न ही अकाल हमारा कुछ बिगाड़
सकेगा। 13 उनके लिए नबी हवा की तरह है।
उन लोगों में याहवे की बातें नहीं हैं। उनके
साथ ऐसी ही होगा। 14 इसलिए सेनाओं के
परमेश्वर कहते हैं,"क्योंकि तुमने ऐसा कहा
है, देखो, मैं अपने शब्दों को तुम्हारे मुँह में
आग और इस प्रजा को लकड़ी बनाऊँगा,
जो इन्हे जला डालेगी। 15 याहवे का कहना
यह है," हे इस्राएल दूर देश से तुम्हारे विरोध
में ऐसे लोगों को लाऊँगा, जो ताकतवर और
पुराने समय के है। तुम उनकी भाषा न समझ
पाओगे। 16 उनका तर्कश खुली कब्र होगा। वे
सभी बलवान होंगे। 17 तुम्हारे तैयार खेत और
खाने की चीजें, तुम्हारे बाल बच्चों के लिए
होगी, उसे वे लोग खा जाएँगे। तुम्हारे मवेशी,
अंगूर और अंजीर, ये सब उनकी खाने के
लिए होगा। जिन मजबूत शहरों पर तुम्हारा
भरोसा है, वे भी नष्ट किए जाएँगे। 18 फिर
भी याहवे का वचन है कि वह पूरी तरह से
तुम्हें नाश न करेंगे। 19 जब तुम सवाल करोगे,
हमारे परमेश्वर ने हमसे ऐसा बर्ताव क्यों
किया है, तब उन से कहना कि मुझे छोड़ कर
तुमने दूसरे देवी देवताओं का भजन कीर्तन
किया है, इसलिए तुम्हें दूसरों के देश में वहाँ
के लोगों की सेवा करनी पड़ेगी। 20 याकूब
और यहूदा के घराने में यह एलान करोः
21 "हे बलवई और मूर्खो, तुम आँख होने के
बावजूद देखते नहीं, कान रहने के बावजूद
सुनते नहीं हो। 22 याहवे का संदेश यह है,
कि तुम क्या मुझसे डरते नहीं और थरथराते
नहीं हो? समुद्र की सरहद को मैंने बनाया
है। ताकि तूफान और लहरों के उठने पर भी
पानी सरहद के बाहर न जाए। 23 लेकिन इस
प्रजा का मन ज़िद्दी है और विद्रोही है और
मुझ से दूर हो गए है। 24 ये लोग इतना विचार
भी नहीं करते कि मैं उन्हें समय पर बरसात
देता हूँ और याहवे की बातों को मानना
चाहिए। 25 इनके अनुचित कामों की वजह
ही से अब ये लोग भलाई नहीं देख पा रहे हैं।
26 मेरी प्रजा में दुष्ट काम करने वाले हैं। जिस
तरह से चिड़ीमार बड़ी उत्सुकता से इन्तज़ार
करता है, वे भी ताक लगा कर बैठते हैं। वे
जाल लगाकर लोगों को फँसा लेते है। 27 जैसे
पिंजड़ चिड़ियों से भरा होता है, वैसे ही उनके
घर धोखाधड़ी से भरे हैं। इसी कारण वे
दौलतमन्द हो गए हैं। 28 उनका वज़न बढ़
चुका है गलत कामों में वे सारी सीमाएँ पार
कर चुके हैं। वे लोग अनाथो के साथ इन्साफ
नहीं करते है। इसलिए उन्हें सफलता नहीं
मिलती हैं। वे लोग गरीबों के अधिकार के
लिए खड़े नहीं होते हैं। 29 इसलिए याहवे की
वाणी यह है,"क्या मैं इन बातों की सज़ा न
दूँ?" 30 इस देश में ऐसे काम होते हैं, जिससे
उन्हें आश्चर्य करना चाहिए। 31 भविष्यद्वक्ता
गलत भविष्यद्वाणियाँ करते हैं। उन्हीं के बल
पर पुरोहित शासन करते हैं। यह बात मेरी
प्रजा को पसन्द भी है, लेकिन आखिर समय
में तुम क्या करोगे?"

6 हे बिन्यामीनियो, यरूशलेम में से अपना
सामान लो और भाग चलो। तकोआ
में नरसिंगा फूँको और बेथेक्केरेम पर झण्डा
ऊँचा करो। उत्तर से एक भारी मुसीबत आने
वाली है। 2 सिय्योन की खूबसूरत बेटी को

मैं नाश करने वाला हूँ। 3 चरवाहे अपनी
भेड़-बकरियों के साथ उस पर चढ़कर उसके
चारों ओर अपने अपने तम्बू गाढ़ेंगे। अपने
पास की घास जानवरों को खिला देंगे।
4 "आओ उसके विरोध में युद्ध की तैयारी
करो, उठो, हम दोपहर ही में हमला बोल
दें।" अफ़सोस, दिन ढल रहा है और शाम
होनेवाली है।" 5 "उठो, हम रात ही में हमला
करें और महलों को गिरा दे। 6 सेनाओं के
याहवे कहते हैं, पेड़ काटकर यरूशलेम के
विरूद्ध मोर्चा बाँधो। इस शहर में अन्धेर ही
अन्धेर है और सज़ा के लायक है। 7 जिस
तरह कुएँ में से रोज पानी निकलता रहता
है वैसे ही इस शहर में से हर समय बुराई
निकलती रहती है। इसमें झगड़ा फसाद और
शोरगुल रहता है। इनके यहाँ मारपीट भी एक
आम बात है। 8 हे यरूशलेम डाँट-डपट ही से
सुधर जाओ, नहीं मैं तुम में कोई दिलचस्पी
नहीं लूँगा ।मैं तुम्हे उजाड़ कर बर्बाद कर
डालूँगा। 9 सेनाओं के याहवे का कथन है,
इस्राएल के सभी बचे हुए लोग अँगूर की
लता की तरह तोड़े जाएँगे। दाख के तोड़ने
वाले की तरह उस लता की डालियों पर
फिर हाथ लगाना। 10 मैं किस से कहूँ, ताकि
वे माने ? देखो, ये ऊँचा सुनते हैं। वे ध्यान
भी नहीं दे सकते। वे याहवे की बातों की
बुराई करते हैं। उनके भीतर उसकी चाहत
भी नहीं है। 11 इसलिए याहवे का गुस्सा मेरे
मन में भर गया है। मैंने उसे रोकना चाहा
लेकिन कामयाब न हुआ। "बाज़ारों में बच्चों
पर और जवानों की सभा में भी उसे उण्डेलो,
क्योंकि पति पत्नी के साथ और अधेड बूढ़े
के साथ पकड़ा जाएगा। 12 उन लोगों के घर
और खेत और महिलाएँ सब दूसरों की हो
जाएगी, क्योंकि मैं इस देश पर अपना हाथ
बढ़ाने वाला हूँ। 13 क्योंकि उनमें से छोटे से
लेकर बड़े तक सभी लालची है। नबी और
याजक भी कपटी है। 14 मेरे लोगों से वे कहते
है, "शान्ति-शान्ति"। इस तरह से झूठ-मूठ में
वे उनके ज़ख्म को अच्छा करते है। लेकिन
देखा जाए तो कहीं भी शान्ति नहीं है। 15 क्या
उन्हें अपने घिनौने कामों के लिए कभी
शर्मिन्दगी महसूस हुई नहीं उन्हें किसी गलत
बात में शर्मिन्दगी होती ही नहीं है। दूसरों के
ठोकर खाकर गिरने पर वे भी गिरेंगे। जब
मैं उन्हें सज़ा दूँगा तब वे ठोकर खाएँगे और
लौटेंगे। 16 याहवे कहते हैं,"सड़कों पर खड़े
हो जाओ और देखो, पूछो कि पुराने समय से
अच्छा रास्ता कौन सा है। उसी पर चलने से
तुम्हें सुकून मिलेगा। 17 तुम्हारे लिए मैंने पहरा
देनेवाले ठहराए थे और कहा था, नरसिंगे
की आवाज ठीक से सुनना, लेकिन तुमने
यह बात स्वीकार नहीं की। 18 इसलिए हे
देशो, सुनो, और देखो कि इन लोगों के बीच
क्या हो रहा है। 19 हे पृथ्वी देखो, सुनो और
देखो, मैं इस देश पर एक ऐसी मुसीबत ले
आऊँगा, जो इनके सोच-विचार का नतीजा
है; क्योंकि इन्होंने मेरी बातों की परवाह नहीं
की और उनको बेकार समझा। 20 शबा का
लोबान और खुशबूदार नरकट जो दूर देश से
लाया जाता है, उस से मुझे क्या फायदा ?
मैं तुम्हारी होमबलियों से खुश नहीं हूँ और
न ही मेलबलियों से।" 21 इसलिए याहवे ने
कहा है, "देखो मैं इस प्रजा के आगे ठोकर
रखने वाला हूँ। बाप और बेटा, पड़ोसी और
दोस्त सभी ठोकर खाकर बर्बाद हो जाएँगे।
22 याहवे का कहना है,"देखो उत्तर से यहाँ
तक कि दुनिया के कोने से एक बड़े देश के
लोग इस देश के लोगों के खिलाफ़ उभारे
जाएँगे। 23 उनके पास बर्छी होगी, वे निर्दयी
होंगे। उनका बोलना समुद्र के गरजने की
तरह है। वे घोड़ों पर चढ़ कर आते हे।

हे सिय्योन, वे बहादुर की तरह हाथियारों
से लैस होंगे। वे बड़ी बहादुरी से तुम पर
हमला कर देंगे। 24 यह संदेश मिलते ही हमारे
हाथ-पैर ढीले हो गए हैं। हम परेशानी में हैं।
हमें जच्चा का सा दर्द हो रहा है। 25 मैदान में
मत जाओ न ही रास्ते पर चलो। वहाँ दुश्मन
की तलवार और चारों ओर डर दिखता है।
26 हे मेरी प्रजा, कमर में टाट बाँधो, राख में
लोटो। जैसे एकलौते बेटे के लिए लोग दुखी
होते हैं, वैसा ही विलाप करो, क्योंकि नाश
करने वाला हम पर अचानक आ पड़ेगा।
27 मैंने तुम्हें इसलिए अपनी प्रजा के बीच
गुम्मट और किला ठहरा दिया कि तुम उनकी
चाल को परखो और जान लो। 28 वे सभी
ज़िद्दी हैं, लुतराई करते फिरते हैं और चाल
बिगड़ी हुई है। वे ताँबे और लोहे की तरह
हैं। 29 धौकनी जल चुकी है, सीसा आग में
भस्म हो गया है। ढालनेवाले ने बेकार ही में
ढाला, क्योंकि सभी बुरे निकले हैं। 30 उनका
नाम खोटी चाँदी होगा, क्योंकि याहवे ने उन्हें
खोटा ही पाया है। ”

7 यर्मियाह को मिलने वाला, परमेश्वर
का दिया हुआ संदेश यह है : 2 याहवे के
भवन के फाटक में खड़े हो जाओ और यह
बोलो, ‘‘हे सभी यहूदियों तुम जो परमेश्वर
को दण्डवत् करने के लिए इन फाटकों से
दाखिल होते हो, सुनो। 3 सेनाओं के याहवे
जो इस्राएल के परमेश्वर हैं, कहते है, अपने
चाल चलन को ठीक करो, तब मैं तुम्हें इस
जगह रहने दूँगा। 4 तुम लोग इस झूठी बात पर
विश्वास मत करो, ‘यही याहवे का भवन है,
यही याहवे का भवन है।‘ 5 यदि तुम सचमुच
अपने चाल चलन को ठीक करो और एक
दूसरे के बीच इन्साफ करो। 6 परदेशी अनाथ
और विधवा पर अन्धेर न करो, बेगुनाह की
जान न लो और दूसरे देवी देवताओं के पीछे
न जाओ, जिस से तुम्हारा नुकसान होता है।
7 तो मैं तुम्हें इस शहर में, और इस देश में
जो मैंने तुम्हारे बुज़ुर्गो को दिया था, युग-
युग के लिए रहने दूँगा। 8 ‘‘देखो, तुम झूठ
पर भरोसा रखते हो, जिससे कोई फायदा
नहीं। 9 तुम जो चोरी, हत्या और व्यभिचार
करते, झूठी कसम खाते, बाल देवता के लिए
धूप जलाते और दूसरे देवताओं को मानते
हो। 10 तो क्या यह वाजिब है, कि मेरे भवन
में आओ और मेरे सामने खड़े होकर कहो,
‘‘हम इन घिनोने कामों को करने के लिए
आज़ाद है? 11 यह मेरे नाम का भवन है जो
तुम्हारी नज़रों में डाकुओ की गुफा बन चुका
है, मैं खुद यह देख रहा हूँ। 12 पहले मेरे नाम
की जगह शीलोह थी। इस जगह को भी मैं
शीलोह की तरह कर डालूँगा। 13 प्रभु का
कहना है, क्योंकि तुमने भी वह सब काम
किए हैं; हालांकि मैंने बड़े सवेरे बातचीत की
थी, लेकिन तुम्हारे कान पर जूँ तक नही रेंगी।
मैंने तुम्हें आवाज़ दी, लेकिन तुमने जवाब
न दिया, 14 इसलिए यह इमारत जो मेरे नाम
की कहलाती है,और जिस पर तुम भरोसा
रखते हो और यह जगह जिसे मैंने तुमको
और तुम्हारे बुज़ुर्गों को दी थी, इसकी हालत
भी मैं शीलोह की तरह कर दूँगा। 15 जिस
तरह से मैंने सारे एप्रैमियों को अपनी दृष्टि
से दूर कर दिया है, वैसा ही तुम्हें भी दूर
कर दूँगा। 16 इन लोगों के लिए तुम प्रार्थना न
करना, न ही ऊँची आवाज से मुझे पुकारना,
क्योंकि मैं तुम्हारी न सुनूँगा। 17 क्या तुम्हें
दिखता नहीं कि ये लोग यहूदा के नगरों और
यरूशलेम की सड़कों में क्या कर रहे हैं?
18 देखो, बाप बच्चे लकड़ी बटोरते पिता आग
सुलगाते और महिलाएँ आटा सानती हैं, कि
स्वर्ग की रानी के लिए रोटियाँ चढ़ाएँ और
मुझे गुस्सा दिलाने के लिए दूसरे देवताओं

के लिए तपावन दें। 19 याहवे का कहना है,“
क्या वे मुझे गुस्सा दिलाते हैं? क्या खुद को
ही नहीं, जिससे उन्हें लज्जा लगे। 20 इसलिए
याहवे का कहना यह हैः इन्सान, जानवर,
पेड़ और फसल आदि पर मेरी सज़ा आएगी।
यह सज़ा आग की तरह हमेशा जलती
रहेगी कभी बुझेगी नहीं। 21 सेनाओ के याहवे
परमेश्वर ने कहा,“ अपने मेलबलियों और
होम बलियों को बढ़ाओ और उन्हें खाओ।
22 क्योंकि जिस वक्त मैं तुम्हारे पूर्वजों को
मिस्र की गुलामी में से निकाल लाया उस
समय मैंने उन्हें इन बलियों के बारे में कोई
आदेश न दिया था। 23 लेकिन उनसे कहा था
कि वे मेरी कही हुई बातों को माने, तब मैं
उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग
ठहरेंगे। मैंने यह भी बताया था कि यदि वे
मेरे बताए रास्ते पर चलेंगे, तो उनका भला
होगा। 24 लेकिन उन्होंने मेरी एक न सुनी। वे
लोग अपनी ज़िद्द से जीते रहे। 25 जिस दिन
तुम्हारे बापदादे मिस्र से निकले, उस दिन
से आज तक मैं अपने सेवकों और नबियों
को भेजता रहा। 26 लेकिन इन लोगों ने नहीं
सुना और ज़िद्द में आकर अपने बापदादों से
ज़्यादा बुराईयों की। 27 तुम सब कुछ उन
से कहोगे, लेकिन वे तुम्हारी सुनेंगे नहीं।
तुम उन्हें बुलाओगे, लेकिन वे बोलेंगे नहीं।
28 तब तुम उनसे कह देना,“यह जाति वही
है जो अपने परमेश्वर की बात नहीं मानती
है। डाँट-डपट के बावजूद यह सुधरती नहीं
है। सच्चाई खतम हो चुकी है और उनके
मुँह से दूर हो गई है। 29 अपना सिर मुंडवा
लो। मुण्डे टीलों पर जाकर शोक मनाओ,
क्योंकि याहवे ने इस समय के निवासियों
पर गुस्सा किया है और उन्हें बेकार जानकर
छोड़ दिया है। 30 याहवे यह कहते हैं, इसका
कारण यह है कि यहूदियों ने वही किया है
जो अनुचित और अनैतिक है। अशुद्ध चीज़ों
से उन्होंने मेरे भवन को दूषित कर डाला है।
31 हिन्नोम वंशियों की घाटी में तोपेत नामक
ऊँचे स्थान बनाकर अपने बेटे-बेटियों को
कुर्बान किया। ऐसा मैंने उन्हें कभी करने
के लिए नहीं कहा था। 32 याहवे की वाणी
यह है,“ऐसा समय आएगा, कि वह तराई न
तोपेत की और न ही हिन्नोमवंशियों की होगी,
लेकिन वह हत्या की तराई कहलाएगी। और
तोपेत में इतनी अधिक कब्रें होगीं कि वहाँ
जगह न बचेगी। 33 इसलिए इन लोगों की
लाशें आकाश की चिड़ियाँ खाएँगी, जिन्हें
कोई भगा न पाएगा। 34 उस समय यहूदा के
नगरों और यरूशलेम की सड़कों पर खुशी
और आनन्द के शब्द नहीं सुनाई पड़ेंगे। वहाँ
दुल्हे-दुल्हिन की आवाज़ भी नहीं आएगी।

8 याहवे का वचन है, उस समय यहूदा
के राजाओं, गवर्नरों, पुरोहितों,
भविष्यद्वक्ताओं और यरूशलेम के
निवासियों की हड्डियाँ कब्र में से निकालकर,
2 सूरज, चाँद और आकाश के तारों के
सामने फैला दी जाएँगी, क्योंकि वे उन्हीं
से प्रेम करते, सेवा करते और उन्हीं के
पास जाया करते थे। वे शव इकट्ठे न किए
जाएँगे, न कब्र में दफनाए जाएँगे। वे ज़मीन
के ऊपर खाद की तरह पड़े रहेंगे। 3 तब इन
बुरे लोगों में से बचे लोग उन जगहों पर
जाएँगे, जिस में से मैंने उन्हें निकाल दिया
है, जीते रहने के बजाए वे मौत की चाहत
रखेंगे। 4 तुम उन से यह भी कहो, कि याहवे
कहते हैं, कि इन्सान गिरने के बाद क्या
उठता नहीं है? 5 भटका इन्सान क्या लौट
कर वापस नहीं आता है? फिर क्या कारण
है कि ये यरूशलेम में रहनेवाले सदैव दूर
भटकते रहते है ? ये लोग छल करना छोड़ते
नहीं और लौटने से मना करते हैं। 6 मैंने

ध्यान से सुना, लेकिन ये लोग ठीक से नहीं
बोलते, एक भी जन पछताते हुए नहीं बोला,
हाय! मैंने यह क्या कर डाला ? जिस तरह
घोड़ा तेजी से दौड़ता है ये लोग भी दौड़ रहे
हैं। 7 आकाश में लगलग भी अपने ठहराए
हुए समय को जानता है। सूपाबेनी, पण्डुक
और सारस भी अपने समय के आने के बारे
में जानते हैं, लेकिन मेरे लोग मेरी इच्छा
को नहीं जानते हैं। 8 तुम यह दावा कैसे
कर सकते हो कि तुम अक्लमन्द हो और
परमेश्वर के नियम -आज्ञाएँ हमारे पास हैं?
लेकिन उसके जानकारों ने उसका झूठा अर्थ
लगाकर उसे झूठा बना दिया। 9 बुद्धिमान
शर्मिन्दा हो गए, वे घबरा गए और पकड़े
गए। देखो उन्होंने याहवे के वचन की
कीमत न जानी, उनमें समझ है ही कहाँ।
10 इसलिए मैं उनकी महिलाओं को दूसरे
आदमियों को और उनके खेत दूसरों के वश
में कर दूँगा, क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक
सभी लालची हैं। क्या नबी, क्या पुरोहित
सब के सब कपट से भरे हुए हैं। 11 शान्ति,
शान्ति कहकर वे मेरी प्रजा के घाव को यों
ही सहलाते रहे हैं। लेकिन कोई शान्ति नहीं
रही है। 12 क्या वे घिनौने काम करने के बाद
शर्मिन्दा हुए? नहीं बिल्कुल नहीं। इसलिए
जब दूसरे लोगों का पतन होगा, तब वे भी
गिरेंगे। जब उनकी सज़ा का समय आएगा,
तब वे भी ठोकर खाकर गिरेंगे। 13 याहवे
की वाणी यह भी है : मैं उन सभी को खतम
कर डालूँगा। उनकी अंजीर के पेड़ के पत्ते
व अंजीर सभी सूख जाएँगे। जो कुछ मेरा
दिया हुआ है, उनके पास टिकेगा नहीं।
14 हम खामोश क्यों बैठे हुए हैं? आओ
हम चलकर मजबूत नगरों में एक साथ ही
समाप्त हो जाएँ क्योंकि चाहते हैं। उन्होंने
हमें पीने के लिए ज़हर दिया है, क्योंकि
हम उनकी इच्छा के खिलाफ़ जीते रहे हैं।
15 हम शान्ति का इन्तजार करते रहे, लेकिन
भलाई न देखने पाए। हम चंगे होना चाहते
थे, लेकिन कुछ न हुआ। 16 दान के प्रदेश से
उसके घोड़ों की फुंकार सुनाई पड़ती है और
उसके ताकतवर घोड़ोंके हिनहिनाने से पूरा
प्रदेश थरथरा रहा है। वे आकर पूरे देश तथा
वहाँ की बहुतायत को उसके निवासियों
समेत हज़म कर जाते हैं। 17 प्रभु का कहना
है, “देखो, मैं तुम्हारे बीच ऐसे साँप अर्थात
नागों को भेजूँगा जिन पर कोई मन्त्र नहीं
चलेगा और वे तुम्हें डसेंगे।” 18 हाय! मेरे
उत्पीड़न का कोई इलाज नहीं , मेरा मन
अन्दर घुटा जा रहा है। 19 ठीक तरह से
सुनो! दूर देश से मेरे लोगों का रोना सुनाई
दे रहा है:“क्या प्रभु सिय्योन में नहीं हैं?”
“उन्होंने क्यों मुझे अपनी बनाई हुई मूर्तियों
से गुस्सा दिलाया?” 20 “ कटनी का वक्त
खतम हो चुका है, गर्मी का मौसम भी जा
चुका है, लेकिन अब तक हम बचे नहीं।”
21 अपने लोगों की पीड़ा से मैं परेशान हूँ,
दुख मना रहा हूँ और निराश हूँ। 22 क्या
गिलाद में इसका कोई मलहम नहीं है? क्या
वहाँ कोई डाक्टर नहीं? किस वजह से मेरे
लोग स्वस्थ नहीं होते?

9 अच्छा होता यदि मेरा सिर पानी ही
पानी और मेरी आँखे आँसुओं का झरना
होतीं, ताकि मैं रात -दिन अपने हताहत
लोगों के लिए रोता रहता। 2 अच्छा होता
कि मुझे जंगल में इन्तजार करने वालों का
कोई ठिकाना मिलता, कि मैं अपने लोगों
को अलविदा कहकर चला जाता । वे
व्याभिचारी हैं और धोखेबाज भी। 3 धनुष
की तरह उनकी जीभ झूठ बोलने के लिए
तैयार रहती है। वे देश में ताकतवर तो हो
गए हैं, लेकिन सच्चाई के लिए नहीं। वे गलत

रास्ते पर चलना नहीं छोड़ते। वे मुझे जानते
भी नहीं है। 4 अपने-अपने साथी से सावधान
रहना। अपने भाई पर भी भरोसा मत रखना।
भाई बीच में आकर काम खराब करेंगे।
पड़ोसी-पड़ोसी के साथ ईमानदार न होगा।
5 एक दूसरे से वे पैसा ऐंठगे। इसलिए कि
उन्होंने झूठ बोलना सीखा है और बुराई करने
में बड़ी मेहनत करते हैं। 6 तुम्हारा घर धोखे
के बीच है इसलिए लोग मेरा ज्ञान नहीं चाहते
हैं। 7 इसलिए सेनाओं के याहवे का कहना
है, "देखो, मैं उन्हें तपाकर परखूँगा, क्योंकि
अपनी प्रजा के कारण और मैं कर भी क्या
सकता हूँ? 8 उनकी जीभ काल के तीर की
तरह बेधनेवाली है। वे छल-कपट की बात
बोलते हैं। वे मुँह से मीठी-मीठी बात करते
हैं, लेकिन मन ही मन बैर.रखते हैं। 9 क्या मैं
इन सब बातों के लिए सज़ा न दूँ 10 पहाड़ों
के लिए मैं रो पड़ूँगा और शोक का गीत
गाऊँगा। मैं जंगल की घाटियों के लिए शोक
का गीत गाऊँगा। वे इस तरह जल चुके हैं,
कि वहाँ से कोई गुजरता तक नहीं है। वहाँ
जानवरों की आवाज़ नहीं सुनाई देती है। वहाँ
से पक्षी भी उड़ चुके हैं। 11 मैं यरूशलेम
को खण्डहर बनाकर गीदड़ों के रहने की
जगह बना डालूँगा। यहूदा के सभी इलाकों
का भी मैं यही हाल करूँगा और वहाँ कोई
नहीं रहेगा। 12 जो अक्लमन्द है, वह इसका
मतलब जान ले। और जिसने याहवे के मुख
से इसका कारण जान लिया हो, वह दूसरों
को भी बता दे कि देश बर्बाद क्यों हुआ।
वह जंगल की तरह क्यों जल गया, कि वहाँ
से कोई गुज़रता ही नहीं है। 13 याहवे ने फिर
कहा,"क्योंकि उन्होंने मेरे आदेशों को ठुकरा
दिया है। 14 जिद्द में आकर वे बाल देवता का
भजन कीर्तन करने लगे, जैसे उनके पूर्वज
करते रहे थे। " 15 इस कारण, सेनाओं के
याहवे ने कहा, "सुनो मैं अपने लोगों को
कड़वी चीज़ और ज़हर खिलाऊँगा। 16 मैं
उन लोगों को तमाम देशों में ऐसा बिखरा
दूँगा, जिन्हें न वे जानते हैंऔर न ही उनके
पुरखे जानते थे। जब तक वे खतम न हो
जाएँ, मेरी तलवार उनके पीछे पड़ी रहेगी।
17 सेनाओं के याहवे कहते हैं, "विचार करो,
रोनेवालों को इकट्ठा करो। महिलाओं को भी
बुलाओं। 18 वे जल्दी से हमारे लिए दुख का
गीत गाएँ, ताकि हमारी आँखों से आँसू बह
निकलें। 19 सिय्योन से यह शोक का गीत
सुनाई देता है, "हम कैसे बर्बाद हो गए,
आज हमें शर्मिन्दगी क्यों झेलनी पड़ रही है?
हमें अपने घर-बार -देश सभी छोड़ना पड़ा।
20 इसलिए हे महिलाओं, याहवे की बातें सुनो
और आज्ञा मानो। तुम अपनी बेटियों का
शोक गीत और अपनी पड़ोसिन को विलाप
गीत सिखाओ। 21 मौत हमारी खिड़कियों में
से होकर हमारे महलों में आ चुकी है, ताकि
हमारे बच्चों जवानों को खतम कर डाले।
22 तुमने कहा,"याहवे कहते हैं ' मनुष्यों
की लाशें इस जगह पड़ी रहेंगी जैसे खेत
में खाद पड़ी रहती है और उसको उठाने
वाला कोई नहीं होता है। 23 याहवे कहते
हैं, " अक्लमन्द अपनी अक्ल पर घमण्ड
न करे, न ताकतवर अपनी ताकत पर और
न अमीर अपनी दौलत पर। 24 लेकिन जो
घमण्ड करे वह इस बात पर करें कि उसे
मेरा ज्ञान है, कि मैं ही याहवे हूँ जो इस
दुनिया में करूणा, इन्साफ और सच्चाई के
काम करता हूँ, क्योंकि मैं इन्ही बातों से
खुश रहता हूँ। 25 देखो, याहवे की वाणी है
कि ऐसा समय आएगा, कि जिन जिनका
खतना हो चुका है, उनको खतनारहित लोगों
की तरह सज़ा दूँगा। 26 अर्थात मिस्रियों,
यहूदियों, एदोमियों, अम्मोनियों, मोआबियों

को और उन रेगिस्तान के रहनेवालों को जो
अपने गाल के बालों को उतार देते हैं, क्योंकि
ये सभी लोग खतनारहित हैं और इस्राएल का
पूरा घराना भी मन में बिना खतने का है।
10 याहवे यों कहते हैं, हे इस्राएल के
घराने, याहवे तुम से क्या कहना
चाहते है, सुनोः 2 गैर यहूदियों का चाल चलन
मत रखो। न ही उनकी तरह आकाश के
निशानों के बारे में आश्चर्य करो। दूसरी
जातियों (मत) के लोग उनके बारे में अचम्भा
करते हैं। 3 क्योंकि दूसरे देशों के रीति रिवाज
बेकार के हैं। मूरते जंगल से काटी गई
पेड़ की लकड़ी है। इसे कारीगर बसूले से
बनाता है। 4 लोग उसे चाँदी सोने से मढ़ते
हैं। हथौड़े से कीले ठोंक -ठोंक कर स्थिर
करते हैं, ताकि वह हिल-डुल न सके। 5 वे
लोग ककड़ी के खेत में खड़े किए गए पुतले
की तरह हैं जो बोल सकने में असमर्थ है।
उनको उठाए जाने की ज़रूरत पड़ती है।
6 हे याहवे आपकी तरह कोई नहीं है। आप
महान हैं और पराक्रमी भी हैं। 7 हे सब देशों
के राजा, आप से कौन न डरेगा,आप इसी
लायक भी हैं । 8 लेकिन वे जानवरों की
तरह बेवकूफ बन जाते हैं? मूर्तियाँ बचा
नहीं सकती हैं, वे तो लकड़ी हैं। 9 पत्थर
से बनाई गई चाँदी तर्शीश से लाई जाती है
और उफाज से सोना लाया जाता है। मूर्तियाँ
कारीगरों और सुनारों के हाथ का काम हैं।
मूर्तियों के कपड़े रंगबिरंगी हैं। वह सब योग्य
करीगरों का काम है। 10 परन्तु याहवे सचमुच
में परमेश्वर हैं। वही जीवित हैं और हमेशा
के लिए हैं। उनके गुस्से से दुनिया काँपती
है। देश-देश के लोग उनके गुस्से को सह
नहीं पाते हैं। 11 तुम उनसे कहो, "ये देवता
जिन्होंने आकाश-पृथ्वी को नहीं बनाया, वे
सभी एक दिन बर्बाद हो जाएँगे। 12 उन्होंने
पृथ्वी को अपनी शक्ति से बनाया। दुनिया को
अपनी बुद्धि स्थिर किया और आकाश को
अपनी चतुराई से बनाया। 13 उनके बोलने
से आकाश में पानी की बड़ी आवाज होती
है। पृथ्वी की छोर से वह कुहरा उठाते हैं।
बरसात के लिए वह बिजली चमकाते हैं और
अपने भण्डार में से हवा बहाते हैं। 14 सभी
लोग जानवर की तरह व्यवहार करते हैं
।अपनी खोदी गई मूर्तियों के बारे में सुनारों
की उम्मीद जाती रहती है, क्योंकि उनकी
ढाली हुई मूर्तियाँ झूठी हैं और वे सांस नहीं ले
सकती हैं। 15 वे बेकार और हँसी उड़ाए जाने
लायक हैं। उनकी सज़ा का समय आने पर
वे सब बर्बाद हो जाएँगी। 16 लेकिन याकूब
का अपना भाग उनकी तरह नहीं है। क्योंकि
वह तो सभी को बनाने वाले हैं। 17 हे घिरे
हुए नगर की रहनेवाली अपनी गठरी ज़मीन
पर से उठाओ। 18 क्योंकि याहवे यों कहते
हैं, "अब मैं इस देश को ऐसे ही फेकूँगा
जैसे गोफन में रखकर पत्थर फेंका जाता
है। उन्हें समझ भी नहीं आएगा। 19 मुझ पर
अफसोस ! मेरा ज़ख्म है, इसलिए मुझे इस
को सहना ही पड़ेगा। 20 मेरा तम्बू लूटा गया
और रस्सियाँ टूट गयी है। और बच्चे मेरे पास
से चले गए और अब नहीं हैं। अब कोई नहीं
जो मेरा तम्बू ताने और मेरी कनातें खड़ी करें।
21 क्योंकि चरवाहे पशुओं की तरह हैं। वे
याहवे को पुकारते नहीं है। इसलिए वे अक्ल
से जीते हैं। इसीलिए वे बुद्धि से जीवन नहीं
जीते हैं और उनकी सभी भेड़े भटक चुकी हैं।
22 सुनो, एक आवाज आ रही है। देखो, वह
आ रहा है। उत्तर देश से शोर हो रहा है, ताकि
यहूदा के इलाकों को उजाड़कर गीदड़ों की
जगह बना डालें। 23 हे याहवे, मुझे मालूम हो
चुका है कि इन्सान का मार्ग उसके वश में
नहीं है। इन्सान चलता तो है लेकिन उसके

कदम उसके अधिकार में नहीं रहते हैं। 24 हे
याहवे मुझे डाँटिए, लेकिन इन्साफ के साथ,
गुस्से में नहीं। कहीं ऐसा न हो कि मैं बर्बाद हा
जाऊँ। 25 जो लोग आप को नहीं जानते और
आप से प्रार्थना नहीं करते, उन्हीं पर अपना
गुस्सा उण्डेलिए क्योंकि उन्होंने याकूब को
निगल लिया। यहाँ तक कि खाकर खतम कर
डाला और उसके निवास स्थान को बंजर
बना डाला है।

11 याहवे का यह संदेश यर्मियाह को
मिलाः 2 इस वाचा की बातों को
सुनो,और यहूदा के आदमियों और यहूदिया
के रहनेवालों से कहो। 3 "इस्राएल के
परमेश्वर का कहना है,"वह व्यक्ति श्रापित
है, जो इस वाचा की बातों को नहीं मानता है।
4 जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों के साथ लोहे की
भट्टी यानिकी मिस्र की गुलामी में से निकालने
के समय यह कहकर बाँधी थी कि तुम्हें मेरी
दी गई सभी आज्ञाओं को मानना है। तब तुम
मेरे लोग और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा।
5 तब जो प्रतिज्ञा मैंने तुम्हारे पूर्वजो से की
थी वह दूध और शहद से भरपूर देश में पूरी
होगी। 6 याहवे का संदेश मुझे मिला कि ये
सभी बातें यहूदा और यरूशलेम के नगरों
में लोगों को बतायी जाएँ, ताकि लोग वैसा
करें। 7 जिस दिन से मैं तुम्हारे बापदादों को
मिस्र की गुलामी में से निकाल कर लाया हूँ
तब से इन बातों को ज़ोर देकर कहता आया
हूँ। 8 लेकिन उन्होंने न सुनी न मानी इसलिए
वाचा न मानने की सज़ा उन्हें मिली है। 9 फिर
याहवे ने कहा, यहूदी और यरूशलेम के
निवासी बलवई हैं 10 जिस तरह से इनके
दादा परदादा मेरे खिलाफ़ बलवा करते थे, ये
लोग भी करते हैं। ये लोग भी दूसरे देवताओं
का भजन कीर्तन करते हैं। इस्राएल और
यहूदा के घरानों ने मेरे से बाँधी हुई वाचा को
तोड़ दिया है। 11 इसलिए याहवे का कहना
है, मैं इन पर ऐसी मुसीबत डालने पर हूँ। ये
लोग इस मुसीबत से बच न सकेंगे। इन लोगों
की दोहाई पर भी मै कान न लगाऊँगा। 12 उस
समय यरूशलेम और यहूदा के निवासी उस
देवता को पुकारेंगे, जिसकी वे पूजा करते हैं।
लेकिन वह उनकी परेशानी में उनको बचा
न पाएगा। 13 हे यहूदा, जितने तुम्हारे नगर
है, उतने ही देवी देवता भी हैं। यरूशलेम
की जितनी गलियाँ है, उतनी ही वेदियाँ
तुमने शर्मनाक वस्तु के लिए बनाई है। उन
वेदियों पर बाल के लिए तुम धूप जलाते
हो। 14 इसलिए इन लोगों के लिए तुम बिनती
मत करना, क्योंकि मुसीबत में उनके पुकारने
पर भी मैं उनको जवाब न दूँगा। 15 मेरी
प्रिया, तुमको मेरे घर में क्या हक है, क्योंकि
तुमने बहुत से बुरे काम किए हैं? 16 याहवे
ने तुम्हारा नाम मनोहर, जैतून का फलदायी
पेड़ और हरा भरा रखा था, लेकिन उसने
बड़े शोर-गुल की आवाज होते ही तुम में
आग सुलगाई और उसकी डालियाँ बेकार
हो गई। 17 सेनाओं के याहवे, जिन्होंने तुम्हें
लगाया था, उन्हीं ने इस्राएल और यहूदा के
घराने की बुराई की वजह से यह मुसीबत
डाली है। 18 इसके अलावा, याहवे ने मुझे
यह भी बताया है और मैं समझ भी गया हूँ।
19 मैं उस सीधे साधे मेम्ने की तरह था जिसे
जान से मारे जाने के लिए ले जाया जाता है।
मुझे न मालूम था कि उन्होंने यह कह कर
मेरे खिलाफ़ योजना बनाई है, " आओ हम
इस पेड़ को फल सहित काट डालें, ताकि
उसका नाम मिट जाए। 20 लेकिन हे सेनाओं
के याहवे आप जो ईमानदारी से इन्साफ
करते हैं और मन को जाँचते हैं, उनका
बदला लीजिए और मुझे दिखाईए क्योंकि
मैंने अपना विषय आपके हाथ सौंप दिया

है। 21 इसलिए उन अनातोतियों के खिलाफ़ याहवे यों कहते है कि तुम्हारी जान के पीछे पड़े लोग तुम से कहते है, "याहवे की ओर से भविष्यवाणी मत करो कि तुम हमारे हाथों मरो।" 22 इसलिए सेनाओं के याहवे कहते हैं "देखो मैं उन्हें सज़ा देने पर हूँ। नवजवान तलवार से और लड़के -लड़कियाँ भूख से मरेंगे; 23 उनमें से कोई न बचेगा। मैं अनातोत के लोगों पर यह मुसीबत डालूँगा; उनकी सज़ा का दिन आनेवाला है।"

12 हे याहवे आप सच्चे हैं कि मैं अपनी समस्या आपके सामने रखूँ। वास्तव में, मैं इन्साफ की बातों पर आपके साथ बातचीत करूँगा। दुष्टों की योजना कामयाब क्यों होती है ? धोखा-धड़ी करने वालों को सुख क्यों मिलता है? 2 आपने उन्हें लगाया, उन्होंने जड़ पकड़ी और वे फलते-फूलते गए। आप उनके मुँह के तो पास हैं, लेकिन मन से दूर हैं। 3 लेकिन हे याहवे आप मुझे जानते हैं, देखते हैं और आपके लिए मेरे मन में जो भावनाएँ हैं, उन्हें आप जानते हैं। मारे जाने वाली भेड़ों की तरह उन्हें घसीट लीजिए और मारे जाने वाले दिन के लिए अलग रखें। 4 देश कब तक दुख मनाता रहेगा और मैदान की हरियाली सूखती जाएगी। देश में रहनेवालों की बुराई के कारण जानवर भी बर्बाद हो गए हैं। क्योंकि लोग कहने लगे, "वह हमारे आने वाले अन्त को न देखेगा"। 5 यदि तुम पैदल सेना के साथ दौड़े और उन्होंने तुम्हें थका डाला, तो घोड़ों की बराबरी तुम कैसे कर पाओगे? यदि तुम शान्ति के देश में ही हार गए तो यर्दन की बाढ़ में क्या करोगे ? 6 तुम्हारे भाईयों और तुम्हारे पिता के घराने ने हाँ, उन्होंने तुम्हें धोखा दिया है। उन्होंने तुम्हें पीछे से ललकारा है। चाहे वे अपनी मीठी बातों से फँसाना चाहें, तुम उनके झाँसे में मत आना। 7 अपना घर मैं छोड़ चुका हूँ और मीरास को त्याग चुका हूँ जो मेरी जान से प्यारी थी, उसे मैंने उसके दुश्मनों के हाथ सुपुर्द कर डाला। 8 जंगल के शेर की तरह मेरी मीरास हो गयी। इसलिए की वह मुझ पर गरजी, मुझे उस से नफ़रत है। 9 क्या मेरी मीरास उस चित्तीदार पक्षी की तरह नहीं है जिसे शिकारी चारों ओर से घेरे हुए है ? जाओ मैदान के सभी जानवरों को इकट्ठा करो, उनको लाओ कि खा जाए। 10 बहुत से चरवाहों ने मेरे अंगूर के बगीचे को बर्बाद किया है। मेरे खेत रौंदा और वीरान कर दिया। 11 उसे उजाड़ा गया है। सारे देश की यही हालत है। कोई इन्सान इस विषय में विचार नहीं करता है। 12 जंगल के सभी मुण्डे टीलों पर नाश करने वाले आ गए हैं। देश के एक कोने से दूसरे कोने तक परमेश्वर की ओर से सज़ा चालू है। किसी के पास शान्ति नहीं है। 13 उन्होंने गेहूँ बोया था, लेकिन फसल में काँटे ही मिले। उनकी मेहनत का फल उन्हें नहीं मिला। याहवे के खतरनाक गुस्से के कारण अपनी फसल के लिए शर्मिन्दा होओ। 14 याहवे अपने बुरे पड़ोसियों के बारे में कहते हैं, कि वे मीरास पर अपना कब्ज़ा करना चाहते हैं, जिसे मैंने अपनी प्रजा इस्राएल को दिया है। देखो, मैं अब उस देश से निकालने पर हूँ। 15 और ऐसा होगा, कि उन्हें निकालने के बाद फिर से उन पर दया दिखाऊँगा। उनमें से हर एक को उसकी मीरास और उसके देश में वापस लौटा लाऊँगा। 16 तब जैसा उन्होंने बाअल को श्रध्दा -भक्ति देना सिखाया था, वैसे ही यदि वे सचमुच मेरी प्रजा का सा चालचलन सीख कर मेरे नाम की शपथ खाएँ तब वे मेरी

प्रजा के साथ बसेंगे। 17 लेकिन यदि वे मानेंगे
नहीं, तब मैं उन लोगों को उखाड़ फेकूँगा
और नाश कर डालूँगा।

13 याहवे का यह संदेश मुझे मिला
"अपने लिए सन से बना अंगोछा
लो। उसे अपनी कमर में बाँध लो। उसे पानी
में मत भीगने देना।" 2 तब मैंने याहवे के
आदेश के अनुसार किया 3 तब दूसरी बार
यह आदेश मुझे मिला, 4 अपने अंगोछे की
लेकर फरात नदी पर जाओ। वहीं एक चट्टान
की की दरार में उसे छिपा दो। 5 मैंने ऐसा
ही किया। 6 बहुत दिनों के बाद परमेश्वर
ने कहा कि उस छिपाए गए अंगाछे को मैं
निकालकर लाऊँ। 7 जब मैंने ऐसा किया, तो
यह पाया कि वह अंगोछा किसी काम न
था। 8 तब मुझसे याहवे ने कहा, 9 इसी तरह
से यहूदा और यरूशलेम का घमण्ड मैं नष्ट
करूँगा। 10 ये बुरे लोग मेरी बातों से अपना
मुँह मोड़ते हैं। अपने ज़िद्दी मन से जीवन जीते
हैं। जो लोग सच्चे सृष्टिकर्ता को छोड़कर दूसरे
देवी-देवताओं का भजन कीर्तन करते हैं, वे
इस अंगोछे की तरह हो जाएँ और किसी
काम के न रहें। 11 जिस तरह अंगोछा मनुष्य
की देह से चिपका रहता है उसी तरह मैंने भी
इस्राएल और यहूदा के पूरे घराने को लपेट
लिया था, कि मेरे लिए वे ऐसी प्रजा बने,
जो मेरे नाम और मेरी बड़ाई के लिए हो,
लेकिन उन्होंने न सुनी। 12 इसलिए तुम उन्हें
यह बताओ, "इस्राएल का परमेश्वर याहवे
यों कहते हैं, "हर एक मटका दाखमधु से

.0 *12 हे याहवे आप सच्चे हैं कि मैं अपनी समस्या आपके सामने रखूँ। वास्तव में मैं इन्साफ की बातों पर आपके साथ बातचीत करूँगा। दुष्टों की योजना कामयाब क्यों होती है ? धोखा-धड़ी करने वालों को सुख क्यों मिलता है? आपने उन्हें लगाया, उन्होंने जड़ पकड़ी और वे फलते-फूलते गए। आप उनके मुँह के तो पास हैं, लेकिन मन से दूर हैं। लेकिन हे याहवे आप मुझे जानते हैं, देखते हैं और आपके लिए मेरे मन में जो भावनाएँ हैं, उन्हें आप जानते हैं। मारे जाने वाली भेड़ों की तरह उन्हें घसीट लीजिए और मारे जाने वाले दिन के लिए अलग रखें। देश कब तक दुख मनाता रहेगा और मैदान की हरियाली सूखती जाएगी। देश में रहनेवालों की बुराई के कारण जानवर भी बर्बाद हो गए है। क्योंकि लोग कहने लगे, "वह हमारे आने वाले अन्त को न देखेगा"। यदि तुम पैदल सेना के साथ दौड़े और उन्होंने तुम्हें थका डाला, तो घोड़ों की बराबरी तुम कैसे कर पाओगें? यदि तुम शान्ति के देश में ही हार गए तो यर्दन की बाढ़ में क्या करोगे ? तुम्हारे भाईयों और तुम्हारे पिता के घराने ने हाँ, उन्होंने तुम्हें धोखा दिया है। उन्होंने तुम्हें पीछे से ललकारा है। चाहे वे अपनी मीठी बातों से फँसाना चाहें, तुम उनके झाँसे में मत आना। अपना घर मैं छोड़ चुका हूँ और मीरास को त्याग चुका हूँ जो मेरी जान से प्यारी थी, उसे मैंने उसके दुश्मनों के हाथ सुपुर्द कर डाला। जंगल की शेरनी की तरह मेरी मीरास हो गयी। इसलिए की वह मुझ पर गरजी, मुझे उस से नफ़रत है। क्या मेरी मीरास उस चित्तीदार पत्ती की तरह नहीं है जिसे शिकारी चारों ओर से घेरे हुए है ? जाओ मैदान के सभी जानवरों को इकट्ठा करो, उनको लाओ कि खा जाए। बहुत से चरवाहों ने मेरे अंगूर के बगीचें को बर्बाद किया है। मेरे खेत रौंदा और वीरान कर दिया। उसे उजाड़ा गया है। सारे देश की यही हालत है। कोई इन्सान इस विषय में विचार नहीं करता है। जंगल के सभी मुण्डे टीलों पर नाश करने वाले आ गए हैं। देश के एक कोने से दूसरे कोने तक परमेश्वर की ओर से सज़ा चालू है। किसी के पास शान्ति नहीं है। उन्होंने गेहूँ बोया था, लेकिन फसल में काँटे ही मिले। उनकी मेहनत का फल उन्हें नहीं मिला। याहवे के खतरनाक गुस्से के कारण अपनी फसल के लिए शर्मिन्दा होओ। याहवे अपने बुरे पड़ोसियों के बारे में कहते हैं, कि वे मीरास पर अपना कब्ज़ा करना चाहते हैं, जिसे मैंने अपनी प्रजा इस्राएल को दिया है। देखो, मैं अब उस देश से निकालने पर हूँ। और ऐसा होगा, कि उन्हें निकालने के बाद फिर से उन पर दया दिखाऊँगा। उनमें से हर एक को उसकी मीरास और उसके देश में वापस लौटा लाऊँगा। तब जैसा उन्होंने बाल को श्रध्दा -भक्ति देना सिखाया था, वैसे ही यदि वे सचमुच मेरी प्रजा का सा चालचलन सीख कर मेरे नाम की शपथ खाएँ तब वे मेरी प्रजा के साथ बसेंगे। लेकिन यदि वे मानेंगे नहीं, तब मैं उन लोगो को उखाड़ फेकूँगा और नाश कर डालूँगा।*

भर दिया जाए। और जब वे तुम से कहें, कि क्या हमें यह मालूम नहीं कि हर एक मटका दाखमधु से भरा रहता है। 13 तब उनको जवाब देना,'याहवे का कहना यह है कि इस देश के सभी रहनेवालों, राजाओं, याजकों और नबियों को नशे में चूर कर देंगे। 14 इतना ही नहीं पिता-बेटे से, बेटा- पिता से टकराए। वह उन पर दया न दिखाएँगे। 15 ध्यान से सुनो घमण्ड न करो। 16 अपने परमेश्वर याहवे की महिमा अपने जीवन से करो। इसके पहले कि वह अन्धेरा लाएँ और तुम्हारे पाँव काले पहाड़ों पर फिसल जाएँ और तुम रोशनी की उम्मीद लगाओ, तो वह उसे गहरे अन्धेरे में बदल डालें। 17 यदि तुम सुनोगे नहीं, तो तुम्हारे घमण्ड के कारण मैं मन ही मन रोता रहूँगा। इसलिए कि याहवे की भेड़े गुलामी में हैं, मेरी आँखों से आँसू बहते रहेंगे। 18 राजा और राजमाता से कहो,"नीचे बैठो, क्योंकि तुम्हारे सिर पर से खूबसूरत ताज हटाया जा चुका है। 19 दक्षिण के नगरों पर ताला पड़ गया है, उन्हें खोलने वाला कोई नहीं । पूरा यहूदा गुलामी में है। 20 अपनी आँखे उठाओ और उत्तर से आने वालों को देखो। तुम्हारी सुन्दर भेड़ों का झुण्ड कहाँ है ? 21 जब वह तुम्हारे पहले के दोस्तों को जिन्हें तुमने ही खुद सिखाया है, तुम पर अधिकारी ठहराएगा, तब तुम क्या कहोगे ? क्या तुम्हे जच्चा के समान दर्द नहीं होगा ? 22 तब यदि तुम अपने में विचार करो, कि मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है ? तुम्हारी भारी बुराई के कारण तुम्हारा लहंगा उठा दिया गया है और एड़ियाँ जबरदस्ती से नंगी कर दी गई है। 23 यदि हब्शी अपनी खाल या चीता अपने धब्बे बदल सकता है, तो तुम भी बुराई की आदत छोड़ भलाई करना शुरु कर सकते हो। 24 इसलिए मैं उन्हें इस तरह तितर- बितर करूँगा जैसे जंगल की हवा भूसा उड़ा देती है। 25 यही तुम्हारा हिस्सा और मुझ से ठहराया हुआ तुम्हारा भाग यही है, क्योंकि याहवे यह पूछ रहे हैं,"तुम मुझे क्यों भूल चुके हो और झूठ पर भरोसा रख रहे हो? 26 इसलिए मैंने तुम्हारे लहंगे को तुम्हारे मुँह तक उठाया है; ताकि तुम्हारा नंगापन दिखे। 27 तुम्हारा व्यभिचार, कामुकता, वेश्यावृत्ति (सच्चे परमेश्वर को छोड़ दूसरे देवी-देवताओं का भजन-कीर्तन) मैदानी टीलों पर देखा गया है। यह सब मेरी आँखो में घिनौना है। हे यरूशलेम के लोग तुम पर अफसोस, तुम कब तक अशुद्ध रहोगे ? "

14 तब याहवे का संदेश सूखे साल के बारे में यर्मियाह को मिला। 2 "यहूदा रोता है, उसके फाटक उदास हैं, लोग ज़मीन पर बैठकर रो रहे हैं और यरूशलेम की पुकार आकाश तक पहुँच गई है। 3 उनके अमीरों ने अपने दासों को पानी लाने भेजा है, वे जलाशय तक पहुँचे तो, लेकिन पानी मिला नहीं। वे लोग खाली बरतन लेकर वापस आ चुके हैं। शर्मिंदिगी के कारण वे अपने सिर ढँक लेते हैं। 4 बरसात न होने की वजह से ज़मीन में दरारें पड़ चुकी हैं। किसान भी लज्जित महसूस कर रहे हैं। 5 मैदान में हरी घास नहीं है इसलिए हरिणी भी बच्चे को जन्म नहीं दे रही है। 6 जंगली गदहों का झुण्ड टीलों पर खड़े होकर लोमड़ियों की तरह हाँफता है। हरियाली न होने के कारण उनकी आँखे धुंधली पड़ चुकी हैं। 7 हालांकि हमारे अनैतिक काम हमारे खिलाफ़ गवाही देते हैं। हमने बार बार आपको छोड़ा है। आपके विरोध में हमने काम किए हैं, फिर अपने नाम के लिए आप कुछ कीजिए। 8 हे इस्राएल की आशा तथा मुसीबत के समय

में छुड़ाने वाले, आप इस देश में क्यों एक
परदेशी और मुसाफिर की तरह हैं, जिसने
रात में सोने के लिए अपना तम्बू गाड़ा हो
? 9 आप एक इन्सान की तरह हताश क्यों
हैं, एक ऐसे ताकतवर इन्सान की तरह जो
बचा नहीं सकता ? फिर भी हे याहवे, आप
हमारे बीच में हैं और हम आपके नाम के
कहलाते हैं, आपने हमें छोड़ दिया है। 10 इन
लोगों से याहवे यह कहते हैं,"इन लोगों को
भटकना पसन्द है, वे अपने राह का ध्यान
नहीं रखते हैं। इसलिए इन्हें अपनी करनी
का हिसाब देना पड़ेगा। 11 इसलिए याहवे से
मुझे यह संदेश मिला, "इस प्रजा की भलाई
के लिए बिनती मत करना। 12 जब वे लोग
उपवास करेंगे, मैं ध्यान न दूँगा। चाहे वे
कुर्बानियाँ चढ़ाएँ, मुझे वे मंज़ूर न होंगीं। मैं
तलवार और मरी से उनको नाश करूँगा।
13 लेकिन मैंने कहा," हाय याहवे, देखिए,
नबी लोग इनको तसल्ली देते रहे हैं, कि इन्हे
चिन्ता की ज़रूरत नहीं, इनका कुछ बुरा न
होगा। 14 तब याहवे ने कहा, " मेरे नाम से
ये नबी झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं। न ही
मैंने इन्हें भेजा, न कोई आदेश दिया। ये झूठा
दर्शन, झूठी नबूवत, यहाँ तक कि अपने ही
मन के छल को नबूवत के रूप् में तुम्हारे
सामने पेश करते हैं। 15 इसलिए इन नबियों
के बारे में जिन्हें मैंने भेजा ही नहीं, और
झूठे हैं, वे तलवार और अकाल से मरेंगे।
16 वे लोग भी जिन से उन्होंने नबूवत की,
नाश किए जाएँगे। उन्हें कोई दफनाने वाला
न होगा। उनको, उनकी पत्नियों को, बेटों
को और बेटियों को भी उनकी बुराई के
कारण यह सब भुगतना पड़ेगा। 17 तुम उन
से कहो, मेरी आँखो से आँसू लगातार बहते
रहे, क्योंकि मेरे लोगों की कुँवारी बेटी बिना
दया के कुचली गई है और उसके ज़ख्म में
कीड़े पड़ गए हैं। 18 यदि मैं मैदान में जाऊँ,तो
तलवार से मारे गए लोग दिखते हैं, जब नगर
में जाता हूँ, भूख से बेहोश लोग पड़े दिखते
हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि भविष्यद्वक्ता
और पुरोहित पैसा उगाने में लगे हैं। उनके
समझ नहीं है। 19 क्या आपने यहूदा से हाथ
उठा लिया है? क्या आपको सिय्योन से घिन
आती है? नहीं आपने हमें ऐसा क्यों मारा है,
कि हम ठीक हो नहीं सकते? हम शान्ति
का इन्तज़ार करते रहे, लेकिन कुछ फ़ायदा
न हुआ। हालांकि हमें अच्छे हो जाने की
उम्मीद थी, लेकिन हमारी उम्मीद पर पानी
फिर गया। 20 हे याहवे, हम अपनी बुराई और
अपने पूर्वजों की बुराई को भी मान लेते हैं,
क्योंकि हमने आपके खिलाफ़ गुनाह किया
है। 21 अपने नाम के लिए, हमको ठुकराईये
मत, अपने तेजोमय राजासन की बेइज़्ज़ती
मत कीजिए। जो वाचा आपने हमारे साथ
बान्धी, उसे याद कीजिए, भूल मत जाईए।
22 क्या दूसरे देशों के लोगों की मूरतें बरसात
ला सकती हैं? क्या आकाश झड़ियाँ लगा
सकता है? हे हमारे परमेश्वर क्या आप ही
ये सब नहीं करते हैं? हमारा भरोसा आप पर
ही है और आप ही सब कुछ के बनानेवाले
हैं।

15 फिर याहवे ने मुझ से कहा, "यदि
मूसा और शमूएल भी मेरे सामने
आकर सिफारिश करते, तब भी मैं उन पर
तरस न खाता मेरे सामने से इन्हें हटा दो।
2 यदि वे तुम से पूछे कि वे कहाँ जाएँ,
तो कहना, कि याहवे के विचार ऐसे हैं
कि जो मरने वाले हैं, वे मरने जाएँ; जो
तलवार से मरने वाले हैं, वे तलवार से मारे
जाने को; जो आकाल से मरने वाले है, वे
आकाल से, जो कैद किए जाने वाले हैं,
वे गुलामी में चले जाएँ। 3 मैं उनके खिलाफ़

चार तरह की मुसीबतें ठहराता हूँः मार
डालने के लिए तलवार, फाड़ डालने के लिए
पृथ्वी के खूँखार जानवर और कुत्ते, नोच
डालने के लिए आकाश की चिड़ियाँ। 4 यह
हिजकिय्याह के बेटे, यहूदा के राजा मनश्शे
के गलत कामों का परिणाम होगा, जो उनसे
यरूशलेम में किए हैं। वे दुनिया में इधर-उधर
मारे फिरेंगे। 5 हे यरूशलेम, तुम पर कौन
दया करेगा और तुम्हारे लिए रोएगा? तुम्हारा
हालचाल पूछने कौन मुड़ेगा? 6 याहवे का
कहना है कि तुम मुझे छोड़कर पीछे चली
गई, इसलिए मैं तुम्हारे विरोध में अपना हाथ
बढ़ाऊँगा और बर्बाद करूँगा। 7 मैंने उनको
देश के फाटकों में सूप से फटका है। उन्होंने
अनुचित काम छोड़े नहीं है, इसलिए मैंने
अपनी प्रजा को बेबस कर दिया है और
उनका नाश भी किया है। 8 उन लोगों की
विधवाएँ मेरे देखने में समुन्दर की बालू
के किनकों से ज़्यादा हो गई हैं। उनके
जवानों की माँ के खिलाफ़ दोपहर ही को
मैंने लुटेरों को ठहराया है। अचानक ही मैंने
उन्हें मुसीबत में डाल दिया है और घबरा
दिया है। 9 सात लड़कों की माँ भी बेहाल
हो गई और जान भी दे दी। उसका सूरज
दोपहर ही को डूब गया। उसकी आशा जाती
रही और चेहरा फीका पड़ गया। जो बाकी
बचे हैं, उन्हें मैं तलवार से मरवा डालूँगा।
10 हे मेरी माँ, मुझ पर हाय, कि तुमने मुझ
जैसे इन्सान को पैदा किया, जो दुनिया भर
से लड़ाई और तर्क करने वाला ठहरा है।
मैंने ब्याज पर पैसा न दिया, न ही किसी
से उधार लिया है, फिर भी लोग मुझे बुरा
- भला कहते हैं। 11 याहवे ने कहा, "तुम्हारे
फायदे के लिए मैं तुम्हे मजबूत करूँगा।
मुसीबत और पीड़ा के वक्त मैं दुश्मन से
भी तुम्हारी बिनती कराऊँगा। 12 क्या कोई
व्यक्ति पीतल या लोहा उनकी उत्तर दिशा
का लोहा तोड़ सकता है? 13 परमेश्वर की
इच्छा के विरोध में जाने की वजह से मैं
तुम्हारी दौलत और खजाने यों ही लुटने दूँगा।
14 तब मैं ऐसा होने दूँगा कि तुम्हारे दुश्मन
इस दौलत को ऐसे देश में ले जाएँ जिसे तुम
जानती नहीं हो, क्योंकि मेरा गुस्सा भड़क
चुका है और उस से तुम ज़रूर जलोगी।
15 हे याहवे आप तो सब जानते हैं। मुझ पर
निगाह डालें और मुझें यातना देनेवालों से
बदला लीजिए। आप जल्दी गुस्सा नहीं करते
है। इसलिए मुझे जल्दी न उठाईए। आपकी
आज्ञा मानने से मुझे दूसरों की खरी-खोटी
सुननी पड़ी है। 16 जब आपका संदेश मुझे
मिला, तब मैंने उन्हें अपना लिया और मुझे
बड़ी खुशी मिली। हे सेनाओं के याहवे मैं
आपका ही हूँ। 17 आपकी छाया मुझ पर
हुई। मैं मनोरंजन करने वालों के साथ बैठकर
खुश नहीं हुआ। आपके हाथ के दबाव से मैं
अकेला बैठा रहा, क्योंकि आपने मुझे गुस्से
से भर दिया था। 18 मेरा दुख लगातार क्यों
बना रहता है मेरी चोट की कोई दवाई क्यों
नहीं है? क्या आप सचमुच मेरे लिए धोखा
देनेवाली नदी और सूखने वाले पानी की तरह
होंगे ? 19 यह सुन याहवे बोले, "यदि तुम
मन बदलो, तो एक बार फिर मैं तुम्हें अपने
सामने खड़ा करूँगा। यदि तुम कीमती को
कहो और सस्ते को न कहो, तब तुम मेरे
मुँह की तरह होगे। वे लोग तुम्हारी ओर
मुड़ेंगे, लेकिन तुम उनकी ओर न मुड़ना।
20 मैं तुम को उन लोगों के सामने पीतल
की मजबूत शहरपनाह बनाऊँगा। वे तुम से
लड़ेगे, लेकिन जीत न सकेंगे। क्योंकि मैं तुम्हें
बचाने और उद्धार करने के लिए साथ हूँ। मैं

बुरे लोगों से तुम्हें बचाऊँगा। 21 दंगा करने
वाले लोगो के शिकंजे से मैं तुम्हें आज़ाद
करूँगा।

16 याहवे ने मुझे लोगों को बताने के
लिए कहा, 2 इस जगह में बच्चों को
पैदा मत करना। 3 क्योंकि जो बच्चे यहाँ पैदा
होगे, 4 उनके बारे में याहवे का कहना हैः वे
खतरनाक बिमारियों के शिकार हो जाएँगे।
उनके लिए कोई दुखी न होगा। उन्हें दफ़नाया
नहीं जाएगा। वे पृथ्वी पर खाद की तरह
पड़े रहेंगे। वे तलवार और महँगाई से मर
जाएँगे। आकाश की चिड़ियाँ उनकी लाशें
खाएँगी। 5 याहवे बोले, "जिस घर में विलाप
चल रहा हो, वहाँ मत जाना और न स्वयं
विलाप करना, क्योंकि शान्ति, करूणा और
कृपा मैंने इन पर से हटा ली है। 6 इसलिए,
इस देश के छोटे-बड़े सभी की जान जाएगी।
इनकी लाशें यों ही पड़ी रहेंगी और लोग
इनके लिए दुख न मनाएँगे। इनके लिए शोक
करने वालों को कोई खाना भी न देगा कि
शोक में शान्ति दे। 7 माता या पिता के मरने
पर लोग किसी को शान्ति के लिए कटोरे में
दाखमधु भी न पिलाएँगे। 8 तुम इनके साथ
खाने के लिए दावत में न जाना । 9 सेनाओं
के याहवे इस्राएल के परमेश्वर कहते हैं:
देखो, तुम लोगों के देखते देखते ही मैं ऐसा
करने वाला हूँ। इस जगह कोई खुशी न
दिखाई देगी। दूल्हे-दुल्हन की भी आवाज
न सुनाई देगी। 10 "जब ये बातें सुनने के
बाद लोग तुमसे पूछें,"याहवे ने हमारे ऊपर
ये मुसीबतें क्यों डाली है ? हमने कौन सी
आज्ञा नहीं मानी और याहवे के विरोध में
कुछ किया है क्या ? 11 तब तुम लोगों से
कहना, "याहवे का कहना यह है : क्योंकि
तुम्हारे पूर्वज मुझे छोड़कर दूसरे देवताओं
के बन गए और उनका भजन कीर्तन किया,
दण्डवत किया और मेरी बताई गई बातों
से मुँह फेर लिया। 12 जितनी बुराई तुम्हारे
पूर्वजों ने नहीं की होगी, उससे अधिक तुम
करते हो। तुम ज़िद्दी हो और मेरी सुनते ही
नहीं। 13 इसलिए इस देश से तम्हें उखाड़ कर
ऐसे देश में फेंक दूँगा, जिसे न तुम जानते
हो न तुम्हारे पुरखा जानते थे। वहाँ दिन
रात तुम्हारे देवताओं की पूजा करते रहोगे।
मेरी कृपा तुम पर वहाँ न रहेगी। 14 फिर
याहवे की आवाज आई, देखो ऐसे दिन
आएँगे, जिनमें यह न कहा जाएगा, "याहवे
जो इस्राएलयों को मिस्र देश से निकाल लाए,
उनके जीवन की सौगन्ध। 15 वरन यह कहा
जाएगा; याहवे जो इस्राएलियों को उत्तर दिशा
से और उन सब देशों से जहाँ उन्होंने उनको
गुलाम कर दिया था, छुड़ा लाए, उनके जीवन
की सौगन्ध। 16 देखो, याहवे कहते हैं, मैं
ढेर सारे मछुओं को बुलवा भेजूँगा कि वे
इन लोगों को पकड़ लें और मैं फिर बहुत
से बहेलियों को बुलवा भेजूँगा कि वे इनको
पकड़कर सभी पहाड़ों - पहाड़ियों पर से और
चट्टानों की दरारों में से निकालें। 17 क्योंकि
उनका पूरा चरित्र मेरी नज़रों के सामने है,
वह छिपा नहीं है। न ही उनके अनैतिक काम
मेरे से छिपे हैं।, इसलिए मैं उनके अनुचित
कामों और अपराधों की दुगनी सज़ा दूँगा।
18 इसलिए कि उन्होंने मेरे देश को अपनी
घिनौनी चीज़ो की लाशों से अशुद्ध कर डाला
है और मेरे अपने हिस्से को गंदगी से भर दिया
है। 19 हे याहवे, मेरी ताकत और मेरे मजबूत
किले, मुसीबत के समय मेरे शरणस्थान और
देश-देश के लोग पृथ्वी के चारों ओर से
आपके पास आकर कहेंगे,"निश्चय हमारे
पूर्वज झूठी और बेकार की वस्तुओं पर
मन लगाते आए हैं। 20 क्या इन्सान ईश्वरों
को बना सकता है ? नहीं, वे ईश्वर हो

ही नहीं सकते।” 21 इसलिए इस एक बार
मैं इन लोगों को अपनी ताकत और शक्ति
दिखाऊँगा। वे जानेंगे कि मैं याहवे सब कुछ
का बनाने वाला हूँ।

17 यहूदा का अपराध लोहे की टाँकी
ओर हीरे की नोक से लिखा हुआ है।
वह उनके मनरूपी पहिये और उनकी वेदियों
के सींगो पर भी खुदा हुआ है। 2 उनकी
वेदियाँ और अशेरा नामक देवियाँ जो हरे
पेड़ो के पास और ऊँचे टीलों के ऊपर हैं,
वे उनके बच्चों को याद रहती हैं। 3 हे मेरे
पहाड़, तुम जो मैदान में हो, तुम्हारी दौलत
और भण्डार मैं, तुम्हारे अनुचित कामों के
कारण लुट जाने दूँगा और तुम्हारे पूजा के
ऊँचे स्थान भी जो तुम्हारे देश में पाए जाते
हैं। 4 तुम अपने ही दोष के कारण अपने उस
हिस्से के अधिकारी न रहने पाओगे, जो मैंने
तुम्हें दिया है। तुम्हें पराए देश में अपने शत्रुओं
की सेवा करनी होगी, क्योंकि तुमने मेरे गुस्से
को इतना भड़काया है कि वह सदा जलती
रहेगी। 5 याहवे कहते हैं, जो व्यक्ति मनुष्य
पर भरोसा रखता है, उसका सहारा लेता है
और जिसका मन याहवे से दूर हो जाता है।
सज़ा के लायक है। 6 वह सूखे देश के अधमरे
पेड़ की तरह होगा और कभी भलाई न देख
सकेगा। वह सूखी, निर्जन और लोनछाई
(ज़मीन) पर वास करेगा। 7 वह व्यक्ति जो
याहवे पर भरोसा रखता है, जिसकी नींव
याहवे है वही धन्य है। 8 वह ऐसे पेड़ की
तरह होगा जो नदी के किनारे लगाया गया
हो और उसकी जड़ पानी के पास फैली हो।
उसे धूप नहीं लगेगी। उसके पत्ते हरे रहेंगे।
अकाल के समय उसके बारे में कोई डर न
होगा, क्योंकि वह तब भी फलेगा। 9 दुनिया
की सारी वस्तुओं में मन सबसे अधिक
धोखा देनेवाला है। उस में एक ऐसी बिमारी
लगी है जिसका इलाज आज तक लोगों के
पास नहीं है। 10 मैं, याहवे लोगों के मनों को
टटोलता और परखता हूँ, ताकि हर एक को
उसकी चाल चलन या कामों के मुताबिक
फल दूँ। 11 जो बेईन्साफी से दौलत इकट्ठी
करता है, वह उस तीतर की तरह है, जो
दूसरी चिड़िया के दिए हुए अण्डों को सेती है।
उसकी आधी उम्र ही में उस दौलत को छोड़
जाता है और आखिर में बेवकूफ ठहरता है।
12 हमारा पवित्र भवन जो भजन-कीर्तन के
लिए था, वह ऊँची जगह पर रखेएक तेजोमय
राजासन के समान है। 13 हे याहवे हे इस्राएल
की नींव जितने लोग आप को छोड़ देते है,
शर्मिन्दा होंगे। जो आप से भटक जाते हैं,
उनके नाम ज़मीन पर लिखे जाएँगे। क्योंकि
उन्होंने बहते जल के सोते याहवे को छोड़
दिया है। 14 हे याहवे मुझे ठीक कीजिए, तब
मैं ठीक हो जाऊँगा। मुझे बचाईए, तो मैं बच
जाऊँगा, क्योंकि मैं आपकी ही बड़ाई करता
हूँ। 15 सुनिए, वे मुझ से कहते हैं, “कहाँ रही
याहवे की कही बात ? वह अभी पूरी हो
जाए” 16 लेकिन आप को मेरी हालत मालूम
है। आपके पीछे चलते हुए जोश में आकर मैंने
चरवाहे का काम नहीं छोड़ा है। न ही मैंने उन
आने वाली मुसीबतों के दिन को चाहा था।
मैंने जो कुछ कहा, वह आपको मालूम था।
17 मुझे घबराहट न होने दीजिए। परेशानी के
समय आप ही मेरे शरणस्थान हैं। 18 हे याहवे
मेरी आशा, निराशा में न बदल जाए। जो मुझे
यातना देते हैं, वे ही आशाहीन हो जाएँ। उन्हें
घबरा दें। लेकिन मुझे निराशा से बचाएँ। उन
पर मुसीबतों को उण्डेल दें और पीस डालें।
19 याहवे मुझ से बोले “सदर फाटक में खड़े
हो जाओ, जिस से यहूदा के राजा, वरन
यरूशलेम के सभी रहनेवाले अन्दर-बाहर
आते जाते रहे। 20 उन से कहिए, “हे यहूदा के

राजाओं और सभी यहूदियों, हे यरूशलेम में
रहनेवालो और सभी लोगो, जो इन फाटकों
में से होकर अन्दर जाते हो, याहवे की बातों
पर कान लगाओ। 21 याहवे सावधानी बरतने
के लिए कह रहे हैं और अलग किए हुए दिन
में हर दिन किए जाने वाले भारी काम से बचने
के लिए भी। 22 आराम के दिन अपने अपने
घर से कोई भी बोझ बाहर मत लेओ और न
किसी तरह का काम काज करो, वरन उस
आदेश के अनुसार जो मैंने तुम्हारे पुरखों को
दिया था, आराम के दिन को पवित्र मानना
23 लेकिन याहवे की उन्होंने न मानी, अपनी
ज़िद् में बने रहे। उन्हें उसके लिए सज़ा भी
दी गई। 24 लेकिन यदि तुम सच में मेरी सुनो
और वैसा ही करो, 25 तो दाऊद की गद्दी पर
बैठनेवाले राजा, रथों और घोड़ों पर सवार
गवर्नर और यहूदा के लोग और यरूशलेम
के वासी इस नगर के फाटकों से भीतर
आएँगे और यह नगर बर्बाद न होगा। 26 लोग
होमबलि, मेलबलि, अन्नबलि, लोबान और
धन्यवाद बलि लेकर यहूदा के नगरों से और
यरूशलेम के आसपास से बिन्यामीन के देश
के नीचे के देश से पहाड़ी देश और दक्षिण देश
से, याहवे के भवन में आया करेंगे। 27 लेकिन
यदि तुम अलग किए दिन के बारे में मेरे
निर्देश न मानोगे, तो मैं यरूशलेम के फाटकों
को जलाऊँगा। यरूशलेम के महल बर्बाद
हो जाएँगे और वह आग काफी समय तक
जलती रहेगी।

18 याहवे की ओर से यह संदेश
यर्मियाह के पास आया; “उठो और
कुम्हार के घर जाओ, 2 वहाँ मैं तुम्हें कुछ
बातें बताऊँगा।” 3 मैंने ऐसा किया और पाया
कि कुम्हार चाक पर एक बर्तन बना रहा था।
4 जब वह बिगड़ गया तो उसने एक दूसरा
बर्तन बना डाला। 5 एक बार फिर याहवे
बोले,“हे इस्राएल के कुटुम्ब, 6 क्या मैं इस
कुम्हार की तरह नहीं कर सकता, देखो जैसे
मिट्टी कुम्हार के हाथ में है, वैसे ही इस्राएल
का कुटुम्ब मेरे हाथ में है। 7 जब मैं किसी देश
के लोगों को उजाड़ने की बात कहूँ, 8 और
वे अपने बुरे रास्ते को छोड़ दें तो मैं अपनी
कही हुई मुसीबत उन पर न डालूँगा। 9 जब
मैं किसी देश के लोगों के रोपे जाने की बात
कहूँ। 10 और वे मेरी निगाह में जो गलत है
वह करें तो मैं अपनी भलाई करने की प्रतिज्ञा
को बदलूँगा। 11 इसलिए अब तुम यहूदा और
यरूशलेम के रहनेवालों से कहो,“याहवे
कहतेहैं : देखो मैं तुम्हारा नुकसान करने की
योजना बना रहा हूँ। इसलिए अपने अनैतिक
और अनुचित कामों को करना रोक दो।
12 लेकिन वे कहते हैं, ऐसा नहीं हो सकता,
हम अपने मन से जिएँगे और जो चाहे करेंगे।
13 ‘इस कारण याहवे कहते हैं, “देश-देश के
लोगों से सवाल करो, कि उन्होंने ऐसी बात
क्या कभी सुनी हैं? इस्राएल की कुँवारी ने जो
काम किया है उसके सुनते ही देह के बाल
खड़े हो जाते हैं। 14 क्या लबानोन की बर्फ
जो चट्टान पर से मैदान में बहती है, बन्द हो
सकती है ? क्या वह ठण्डा पानी जो दूर से
बहता है कभी सूख सकता है? 15 लेकिन मेरे
लोग मुझ भूल गए हैं। वे बेकार की चीजों के
लिए धूप जलाते हैं। उन्होंने अपने पुराने समय
के रास्तें में ठोकर खाई है। वे मानो राजा
के रास्ते को छोड़कर पगडंडियों पर चल
रहे हैं। 16 इसीलिए उनका देश ऐसा उजड़
गया है, कि लोग हँसी उड़ाते रहेंगे। उसके
पास से जाना वाला व्यक्ति आश्चर्य करेगा
और सिर हिलाएगा। 17 मैं उन्हें पुरवाई से
उड़ाकर दुश्मन के सामने तितर-बितर करूँगा
उनकी मुसीबत के समय मैं उन्हें अपनी पीठ
दिखाऊँगा।” 18 तब वे कहने लगे, “चलो,

यर्मियाह के खिलाफ़ कुछ योजना बनाई जाए, क्योंकि न याजक से नियम -आज्ञाएँ, न ज्ञानी से सलाह मशविरा, न भविष्यद्वक्ता से वचन दूर होंगे। आओ किसी बात में उसे फँसा लें और उसे मार डालें। 19 हे याहवे मुझ पर ध्यान दीजिए। जो लोग मुझ से लड़ते हैं, उन्हें देखिए। 20 क्या भलाई के बदले बुराई की जानी चाहिए ? तुम याद करो कि उन लोगों के फायदे के लिए मैं आपके सामने बिनती करने को खड़ा हुआ, जिस से उन पर से आपका गुस्सा हट जाए। लेकिन वे तो मेरी जान लेने के लिए गड्ढा खोद चुके हैं 21 इसलिए उनके बेटे-बेटियाँ भूख से मर जाएँ, तलवार से काटे जाएँ। उनकी पत्नियाँ सन्तानरहित बनी रहें और वे विधवा हो जाएँ। उनके आदमी मरी से नाश हों और जवान युद्ध में खतम हो जाएँ। 22 आप जब उन पर अचानक दुश्मन को ले आएँ, तब उनके घरों में रोना पीटना मच जाए, क्योंकि उन्होंने मुझे मार डालने के लिए गड्ढा खोदा है। 23 हे याहवे आपकी निगाह में उनकी सारी योजनाएँ है। इसलिए उनकी इस बुराई को आप ढाँपिए नहीं और न ही मिटाईये। आपके देखते -देखते वे ठोकर खाएँ। अपने गुस्से में आकर उन से ऐसा बर्ताव कीजिए।

19 याहवे बोले,“जाओ और कुम्हार की बनाई हुई सुराही खरीदो। अपने साथ प्रजा के बुज़ुर्गों और पुरोहितों को लेकर, 2 हिन्नोमियों की तराई की ओर उस फाटके के पास जाओ, जहाँ ठीकरे फेंके जाते हैं जो मैं कहूँ वही उनके सामने एलान करना। 3 तुम्हारे शब्द ऐसे होने चाहिए, “हे यहूदा के राजाओ और यरूशलेम के सभी लोगो, याहवे की सुनो। इस्राएल के मालिक सेनाओं के याहवे कहते हैंः इस जगह पर मैं ऐसी मुसीबत डालूँगा, कि सुननेवाले भी हक्के-बक्के रह जाएँगे। 4 क्योंकि यहाँ के रहवासियों ने मुझे छोड़ दिया और अनजान देवताओं के लिए जिन्हें न वे जानते हैं, न उनके पुरखा जानते थे, पूजा-पाठ की है। इस स्थान को इन लोगों ने बेगुनाह लोगों के खून से भर दिया है। 5 इन्होने बाल की पूजा के ऊँचे स्थान बनाए अपने बच्चों को कुर्बान कर दिया। यह बात कभी न मेरे मन में आई थी, न इसके बारे में बातचीत हुई और न ही मैने इसका आदेश दिया। 6 इसलिए याहवे का कहना है कि ऐसा समय आएगा जब यह तोपेत या हिन्नोमियों की घाटी नहीं, लेकिन कत्ल की घाटी कहलाएगी। 7 मैं इस जगह में यहूदा और यरूशलेम की योजनाओं को बेकार कर डालूँगा । उन्हें मैं उनके दुश्मनों के हाथ की तलवार चलवाकर गिरा दूँगा। उनकी लाशों को मैं आकाश की चिड़ियों और पृथ्वी के जानवरों का खाना बना दूँगा। 8 मैं इस नगर को ऐसा वीरान कर दूँगा, कि लाग इसे देखकर डरेंगे। जो लोग यहाँ से गुज़रने वे यहाँ पर पड़ी मुसीबतों के कारण आश्चर्य करेंगे और घबरा जाएँगे। 9 घिर जाने और परेशानी के समय जब उनकी जान उनके दुश्मन संकट में डाल देंगे, उस समय मैं उनके बेटे-बेटियों का गोश्त उन्हें खिलाऊँगा और एक दूसरे का भी। 10 तब तुम उस सुराही को उनके लोगों के सामने तोड़ डालना जो तुम्हारे साथ जाएँगे। 11 उनसे कहना, सेनाओं के याहवे कहते हैं, कि जिस प्रकार से यह मिट्टी का बर्तन जो टूट गया, बनाया न जा सकेगा। इसी तरह मैं इस देश के लोगों को और इस नगर को तोड़ डालूँगा। तोपेत नामक घाटी में इतनी कब्रे होंगी कि कब्र के लिए और जगह न होगी। 12 इस स्थान और यहाँ रहनेवालों के लिए ऐसा ही करूँगा, यह तोपेत की तरह बना दिया जाएगा। 13 यरूशलेम के घर और

यहूदा के राजाओं के घर, जिनकी छतों पर
आकाश की पूरी फौज के लिए धूप जलाया
गया और दूसरे देवताओं के लिए तपावन
दिया गया; वे सभी तोपेत की तरह अशुद्ध
हो जाएँगे। 14 तब यर्मियाह तोपेत से वापस
आया, जहाँ याहवे ने उसे भविष्यद्वाणी करने
के लिए भेजा था। वहाँ आंगन में खड़ा होकर
वह कहने लगा; 15 "इस्राएल के याहवे कहते
हैं, देखो, सभी गाँवों सहित इस नगर पर वह
सारी मुसीबत डालना चाहते हैं, जो मैंने इस
पर लाने के लिए कहीं थीं, क्योंकि ज़िद्द में
आकर उन्होंने मेरी बात नहीं मानी।"

20 जब यर्मियाह भविष्यद्वाणी कर रहा
था, इम्मेर के बेटे पशहूर ने जो
पुरोहित और याहवे के भवन का मुखिया
था, वह सब सुना। 2 पशहूर ने यर्मियाह
भविष्यद्वक्ता को मारा और लकड़ी में जकड़
दिया, जो याहवे के भवन के ऊपर बिन्यामीन
के फाटक के पास है। 3 प्रातःकाल पशहूर
ने उसे उस लकड़ी से निकलवाया, तब
यर्मियाह बोला, "याहवे ने तुम्हारा नाम
पशहूर नही, मागोर्मिस्साबीब रख दिया है।
4 क्योंकि याहवे ने यह कहा हैः देखो, मैं तुम्हें
तुम्हारे लिए और तुम्हारे सभी दोस्तों के लिए
डर का कारण ठहरा दूँगा। वे अपने दुश्मनों
के हथियार से तुम्हारे देखते ही जान से मार
डाले जाएँगे। 5 फिर मैं इस नगर की सारी
दौलत को और इसमें की कमाई और सब
कीमती वस्तुओं को और यहूदा के राजाओं
की जितनी रखी हुई दौलत है उसे उनके
दुश्मनों की कर दूँगा। वे उसे लूटकर बाबेल
ले जाएँगे। 6 हे पशहूर, तुम उन सभी के
साथ जो तुम्हारे घर में रहते हैं, गुलामी में
चले जाओगे। अपने उन दोस्तों सहित जिनसे
तुमने झूठी भविष्यद्वाणी की, तुम बाबेल ही
में मरोगे। तुम वही दफ़नाए जाओगे।" 7 हे
याहवे, आपने मुझे धोखा दिया। आप मुझ
से ज़्यादा ताकतवर हैं, इसलिए आप मुझ
पर जीत हासिल कर सके। लोग दिन भर
मेरा ठट्ठा करते हैं। 8 क्योंकि जब मैं बोलता
हूँ, तो ऊँची आवाज़ से कहता हूँ, "दँगे, हाँ
दंगे ही दँगे।" क्योंकि याहवे का संदेश दिन
भर मेरे लिए शर्म और ठट्ठा का कारण होता
रहता है। 9 यदि मैं कहूँ,"मैं उनके बारे में
बात नहीं करूँगा, न उनके नाम से बोलूँगा,
तो मुझे ऐसा लगेगा कि मेरी हड्डियाँ जल
रही हों और असहाय रहा। 10 लोगों को मेरी
बुराई करते मैंने सुना है। चारों तरफ डर ही
डर है। 11 लेकिन याहवे मेरे साथ हैं, वह
बहुत बहादुर हैं। इसलिए मुझे परेशान करने
वाले जीत न सकेंगे। वे लड़खड़ा जाएँगे।
वे लोग समझदारी से काम नहीं करते हैं।
इसलिए उन्हें शर्मिन्दा होना पड़ेगा। उनकी
इस शर्मनाक दशा को कभी भुलाया न जा
सकेगा। 12 हे सेनाओं के याहवे, अपने लोगों
के मनों को परखने वाले, सब के मनों को
जाननेवाले, जो बदला आप उनसे लेंगे, उसे
मैं देखना चाहता हूँ, क्योंकि मैंने अपना
मुकद्दमा आपके सुपुर्द कर दिया है। 13 याहवे
के लिए गीत गाओ। याहवे की बड़ाई करो,
क्योंकि वह गरीब की जान को बुरे लोगों से
बचाते हैं। 14 वह दिन इतिहास में नाश हो
जाए, जब मैं पैदा हुआ, जिस दिन मेरी माँ ने
मुझे जन्म दिया। 15 उस इन्सान का बुरा हो
जाए, जिसने मेरे पिता को यह खबर देकर
उसे बहुत खुश किया, कि उसके बेटा हुआ
है। 16 उस जन की हालत उन नगरों की सी
हो, जिन्हें याहवे ने बिना तरस तहस-नहस
किया। सुबह उसको चिल्लाना और दोपहर
को युद्ध की ललकार सुनाई दे। 17 क्योंकि
उसने मुझे गर्भ ही में मार न डाला कि मेरी
माता का गर्भाशय ही मेरी कब्र होती और मैं

उसी में हमेशा पड़ा रहता। 18 क्यों मैं दंगा
और दुख सहने के लिए जन्मा कि अपने
जीवन में मेहनत और दुख देखता रहूँ और
अपने दिन बदनामी में बिताऊँ।

21 यह संदेश याहवे की ओर से
यर्मियाह के पास उस समय पहुँचा,
जब सिदकिय्याह राजा ने उसके पास
मल्कियाह के बेटे पशहूर और मासेयाह
याजक के बेटे सपन्याह के हाथ यह
कहला भेजा, 2 "हमारे लिए याहवे से पूछो,
क्योंकि बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर हमारे
खिलाफ़ युद्ध कर रहा है। कहीं ऐसा न हो कि
याहवे हम से अपने किए गए अजीब कामों के
अनुसार ऐसा बर्ताव करें, कि वह हमारे पास
से चला जाए।" 3 तब यर्मियाह बोला,"तुम
सिदकिय्याह से कहो, 4 इस्राएल के याहवे
कहते हैं: देखो, युद्ध के जो हथियार तुम्हारे
हाथों में हैं, जिनसे तुम बाबेल के राजा और
शहरपनाह के बाहर घेरनेवाले कसदियों से
लड़ रहे हो, उनको मैं लौटाकर इस नगर
के बीच में इकट्ठा करूँगा। 5 मैं खुद हाथ
बढ़ाकर और ताकतवर बाँह से और गुस्से
में आकर तुम्हारे खिलाफ़ लड़ूँगा। 6 मैं इस
नगर के रहनेवालों को क्या मनुष्य, क्या
जानवर सभी को बड़ी-बड़ी मरी से खतम
करूँगा। 7 उसके बाद, याहवे का कहना है,
"हे यहूदा के राजा सिदकिय्याह, मैं तुम्हें,
तुम्हारे कर्मचारियों और लोगों को वरन,
जो लोग इस नगर में मरी, तलवार और
महँगाई से बचे रहेंगे, उन्हें बाबेल के राजा
नबूकदनेस्सर और उनकी जान के दुश्मनों
के आधीन कर डालूँगा। वह उन्हें तलवार से
मारेगा, उन पर न तो तरस खाएगा, न कुछ
कोमलता दिखाएगा और न दया। 8 "इस
प्रजा के लोगों को बताओ कि याहवे यों
कहते हैं देखो मैं तुम्हारे सामने ज़िन्दगी का
रास्ता और मौत का रास्ता बताता हूँ। 9 जो
इस नगर में रहे वह तलवार, महँगी और मरी
से मारेगा। लेकिन जो निकलकर तुम्हें घेरने
वाले कसदियों के पास भाग जाए वह बचेगा।
10 क्योंकि याहवे कहते हैं, कि मैंने इस नगर
की ओर ऊपर चेहरा किया है, वह भलाई के
लिए नहीं है, लेकिन नुक्सान के लिए है। यह
बाबेल के राजा के वश में पड़ेगा और वह
इसे फुँकवा देगा। 11 यहूदा के राज घराने के
लोगों से कहो, कि वे मेरी बातों पर कान
लगाएँ। 12 हे दाऊद के घराने, याहवे कहते
हैं सुबह इन्साफ करो, लुटने वाले को अंधेर
करने वाला से छुड़ाओ, नहीं तो तुम्हारे बुरे
कामों के कारण मेरा गुस्सा भड़क जाएगा,
जिसे कोई बुझा न पाएगा। 13 "हे घाटी में
रहनेवाली और समथर देश की चट्टान तुम
जो कहते हो, "हम पर कौन हमला कर
सकता है और हमारे रहने की जगह में कौन
दाखिल होगा ?" याहवे कहते हैं कि वह
तुम्हारे खिलाफ़ हैं। 14 याहवे यह भी कहते
हैं, "मैं सज़ा देकर तुम्हारे कामों का बदला
दूँगा। जंगल में आग लगाऊँगा। जो कुछ भी
चारों ओर है वह भस्म हो जाएगा।

22 याहवे ने कहा, " यहूदा के राजा के
भवन में उतरकर यह कहो, 2 "हे
दाऊद की गद्दी पर विराजमान यहूदा के
राजा, तुम अपने कर्मचारियों और अपनी
प्रजा के लोगों सहित, जो इन फाटकों से
आया करते हैं, याहवे की बातों को सुनो।
3 उनके वचन हैं कि इन्साफ और सच्चाई
के काम करो। जिनका शोषण किया गया
है उनको छुड़ाओ। परदेशी, अनाथ, और
विधवा पर अन्धेर न करना। न ही इस स्थान
में बेगुनाह का खून बहाना। 4 देखो, यदि तुम
ऐसा करोगे, तो इस भवन के फाटकों से
होकर दाऊद की गद्दी पर विराजमान राजा

रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए अपने -अपने
कर्मचारियों और प्रजा समेत दाखिल हुआ
करेंगे। 5 लेकिन यदि तुम इन बातों को न
मानो तो, यह भवन उजाड़ा जाएगा। 6 राजा
के इस भवन के बारे में याहवे का कहना
है; तुम मुझे गिलाद देश और लबानोन की
चोटी से दिखाए पड़ते हैं। लेकिन मैं तुम्हें
खण्डहर और निर्जन कर डालूँगा 7 बर्बाद
करने वालों को हथियार के साथ मैं भेजूँगा।
वे तुम्हारे खूबसूरत देवदारों को काटकर
आग में झोंकेंगे। 8 यहाँ से गुज़रने वाले
देश-देश के लोग सवाल करेंगे कि ऐसा
क्यों हुआ ? 9 तब जवाब मिलेगा कि इन
लोगों ने याहवे की वाचा को तोड़कर दूसरे
देवताओं के लिए भजन-कीर्तन किया। 10 जो
मर गया, उसके लिए मत रोओ। उसी के
लिए रोओ, जो परदेश जा चुका है वह वापस
आकर अपनी मातृभूमि को न देख सकेगा।
11 इसलिए कि यहूदा के राजा योशिय्याह का
बेटा शल्लूम जो अपने पिता योशिय्याह के
स्थान पर राजा था और इस स्थान से निकल
गया, उसके बारे याहवे का कहना है कि
वह लौटकर नहीं आ सकेगा। 12 जहाँ वह
गुलामी में गया है, वहीं वह मर जाएगा और
इस देश को कभी देख न सकेगा। 13 उस पर
हाय जो अपने घर को गलत तरीकों से और
अपनी उपरौठी कोठरियों को बेइन्साफ़ी से
बनाता है, जो किसी से बिना मज़दूरी दिए
अपना काम करवाता है। 14 वह डींगे मारते
हुए कहता है कि मैं अपने लिए लम्बा चौड़ा
घर और हवादार छत बनाऊँगा।वह कहता
है, कि वह खिड़कियाँ बनाकर उन्हें देवदार
की लकड़ी से पाट लेगा और सिन्दूर से
रंगेगा। 15 तुम जो देवदार के दिवाने हो, क्या
इस तरह से तुम्हारा राज्य बना रहेगा। देखो,
तुम्हारा पिता ईमानदारी सच्चाई से काम
करता था। वह सुख से रहता और खाता
पीता था। 16 वह सुख से इसलिए रहता था,
क्योंकि वह दीन दुखियों का इन्साफ किया
करता था। क्या यही मेरा ज्ञान रखना नहीं है?
यह प्रभु का वचन है। 17 लेकिन तुम केवल
अपना फ़ायदा देखते हो, और निर्दोषों की
जान लेने और अन्धेर तथा बवाल करने में
अपना मन लगाते हो। 18 इसलिए योशिय्याह
के बेटे यहूदा के राजा यहोयाकीम के बारे
में प्रभु का कहना है, कि जैसे लोग हाय
मेरी बहन, हाय मेरे भाई करते हुए रोते हैं,
उस तरह से , उसके लिए दुख नहीं मनाएँगे,
19 लेकिन उसको गदहे की तरह दफ़नाया
जाएगा। उसे घसीटकर यरुशलेम के फ़ाटकों
के बाहर फेंक दिया जाएगा। 20 लबानोन पर
चढ़कर हाय- हाय करो, तब बाशान जाकर
ऊँची आवाज़ से चिल्लाओ, फिर अबारीम
पहाड़ पर जाकर हाय- हाय करो, क्योंकि
तुम्हारे सभी दोस्त बर्बाद हो चुके हैं। 21 जब
तुम सुखी थे, तब मैंने तुम्हें सतर्क किया था,
लेकिन तुमने सुनना नहीं चाहा। जवानी के
समय ही से तुम्हारा ऐसा चालचलन रहा है।
22 तुम्हारे सभी चरवाहे हवा से उड़ाए जाएँगे
और तुम्हारे दोस्त गुलामी में चले जाएँगे।
उस समय तुम अपनी बुराईयों के कारण
शर्मिन्दा होगी। 23 हे लबानोन के निवासियो,
देवदार में अपन घोंसला बनानेवालो, जब
तुम्हें जच्चा की तरह दर्द होने लगे, तब तुम
परेशान हो जाओगी। 24 प्रभु प्रण करके कहते
हैं, कि चाहे यहोयाकीम का बेटा यहूदा का
राजा कोन्याह, मेरे दाहिनेहाथ की अंगूठी
भी होता,तौभी मैं उसे उतार फेंकता । 25 मैं
तुम्हें तुम्हारी जान के पीछे पड़े लोगों के
हाथ और जिनसे तुम डरते हो उनके अर्थात
बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर और कसदियों
के सुपर्द कर दूँगा। 26 मैं तुम्हें तुम्हारी जननी

सहित एक पराए देश में जहाँ तुम पैदा नहीं
हुए, फेंक दूँगा और तुम वहीं खतम हो
जाओगे। 27 लेकिन जिस देश में वे लौटने के
लिए लालायित रहते हैं, वहाँ कभी लौट न
पाएँगे। 28 क्या यह इन्सान कोन्याह तुच्छ
और टूटा हुआ बर्तन है? क्या यह बेकार
का बर्तन है? फिर उसे वंश सहित अनजाने
देश में क्यों निकालकर फेंक दिया जाएगा?
29 हे पृथ्वी, पृथ्वी, हे पृथ्वी प्रभु की बात
सुनो! 30 उनका कहना है कि इस आदमी को
निर्वंश लिखो, उसकी ज़िन्दगी सुकून से नहीं
गुज़रेगी। उसके वंश में से कोई आशीषत
होकर दाऊद की गद्दी पर विराजमान या
यहूदियों पर शासन करनेवाला न होगा।

23 याहवे का कहना है, "जो चरवाहे
मेरी भेड़ बकरियों को इधर-उधर
करते और बर्बाद करते हैं, वे दण्ड के लायक
हैं। 2 उन्होंने आगे यह भी कहा, "तुमने
मेरी भेड़-बकरियों का ख्याल नहीं रखा,
उन्हें इधर-उधर खदेड़ दिया और बर्बाद कर
डाला, इसलिए तुम्हारे इस बुरे काम की सज़ा
तुम्हें मिलेगी। 3 इसके बाद मेरी बची हुई भेड़ें
जो अलग अलग देशों में ज़बरदस्ती भेज दी
गई थीं, उन्हें लौटा लाऊँगा। वे भेड़शाला
मेंअच्छी तरह से रहेंगी। 4 ऐसे चरवाहे मैं
उनके लिए अलग करूँगा, जो अच्छी तरह से
उनकी देखभाल करेंगे। उन्हें डर नहीं लगेगा
और खोएँगी भी नहीं। 5 याहवे का कहना यह
भी है, "ऐसा समय आएगा जब मैं दाऊद
के कुल में एक धर्मी अंकुर निकालूँगा। वह
राजा बनेगा और समझ से राज्य करेगा।
वह इन्साफ और सच्चाई से अपने देश में
शासन करेगा। 6 उन दिनों, यहूदी बचे रहेंगे
और इस्राएली निडर होंगे। याहवे उसका नाम
"याहवे हमारी धार्मिकता" रखेंगे। 7 इसलिए
देखो, याहवे कहते हैं कि ऐसा समय भी
आएगा, जब लोग यह न कहेंगे जो याहवे
हम इस्राएलियों को मिस्र देश से छुड़ा ले
आए, उनके नाम की सौगन्ध, 8 लेकिन वे
यह कहेंगे, "याहवे जो इस्राएल के घराने
को उत्तर देश से और उन सब देशों से भी
जहाँ उन्होंने हमें जबरन निकाल दिया, छुड़ा
ले आए उनके जीवन की सौगन्ध।" तब वे
अपने देश ही में बसे रहेंगे। 9 भविष्यद्वक्ताओं
के बारे मेरा मन अन्दर ही अन्दर फटा जा रहा
है। मेरी सारी हड्डियों थरथराती हैं। याहवे ने
जो पवित्र बातें कही हैं, उन्हें सुनकर मैं ऐसे
मनुष्य की तरह हो गया हूँ, जो नशे में चूर
होता है। 10 क्योंकि यह देश व्याभिचारियों
से भरा हुआ है। ऐसी सज़ा इस देश पर आई
है कि लोग रो रहे हैं। जंगल की चराईयाँ
भी सूख चुकी हैं। लोगों की लम्बी दौड़
बुराई के लिए ही है। उनकी बहादुरी में
इन्साफ नहीं बेईन्साफी है। 11 भविष्यद्वक्ता
और पुरोहित दोनों हीअनैतिक जीवन जी रहे
हैं , अपने भवन में भी मैंने उनकी बुराई
पाई है। यह याहवे का कहना है। 12 इसलिए
उनका रास्ता अन्धेरा और फिसलने वाला
होगा। वे उसमें ढकेलकर गिरा दिए जाएँगे।
याहवे कहते हैं कि मैं उनकी सज़ा वाले
साल में उन पर कहर ढाऊँगा। 13 शोमरोन
के भविष्यद्वक्ता बाल के नाम से भविष्यद्वाणी
करके मेरे लोगों को भटकाते हैं। 14 लेकिन
यरूशलेम के नबियों के काम ऐसे हैं कि
रोंगटे खड़े हो जाते हैं अर्थात यौन अनैतिकता
(व्याभिचार) और दिखावा। वे गलत करने
वालों को ऐसी हिम्मत देते हैं कि वे बुराई
के रास्ते को न छोड़ें। सभी लोग मेरी
निगाह में सदोमियों और अमोरियों की तरह
हो चुके हैं। 15 इसलिए सेनाओं के याहवे
यरूशलेम के भविष्यद्वक्ताओं के बारे में
कहते हैं कि वह उन्हें कड़वी वस्तुएँ और

ज़हर पिलाएँगे, क्योंकि उनके कारण पूरे देश
में परमेश्वर से रहित जीवन (भक्तिहीनता)
फैल चुका है। 16 सेनाओं के याहवे कहते
हैं:इन भविष्यद्वक्ताओं की कही बातों पर
बिल्कुल ध्यान मत दो। ये तुम्हें बेकार की
बातें सिखाते हैं। ये दर्शन का दावा करते हैं
लेकिन वह याहवे की ओर से नहीं है, केवल
मनगढ़न्त बाते करते हैं। 17 मुझे तुच्छ जानने
वाले लोगों से ये लोग हमेशा कहते रहते हैं,
कि उनका सब अच्छा ही अच्छा होगा, कुछ
बुरा न होगा। ज़िद्दी लोगों से ये लोग कहते
रहते हैं कि उन पर कोई मुसीबत न आएगी।
18 याहवे की गुप्त सभा में कौन खड़ा होकर
उनकी कही बातों को समझा सका है या मेरी
बातों पर किसने कान लगाया है। 19 देखो,
याहवे के गुस्से का जोरदार बवण्डर चलने
लगा है। 20 जब तक याहवे अपना काम और
अपनी योजनाओं को पूरा न कर सकें, तब
तक उनका गुस्सा रूकेगा नहीं। अन्त के
समय में तुम यह बात ठीक से समझ पाओगे।
21 "ये भविष्यद्वक्ता मेरे द्वारा भेजे नहीं गए,
लेकिन फिर भी भविष्यद्वाणी करने लगते हैं।
22 ये लोग मेरी सिखाई बातों में बने नहीं रहते
हैं, इसलिए मेरे लोगों को मेरा वचन सुना नहीं
पाते। इसीलिए वे अनुचित और अनैतिक
कामों को छोड़ते नहीं। 23 याहवे कहते हैं,
क्या मैं ऐसा याहवे हूँ जो दूर रहता हूँ। 24 यह
भी कि क्या कोई ऐसा जगह छिप सकता है,
जहाँ मेरी आँखे नहीं जाती हैं ? क्या आकाश
(स्वर्ग) और पृथ्वी मुझ से भरपूर नहीं हैं?
25 झूठ- मूठ जो भविष्यद्वक्ता होने का दावा
करते हैं, उन पर मेरी नज़र है। 26 जो नबी
ऐसा करते हैं, वे कब तक ऐसा करते रहेंगे?
27 जिस तरह मेरी प्रजा के लोगों के पूर्वज
मेरा नाम भूलकर बाल का नाम लेने लगे
थे, वैसे ही अब ये भविष्यद्वक्ता उन्हे अपने
स्वप्न बतलाकर मेरा नाम भुलाना चाहते हैं।
28 यदि किसी भविष्यद्वक्ता ने स्वप्न देखा
है, तो वह बताए। जिसने मेरा वचन सुना
हो, वह वचन बताए। याहवे पूछते हैं कि
भूसा और गेहूँ कहाँ है? 29 वह यह भी कहते
हैं, "क्या मेरी बातें आग के समान नहीं ?
ऐसा हथौड़ा नहीं जो पत्थर तोड़ डालता हो?
30 याहवे कहते है, "जो भविष्यद्वक्ता दूसरों
से चुरा -चुराकर मेरा वचन बोलते हैं, मैं उनके
विरोध में हूँ। 31 जो लोग झूठ-मूठ मेरे नाम से
नबूवत करते हैं, मैं उनके खिलाफ़ भी हूँ।
32 जो मेरे बिना कहे, संदेश देते या स्वप्न
देखने के झूठे दावे करते हैं, मैं उनके पक्ष
में नहीं हूँ, क्योंकि वे झूठे घमण्ड में मेरी
प्रजा को बहकाते हैं। 33 यदि आम आदमी
में से कोई व्यक्ति या भविष्यद्वक्ता या याजक
तुम से पूछे, याहवे ने क्या ज़ोरदार बात कही
है ? तो उससे कहना, "ऐसी क्या ज़ोरदार
बात ? याहवे कहते हैं, मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।
34 और जो भविष्यद्वक्ता या याजक या आम
आदमी याहवे का कहा भारी वचन, 'ऐसा
कहना जारी रखें, उसे और उसके घराने को
मैं सज़ा दूँगा। 35 तुम लोग एक दूसरे से और
अपने भाई से सवाल करना, "याहवे का
जवाब क्या था ?' या याहवे ने क्या कहा
है ?" 36 याहवे की कही ज़ोरदार बात, इस
तरह तुम भविष्य में मत कहना, नहीं तो
तुम्हारा ऐसा कहना ही सज़ा का कारण होगा।
क्योंकि हमारे स्वर्गिक पिता ओर जीवित
याहवे के वचन को तुमने बिगाड़ डाला है।
37 भविष्यद्वक्ता से पूछो,"याहवे ने तुम्हे क्या
जवाब दिया ?" 38 या याहवे ने क्या कहा
है ? यदि तुम 'याहवे का कहा गया ज़ोरदार
वचन' इस तरह की बातें करोगे, तो उनकी
बातें सुनो, मैंने तुम्हारे पास कहला भेजा है,
भविष्य में ऐसा मत कहना, "याहवे का कहा

हुआ ज़ोरदार वचन।” 39 इस कारण देखो, मैं
तुम्हें पूरी तरह से भुला दूँगा और तुम्हें तथा
इस नगर को जिसे मैंने तुम्हारे पुरखाओं को
दिया है, छोड़कर अपने सामने से दूर कर
दूँगा। 40 तुम्हारी बदनामी और बेइज़्ज़ती सदा
तक बनी रहेगी।

24 जब बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर
याहोयाकीम के बेटे यहूदा के राजा
यकोन्याह को, और यहूदा के हाकिमों और
लोहारों और दूसरे कारीगरों को पकड़कर
यरूशलेम से बाबेल ले गया, तो याहवे ने
उसके बाद मुझको अपने मन्दिर के सामने
रखे हुए अंजीरों के दो टोकरे दिखाए। 2 पहले
टोकरे में पके हुए अच्छे अंजीर थे। दूसरे
टोकरे में खराब वाले । ये इतने खराब थे, कि
खाने लायक नहीं थे। 3 फिर याहवे ने सवाल
किया, “हे यिर्मियाह तुम क्या देख रहे हो ?
मैने कहा,“ अच्छे और खराब अंजीर। अच्छे
वाले बहुत अच्छे हैं और खराब वाले बहुत
खराब, जिन्हे खाना सम्भव नहीं 4 तब याहवे
का संदेश मुझे मिला, वह यह था, 5 “इस्राएल
का स्वामी यह कहता है, जैसे अच्छे अंजीरों
को, वैसे ही मैं यहूदी बन्दियों को जिन्हें मैंने
इस स्थान से कसदियों के देश में भेज दिया
है देखकर खुश होऊँगा। 6 मैं उन पर दया
दृष्टि रखूँगा और उन्हें देश वापस ले आऊँगा।
उन्हें बर्बाद करने के बजाए, बनाऊँगा उन्हें
उखाड़ूँगा नहीं, लगाए रखूँगा। 7 उनके मनों
को मैं ऐसा कर दूँगा कि वे मुझे जान लेंगे
कि मैं याहवे हूँ वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं
उनका मालिक, क्योंकि वे पूरे मन से मेरी
ओर मुड़ेगे। 8 “लेकिन जैसे निकम्मे अंजीर,
निकम्मे होने के कारण खाए नहीं जाते, उसी
तरह मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह और
उसके गवर्नरों और बचे हुए यरूशलेमियो
को, जो इस देश में और मिस्र में रह गए है,
छोड़ दूँगा। 9 इसलिए वे पृथ्वी के राज्य-राज्य
में मारे-मारे दुख सहते हुए घूमते रहेंगे। मैं
जिन स्थानों में उन्हें जबरदस्ती निकाल दूँगा,
उन सभी जगह वे दृश्टान्त और स्राप का
विषय होंगे। 10 मैं उनमें तलवार चलाऊँगा
और महँगाई तथा मरी फैलाऊँगा। अन्त में
इस देश में से, जिसे मैंने उनके पूर्वजों को
और उनको दिया। वे मिट जाएँगे।

25 योशिय्याह के बेटे यहूदा के राजा
यहोयाकीम के राज्य के चौथे साल
में जो बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के
राज्य का पहला साल था, याहवे का संदेश
यर्मियाह नबी के पास आया। 2 यहूदियों और
यरूशलेम के सभी रहनेवालों को यर्मियाह ने
बताया, जो यह है, 3 “आमोन के बेटे यहूदा
के राजा योशिय्याह के राजा योशिय्याह के
राज्य के तेरहवें वर्ष से लेकर आज के दिन
तक अर्थात तेरहवें साल से आज याहवे
का संदेश मेरे पास भेजा जाता रहा है।
मैं बड़ी कोशिश से वह सब तुम्हें बताता
आया हूँ, लेकिन तुमने नहीं सुना। 4 हालांकि
याहवे तुम्हारे पास अपने सभी दासों अथवा
भविष्यद्वक्ताओं को भी यह कहने के लिए
भेजते आए हैं कि, 5 कि अपने बुरे चाल
चलन और कामों का त्याग कर डालो ?
तब उनके द्वारा दिए गए देश में तुम बसने
पाओगे। लेकिन मेरी बात पर तुमने ध्यान
न दिया। 6 दूसरे देवी -देवताओं के पीछे
जाकर उनकी पूजा मत करो और अपने हाथ
से बनाई वस्तुओं की उपासना करके मुझ
चिढ़ मत दिलाओ। तब मैं तुम्हारा नुकसान
न करूँगा। 7 यह सुनकर तुमने अनसुनी की,
इसलिए तुम्हारा नुकसान हो सकता है।
8 इसलिए सेनाओं के याहवे कहते हैं, तुमने
मेरी बात न मानी। 9 इसलिए मैं उत्तर के
कुलों को बुलवाऊँगा मैं अपने दास बाबेल

के राजा नबूकदेनेस्सर को बुलवाऊँगा। उन
सभों को इस देश और इसके निवासियों
के विरूद्ध और इसके आसपास के सभी
देशों के खिलाफ़ भी ले आऊँगा। इन देशों
को ऐसा बर्बाद करूँगा, कि लोग देखकर
ताली बजाएँगे। 10 इनमें खुशी का नामोनिशां
न होगा। यहाँ दुल्हे-दुल्हिन की और चक्की
की आवाज़ न आएगी। यहाँ दीपक भी न
जलेगा। 11 यह देश उजाड़ ही उजाड़ होगा। ये
सभी लोग सत्तर साल तक बाबेल के राजा के
अधिकार में होंगे। 12 सत्तर साल समाप्त होने
के बाद मैं बाबेल के राजा और उसके लोगों
और कसदियों के देश के सभी रहनेवालों
को उनकी बुराई की सज़ा दूँगा। सदा के
लिए वह देश उजड़ा पड़ा रहेगा। 13 मैं अपने
उन शब्दों को पूरा करूँगा, जो मैंने उनके
बारे में कहे हैं और जितनी बातें यर्मियाह ने
सारे देशों के विरोध में कहीं हैं। 14 क्योंकि
बहुत से देश के लोग और बड़े-बड़े राजा भी
उनसे अपनी सेवा कराएँगे। मैं उनके किए
हुए का फल दूँगा। 15 इस्राएल के याहवे ने
मुझ से यों कहा, "मेरे हाथ में से इस क्रोध
के दाखमधु का कटोरा लेकर उन सब लोगों
को पिला दो, जिनके पास मैं तुम्हें भेज रहा
हूँ। 16 वे उसे पीकर, उस तलवार के कारण,
जो मैं उनके बीच में चलाऊँगा लड़खड़ाएँगे
और बावले हो जाएँगे। 17 इसलिए मैंने याहवे
के हाथ से वह कटोरा लेकर उन सब देशों
को जिनके पास याहवे ने मुझे भेजा, पिला
दिया। 18 अर्थात यरूशलेम और यहूदा के
नगरों के निवासियों को, और उनके राजाओं
और गवर्नरों को पिलाया, ताकि उनका देश
उजाड़ हो जाए और लोग ताली बजाएँ और
उसकी उपमा देकर शाप दिया करें, जैसा
आजकल होता है। 19 मिस्र के राजा, फिरौन
और उसके कम्रचारियों, हाकिमो और सारी
प्रजा को 20 सब विदेशी मनुष्यों को और ऊज
देश के सभी राजाओं को और पलिश्तियों के
देश के सब राजाओं को, और पलिश्तियों के
देश के सभी राजाओं को और अश्कलोन
अज्जा और एक्रोन के और अशदोद के बचे
लोगों को। 21 और एदोनियों, मोआबिया,
अम्मोनियों और सभी राजाओं को 22 और
सीदोन के सभी राजाओं और समुद्र पार के
देशों के राजाओं को 23 ददानियों, तेमाईयों
और बूजियों को और जितने अपने गाल
के बालों को मुढ़ा डालते हैं, उन सभी को
भी जो अपने बालों को मुढ़ा लेते हैं, उन
सब को, 24 और अरब के सब राजाओं को
और जंगल में रहनेवाले अन्यजातियों के
सब राजाओं को 25 और जिम्री, एलाम और
मादै के सब राजाओं को 26 और क्या पास
क्या दूर के उत्तर दिशा के सब राजाओं को
एक संग पिलाया, इस तरह दुनिया में रहने
वाले सभी लोगों को मैंने पिलाया इन सब
के बाद शेषक के राजा को भी पीना पड़ेगा।
27 तब तुम उनसे कहना,"सेनाओं के याहवे
जो इस्राएल के रचयिता है, कहते हैं, पीओ,
और मतवाल जाओ और फिर उल्टी कर दो।
गिर पड़ो, फिर कभी उठो नहीं, क्योंकि यह
उस तलवार के कारण होगा। जो मैं तुम्हारे
बीच चलाऊँगा। 28 "यदि वे तुम्हारे हाथ से
यह कटोरा लेकर पीते हैं मना करें, तो उनसे
कहना, "सेनाओं के याहवे कहते हैं कि तुम्हें
इसे ज़रूर पीना पड़ेगा। 29 देखो, जो नगर
मेरा कहलाता है, पहले मैं उसी पर मुसीबत
डालने पर हूँ। फिर तुम लोग क्या निर्दोष ठहर
के बच पाओगे ? क्योंकि मैं पृथ्वी के सभी
रहनेवालों को हताहत करूँगा। 30 उनसे यह
भी कहना,"याहवे ऊपर से गरजेंगे और अपने
पवित्र निवास स्थान में से शब्द सुनाएँगे। वह
अपनी चराई के स्थान के विरूद्ध जोर से

बोलेंगे। वह इस दुनिया के सारे निवासियों
के खिलाफ़ भी अंगूर की बेल लताड़नेवालों
के समान ललकारेंगे। 31 पृथ्वी की छोर तक
शोर -शराबा होगा, क्योंकि सभी देशों के
लोगों से याहवे का मुकद्दमा है। सभी लोगों से
वह तर्क (वादविवाद) करेंगे। वह बुरे लोगों
को तलवार के आधीन कर देंगे। 32 सेनाओं
के याहवे कहते हैं: देखो एक देश से दूसरे देश
तक मुसीबत फैलेली। एक बड़ी आँधी पृथ्वी
की एक छोर से उठेगी। 33 उस समय, जिन्हें
याहवे ने मारा होगा, उनकी लाशें दुनिया के
एक छोर से दूसरे छोर तक पड़ी दिखेंगी।
उनके लिए कोई दुख मनाने वाला न होगा।
उनकी लाशें न तो काई इकट्ठा करेगा न ही
कब्र में डालेगा। 34 हे चरवाहो, चिल्ला कर
रोओ। ताकतवर मेंढ़ो और बकरो, राख में
लोटो, क्योंकि तुम्हारे मारे जाने का समय
आ गया है। मैं खूबसूरत बर्तन की तरह
तुम्हें नाश करूँगा। 35 उस समय चरवाहे भाग
न सकेंगे, न ही बलवन्त मेढ़े और बकरे
भाग सकेंगे। 36 चरवाहों की चिल्लाहट और
ताकतवर मेढ़ों और बकरों के मिमयाने की
आवाज़ आ रही है। याहवे उनके चरागाहों
को समाप्त करने वाले हैं। 37 याहवे के गुस्से
के भड़क जाने के कारण शान्ति की जगहें
बर्बाद हो जाएँगी या जिन घरों में अभी शान्ति
है, वे नष्ट हो जाएँगे। 38 अपनी मांद से जंगली
शेर निकलता है, क्योंकि अन्धेर करनेवाली
तलवार और उसके भड़के गुस्से के कारण
उनका देश उजाड़ हो चुका है।

26 योशिय्याह के बेटे यहूदा के राजा
यहोयाकीम के राज्य के शुरू में
याहवे की ओर से यह संदेश मिला; 2 याहवे
यों कहते हैं : याहवे के भवन के आँगन
में खड़ा होकर, यहूदा के सभी नगरों के
सामने जो याहवे के भवन में सिज़दा करने
को आए; ये बातें जिनके बारे में उनसे कहने
की आज्ञा मैं तुम्हें दे रहा हूँ, बिना कम किए
हुए कह दो। 3 हो सकता है कि सुनकर वे
अपनी अनैतिक जीवनशैली को छोड़ दें और
मैं उनका नुकसान न करूँ, जो उनके बुरे
कामों के कारण मैंने सोचा। 4 इसलिए तुम उन
से कहना,‘‘याहवे यो कहते हैंःयदि तुम मेरी
सुनकर वैसा ही न करो। 5 और न मेरे सेवक
भविष्यद्वक्ताओं की बातों पर कान लगाओ।
6 तो मैं इस इमारत को शीलो की तरह उजाड़
डालूँगा, और इस नगर की ऐसी बर्बादी होगी,
कि दुनिया के सभी देश उसका उदाहरण
देकर कोसा करेंगे। 7 जब यर्मियाह यह सब
कह ही रहा था तब पुरोहित, भविष्यद्वक्ता
और साधारण लोग सुन रहे थे। 8 सुनने के
बाद, सबने उसे पकड़ कर कहा, तुम्हें सज़ा
ज़रूर मिलेगी। 9 तुमने याहवे की ओर से
यह भविष्यद्वाणी क्यों की, कि शीलो की
तरह यह भवन उजाड़ हो जाएगा? 10 यहूदा
के गवर्नर ये बातें सुनकर राजा के भवन से
याहवे के भवन में चढ़ आए और उसके नए
फाटक पर बैठ गए। 11 तब पुरोहितों और
भविष्यद्वक्ताओं ने गवर्नरों और वहाँ इकट्ठे
लोगों से कहा, ‘‘ इसे फाँसी की सज़ा मिलनी
चाहिए। 12 तब यर्मियाह ने जवाब में गवर्नरों
और इकट्ठे लोगों से कहा, ‘‘मैंने जो कहा,
वह सब याहवे ने मुझे कहने के लिए कहा
था। 13 इसलिए अपना चालचलन और काम
ठीक करो और याहवे की बात मानो, तब प्रभु
उन मुसीबतों को तुम पर न भेजेंगे। 14 देखो,
तुम्हें मुझ पर अधिकार है, जो तुम्हें सही
लगता है, वही करो। 15 लेकिन यह समझ
लो, यदि तुम मेरी जान लेते हो तो खुद, इस
शहर को और इसमें रहने वालों को निर्दोष
के हत्यारे बना दोगे, क्योंकि, याहवे ही ने
मुझे संदेश देने के लिए भेजा है।” 16 तब

गवर्नर, पुरोहित और आम लोग कहने लगे,
“इस इन्सान को मौत की सज़ा नहीं मिलनी
चाहिए, क्योंकि इसने याहवे का समाचार हमें
दिया है।” 17 तब वहाँ के बुज़ुर्गों ने सभा से
कहा; 18 “यहूदा के राजा हिजिकिय्याह के
दिनों में मोरसेती मीकायाह ने भविष्यद्वाणी
की थी, कि सिय्योन जोता जाएगा और खेत
बन जाएगा। यरूशलेम खण्डहर हो जाएगा
और भवन वाला पहाड़ जंगली स्थान बनेगा।
19 क्या यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने या
किसी यहूदी ने उसकी जान ले ली ? क्या
उस राजा ने याहवे का डर न माना और उससे
प्रार्थना न की ? तब याहवे ने जो मुसीबत
उन पर डालने के लिए कहा था, अपना मन
नहीं बदला था क्या? 20 फिर शमायाह का
बेटा ऊरिय्याह नामक किर्यत्यारीम का एक
निवासी जो याहवे की ओर से संदेश लाया
करता था ? उसने भी यर्मियाह की तरह
इस देश के खिलाफ़ नबूवत की थी। 21 जब
यहोयाकीम राजा और उसके सब बहादुरों
और सभी गवर्नरों ने उसकी बात सुनी; तब
राजा ने उसे मरवा डालने की कोशिश की
और ऊरिय्याह यह सुनकर डर के मारे मिस्र
भाग गया। 22 तब यहोयाकीम राजा ने मिस्र
में अकबोर के बेटे एलनातान और कुछ और
लोगों को भेजा। 23 वे ऊरिय्याह को मिस्र
से निकालकर यहोयाकीम राजा के पास ले
आए। उसने उसे तलवार से मरवाकर लाश
को साधारण लोगों की कब्र में फिकवाया।
24 परन्तु शापान के बेटे अहीकाम का हाथ
यिर्मयाह पर था,इस कारण वध किए जाने के
लिए उसे लोगों के हाथ में नहीं सौंपा गया।

27 योशिय्याह के पुत्र, यहूदा के
राजा सिदकिय्याह के शासन की
शुरुआत में यर्मियाह को याहवे ने यह
समाचार भेजा, 2 खुद के लिए बन्धन और
जूआ बनाओ और अपनी गर्दन पर रखो.
3 तब उन दूतों के द्वारा जो यरूशलेम से
यहूदा के राजा सिदकिय्याह के पास आए
हैं, एदोम के राजा, मोआब के राजा और
अम्मोनवंशियों के राजा और सूर व सीदोन
के राजाओं को समाचार भेजो। 4 उन्हें आदेश
दो कि वे अपने अपने मालिक लोगों के
पास जाकर यह कहें, “सेनाओं के याहवे
इस्राएल के परमेश्वर कहते हैं, “तुम अपने
मालिकों से जाकर कहो। 5 कि दुनिया और
दुनिया में रहनेवाले लोग तथा जानवरों को
मैंने अपनी बड़ी ताकत और बढ़ाई हुई बाँह
से बनाया है। मैं जिसे चाहूँ इसको दे दूँगा।
6 मैं यह पूरा देश अपने सेवक बाबेल के
राजा नबूकदनेस्सर को दे चुका हूँ। जंगल के
जानवर भी। 7 ये सभी देश उसके और उसके
बेटों तथा पोतों के अधीन तब तक रहेंगे, जब
तक देश पूरी तरह से नष्ट न हो जाए। तब
बहुत से देश और ताकतवर राजा उसे अपना
गुलाम बनाएँगे। 8 जो देश व राज्य बाबेल के
राजा नबूकदनेस्सर के अधीन न होंगे और
बाबेल के राज्य के जुए को अपनी गर्दन पर
नहीं लेंगे, उनको मैं तलवार, अकाल और
मरी से तब तक सज़ा दूँगा, जब तक वे नष्ट
न हो जाएँ। 9 लेकिन तुम अपने उन नबियों,
शकुन निकालने वालों, स्वप्न देखने वालों,
ओझाओं और तांत्रिकों की मत सुनना, जो
तुम से कहते हैं, “तुम बाबेल के राजा की
गुलामी में जाओगे।” 10 “क्योंकि वे तुम से
झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं, ताकि तुम अपने
देश से दूर चले जाओ। 11 लेकिन जो लोग
अपनी गर्दन बाबेल के राजा के जूए के नीचे
डालकर उसके अधीन रहेंगे, उन्हें मैं उसके
देश में रहने दूँगा। उसके लोग उसमें खेती
करके बसे रहेंगे। 12 यही बातें मैंने यहूदा के
राजा सिदकिय्याह से कह दी; अर्थात यह

कि बाबेल के राजा के जूए के नीचे अपनी
गर्दन लाओ और उसके लोगों के अधीन
होकर ज़िन्दा रहो। 13 तुम और तुम्हारी प्रजा
के लोग तलवार, अकाल और मरी से क्यों
जान गँवाओ ? जैसा कि याहवे ने बाबेल के
राजा के अधीन न हो जाने वाली प्रजा के
बारे में कहा है। 14 इसलिए तुम उन नबियों
की मत सुनो जो तुम से कहते है कि तुम्हें
बाबेल के राजा के अधीन नहीं जीना पड़ेगा।
वे तुम्हे गुमराह कर रहे हैं। 15 याहवे का संदेश
है : मैने उन्हें नहीं भेजा है, लेकिन फिर भी
वे मेरे नाम से झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं,
ताकि मैं तुम्हें देश से बाहर निकाल दूँ और
तुम अपने भविष्यद्वक्ताओं के साथ बर्बाद हो
जाओ। 16 तब मैंने पुरोहितों और सब लोगों
से कहा, "याहवे कहते हैं, जो भविष्यद्वक्ता
तुमसे कहते हैं, कि प्रभु के भवन के बर्तन
जल्दी ही बाबुल से लौटा दिए जाएँगे, उनकी
बातों पर कान मत लगाओ अन्त हो जाएगा
कि देखो, याहवे के भवन के बर्तन जल्दी
ही बाबेल से लौटाकर लाए जाएँगे, क्योंकि
वे मनगढ़त बातें करते हैं। 17 उनकी बातों
पर कान मत लगाओ। बाबेल के राजा के
अधिकार को स्वीकार करो और जीओ।
इस शहर की हालात बुरी क्यों होने पाए ?
18 लेकिन यदि वे नबी हैं और याहवे की
कही बातें उन्हें मालूम हैं, तो वे अब सेनाओं
के याहवे के सामने दोहाई दें, कि जो बर्तन
याहवे के घर में, यहूदा के राजा के महल
और यरूशलेम में शेष हैं, वे बाबेल न ले
जाए जाएँ। 19 सेनाओं के याहवे उन खम्भों,
हौद, कुर्सियों तथा बाकी चीज़ों के बारे में यह
कहते हैं जो इस शहर में बाकी रह गया है।
20 और जिन्हें बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर
उस समय नहीं ले गया, जब वह यहोयाकीम
के बेटे यहूदा के राजा याकुन्याह और यहूदा
और यरूशलेम के सब रईसों को यरूशलेम
से कैद करके ले गया था। 21 हाँ, सेनाओं के
याहवे इस्राएल के परमेश्वर उन बर्तनों के
बारे में कहते हैं, जो याहवे भवन यहूदा के
राजा के महलों और यरूशलेम में बाकी रह
गए हैं। 22 वे बाबेल ले जाए जाएँगे और जब
तक मैं उनकी सुधि न लूँ, वहीं रखे रहेंगे।
इसके बाद मैं उन्हें वापस ले आऊँगा।

28 यहूदा के राजा सिदकिय्याह के
शासन की शुरूआत में चौथे साल
के पांचवे महीने में अज्जूर के बेटे गिबोन के
हनन्याह नबी ने याहवे के भवन में पुरोहितों
और सभी लोगों की मौजूदगी में मुझ से कहा,
2 सेनाओं के याहवे इस्राएल के स्वामी कहते
हैं, मैंने बाबेल के राजा का बोझ हटा दिया
है। 3 याहवे के भवन के उन सभी बर्तनों
को जिन्हें बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर
इस जगह से बाबेल को ले जा चुका है,
दो साल के भीतर ही मैं उन्हें फिर से इसी
स्थान में लौटा ले आऊँगा। 4 मैं यहूदा के
राजा यहोयाकीम के बेटे यकोन्याह समेत
यहूदा के सभी कैदियों को भी जो बाबेल लौट
गए हैं; लौटाकर इसी स्थान में ले आऊँगा,
क्योंकि मैं बाबेल के राजा के जूए को तोड़
डालूँगा। 5 तब यर्मियाह नबी पुरोहितों तथा
उन सब लोगों की उपिस्थीति में जो याहवे
के भवन में खड़े थे, हनन्याह नबी से बोल
उठा। 6 आमीन! प्रभु ऐसा ही करें; जो बातें
तुमने भविष्यद्वाणी करके कहीं हैं कि प्रभु
के घर के बर्तन और सभी बंधुए बाबुल
से इस जगह में फिर से आएँगे, उन्हें प्रभु
पूरा करें। 7 फिर भी मेरी बात सुनो, जो मैं
तुम्हें और सब लोगों को सुनाने जा रहा हूँ।
8 जो भविष्यद्वक्ता पुराने समयों से मेरे और
तुम्हारे पहले होते आए थे, उन्होंने तो बहुत
से देशों और बड़े- बड़े राज्यों के खिलाफ़

लड़ाईऔर मुसीबत और मरी के बारे बताया
था। 9 लेकिन जो भविष्यद्वक्ता भलाई की
बातें कहे और उसकी कही बात पूरी हो
जाए, तब ही यह बात साफ हो जाएगी, कि
उसे प्रभु ने भेजा है। 10 तब हनन्याह नबी ने
उस जुए को जो यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता की
गर्दन पर था, उतारकर तोड़ दिया। 11 और
हनन्याह ने सब लोगों के सामने कहा, प्रभु
कहते हैं कि इसी तरह से मैं पूरे दो साल
के अन्दर बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के
जूए को सभी देशों की गर्दन पर से उतारकर
तोड़ दूँगा। इसके बाद यिर्मयाह चला गया।
12 जब हनन्याह भविष्यद्वक्ता ने यिर्मयाह
नबी की गर्दन पर से जूआ उतारकर तोड़
दिया, उसके बाद याहवे की बात यिर्मयाह के
पास पहुँची: 13 जाओ और हनन्याह से कहो,
कि प्रभु का कहना है कि तुमने लकड़ी के जूए
को तोड़ डाला है। ऐसा करके तुमने उसकी
जगह लोहे का जूआ बना लिया है। 14 क्योंकि
इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के प्रभु कहते
हैं कि मैं कि मैं सभी देशों की गर्दन पर लोहे
का जूआ रखता हूँ और वे बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर के वश में रहेंगे और इनको
उसके वश में रहना पड़ेगा, क्योंकि मैदान के
जानवर भी मैं उसके आधीन करने जा रहा
हूँ। 15 और यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से
यह भी कहा, हे हनन्याह, देखो, मैंने तुम्हें
नहीं भेजा, तुमने इन लोगों को झूठी उम्मीद
दी है। 16 इसलिए प्रभु तुम से कहते हैं, कि
देखो तुमको इस दुनिया से उठा लूँगा, इसी
साल में तुम्हारा देहान्त हो जाएगा, क्योंकि
तुमने प्रभु से दूर हो जाने की बात कही हैं।
17 इस वचन के अनुसार हनन्याह उसी साल
के सातवें महीने में चल बसा।

29 उसी वर्ष यिर्मयाह नबी ने इस
इरादे का खत, उन पुरनियों और
भविष्यद्वक्ताओं और आम लोगों के पास
भेजा जो गुलामों में से बचे थे, जिनको
नबूकदनेस्सर यरुशलेम से बाबुल को ले
गया था। 2 यह पत्र उस समय भेजा गया, जब
यकोन्याह राजा और राजमाता,खोजे, यहूदा
और यरूशलेम के गवर्नर, लोहार और दूसरे
कारीगर यरुशलेम से चले गए थे। 3 यह पत्र
शापान के बेटे एलासा और हिल्कियाह के
बेटे गमर्याह के हाथ भेजा गया, जिन्हें यहूदा
के राजा सिदकिय्याह ने बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर के पास बाबुल को भेजा।
4 उस में लिखा था कि जितने लोगों को मैंने
यरुशलेम से गुलाम बनाकर बाबुल में पहुँचा
दिया है, उन सभी से इस्राएल के परमेश्वर
कहते हैं: 5 घर बनाओ और वहाँ रहने लगो ,
बगीचे बनाकर उनके फल खाओ। 6 शादियाँ
करके बेटे- बेटियाँ पैदा करो, अपने बेटों के
लिए पत्नियाँ ब्याह लो और अपनी बेटियों
का विवाह करो , ताकि वे भी बच्चे पैदा
कर सकें और तुम गिनती में बढ़ सको। 7 और
जिस नगर में मैंने तुम्हें कैदी बनाकर भेजा है,
उसकी कुशलता की कोशिश करो और प्रभु
से उसके लिए बिनती करो, क्योंकि उसकी
कुशलता में तुम्हारी कुशलता है। 8 सेनाओं
के प्रभु इस्राएल के परमेश्वर कहते हैं कि
तुम्हारे बीच जो नबी और भावी कहनेवाले
तुम्हारे बीच में हैं, वे तुमको बहका न सकें।
जो सपने वे तुम्हारे बारे में देखते हैं, उन पर
ध्यान दो, 9 क्योंकि वे मेरे नाम से तुम को
झूठी भविष्यवाणी सुनाते हैं; मैंने उन्हें भेजा
ही नहीं , यह मैं कह रहा हूँ। 10 प्रभु यह कहते
हैं कि बाबुल के सत्तर साल पूरे होने पर मैं
तुम्हारे पर ध्यान करूँगा, और अपना यह
मनभावना वचन कि मैं तुम्हें इस जगह में
लौटा ले आऊँगा, पूरा करूँगा। 11 क्योंकि
प्रभु कहते हैं, कि जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे

बारे में करता हूँ, उन्हें मैं जानता हूँ। 12 तब
उस समय तुम मुझ से प्रार्थना करोगे और मैं
तुम्हारी सुन लूँगा। 13 तुम मुझे ढूंढोगे और पा
लोगे; क्योंकि तुम अपने पूरे मन से मेरे पास
आओगे। 14 मैं तुम्हें मिलूँगा, प्रभु यह कहते
हैं, और गुलामी से लौटा लाऊँगा; और तुम
सभी को उन देशों और और स्थानों में से जिन
में मैंने तुम को ज़बरदस्ती निकाल दिया है,
और तुम्हें इकट्ठा करके इस जगह में लौटा
ले आऊँगा जहाँ से मैंने तुम्हें गुलाम करवाके
निकाल दिया था, प्रभु की यह वाणी है।
15 तुम कहते हो कि प्रभु ने हमारे लिए बाबुल
में भविष्यद्वक्ता प्रगट किए हैं। 16 लेकिन जो
राजा दाऊद की गद्दी पर बैठा हुआ है,और
जो प्रजा इस नगर में रहती है, अर्थात तुम्हारे
जो भाई तुम्हारे साथ गुलामी में नहीं गए, उन
सभी के बारे में सेनाओं के प्रभु यह कहते
हैं, 17 सुनो, मैं उनके बीच तलवार चलाऊँगा,
मंहगाई बढ़ाऊँगा, और मरी फैलाऊँगा; और
उन्हें ऐसे घिनौने अंजीरों की तरह कर दूँगा,
जो बेकार होने के कारण खाए नही जा
सकते। 18 मैं तलवार, महंगाई और मरी लिए
हुए उनका पीछा करूँगा, और ऐसा करूँगा
कि वे पृथ्वी के राज्य- राज्य में मारे- मारे
फिरेंगे, और उन सभी देशों में जिन के बीच में
उन्हें देखकर चकित होंगे और ताली बजाएँगे
और उनकी बेइज़्ज़ती करेंगे, और उनका
उदाहरण देकर शाप दिया करेंगे। 19 क्योंकि
जो संदेश मैंने अपने दास नबियों के द्वारा
उनके पास बड़ी कोशिश करके कहला भेजे
हैं, उनको उन्होंने नहीं सुना, यह प्रभु कहते
हैं। 20 इसलिए, हे सारे कैदियों, जिन्हें मैंने
यरुशलेम से बाबुल को भेजा है, तुम उसका
यह वचन सुनो: 21 कोलायाह का बेटा अहाब
और मासेयाह का बेटा सिदकिय्याह जो मेरे
नाम से तुम को झूठी भविष्यवाणी सुनाते हैं,
उनके बारे में इस्राएल के परमेश्वर सेनाओं
के याहवे कहते हैं कि सुनो, मैं उनको
बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के सुपुर्द में
कर दूँगा, और वह उनको तुम्हारे सामने
मार डालेगा। 22 और सभी यहूदी बंधुए जो
बाबुल में रहते हैं, उनकी उपमा देकर यह
शाप दिया करेंगे: याहवे तुम्हें सिदकिय्याह
और अहाब की तरह करे, जिन्हें बाबुल
के राजा ने आग में भून डाला, 23 क्योंकि
उन्होंने इस्राएलियों में बेवकूफी के काम
किए, अर्थात अपने पड़ोसियों की महिलाओं
के साथ यौन सम्बन्ध किया, और बिना मेरे
आदेश पाए मेरे नाम से झूठे वचन कहे। यह
बात जानने वाला और गवाह मैं ही हूँ, यह
प्रभु कहते हैं। 24 और यह नेहेलामी शमायाह
से तुम यह कहो कि, इस्राएल के परमेश्वर
याहवे ने यों कहा है, 25 इसलिए कि तुमने
यरूशलेम के सभी रहनेवालों और सभी
पुरोहितों को और यासेयाह के बेटे सपन्याह
पुरोहित को अपने ही नाम कि इस आशय
की चिट्ठी भेजी, 26 कि याहवे ने यहोयादा
पुरोहित की जगह पर तुम्हें पुरोहित ठहरा
दिया ताकि तुम प्रभु के भवन में रखवाले
होकर जितने वहाँ पागलपन करते हैं और
नबी बन बैठे हैं, उन्हें लकड़ी में ठोंके और
गले में लोहे के पट्टे डाले, 27 इसलिए यिर्मयाह
अनातोती जो तुम्हरा भविष्यद्वक्ता बन बैठा
है, उसे तुमने क्यों नहीं डाँटा? 28 क्योंकि
उसने बेबिलोन में हम से यह कहला भेजा
कि गुलामी समय लम्बा होगा, इसलिए घर
बसाकर उनमें बस जाओ। बगीचे लगाओ
और उनके फल खाओ। 29 तब सपन्याह
पुरोहित ने यह चिट्ठी यिर्मयाह नबी को
पढ़ कर सुनाई। 30 तब प्रभु का यह संदेश
यिर्मयाह को मिला, 31 सभी कैदियों को यह
खबर दो कि नेहेलामी शमायाह और उसके

वंशजों को सज़ा देने जा रहा हूँ, 32 इस प्रजा
के बीच इसका कोई भी जन ज़िन्दा न रहेगा,
और वह उस भलाई को जो मैं अपनी प्रजा
के साथ करने पर हूँ, न देख सकेगा; क्योंकि
उसने प्रभु के खिलाफ़ बलवे की बातें कही
हैं। प्रभु याहवे का यही संदेश है।

30 प्रभु का जो संदेश यिर्मयाह को
मिला वह यह है: 2 "इस्राएल के
परमेश्वर यह कहते हैं कि जो बातें मैने
तुम से कही हैं, उन सभी को किताब में
लिख डालना, 3 क्योंकि देखो ऐसे दिन आने
वाले हैं, जब मैं अपनी प्रजा इस्राएल और
यहूदा को गुलामी से लौटा लाऊँगा। 4 जो
वचन प्रभु ने इस्राएलियों और यहूदियों के
बारे में कहे थे, वे यह हैं: 5 प्रभु कहते हैं:
थरथरा देनेवाला शब्द सुनाई दे रहा है। यह
शब्द शान्ति का नहीं, डर ही का है। 6 यदि
पूछें तो ठीक है, और देखो, क्या आदमी
को कभी जनने का दर्द होता है? फिर सभी
के चेहरे फीके क्यों पड़ चुके हैं? 7 हाय,
हाय, वह दिन क्या ही भारी होगा! उसकी
तरह और कोई दिन नहीं; वह याकूब की
मुसीबत का समय होगा, लेकिन वह उस
से भी छूट जाएगा। 8 प्रभु का कहना है, उस
दिन मैं उसका रखा हुआ बोझ तुम्हारी गर्दन
से तोड़ डालूँगा और तुम्हारे बन्धनों को
टुकड़े- टुकड़े कर डालूँगा। परदेशी फिर से
उनसे अपनी सेवा न कराने पाएँगे। 9 लेकिन
वे अपने परमेश्वर याहवे और अपने राजा
दाऊद की सेवा करेंगे जिसको मैं उन पर
राज्य करने के लिए ठहराऊँगा। 10 इसलिए
हे मेरे दास याकूब तुम्हारे लिए प्रभु की यह
वाणी है, डरो मत; हे इस्राएल,घबराओ नहीं;
क्योंकि मैं दूर देश से तुम्हें और तुम्हरे वंश
को गुलामी के देश से छुड़ा ले आऊँगा। तब
याकूब लौटकर चैन और सुख से रहेगा,और
कोई उसको डराने न पाएगा। 11 क्योंकि
प्रभु का कहना यह है, तुम्हे मुक्ति देने
के लिए मैं तुम्हारे साथ हूँ; इसलिए मैं उन
सब देशों को समाप्त कर डालूँगा, जिन में
मैंने उन्हें तितर- बितर कर दिया है,लेकिन
तुम्हारा अन्त न करूँगा। मैं सोच समझ कर
तुम्हें अनुशासित करूँगा। मैं तुम्हें किसी
तरह से निर्दोष न ठहराऊँगा। 12 प्रभु कहते
हैं: तुम्हारे दुख की कोई दवाई नहीं है,
और तुम्हारी चोट गहरी और दुखदायक है।
13 तुम्हारा मुकद्दमा लड़ने के लिए कोई नहीं
है। तुम्हारा घाव बान्धने के लिए मलहम-
पट्टी नहीं है। 14 तुम्हारे दोस्त तुम्हें भूल चुके
हैं। उन्हें तुम्हारा ख्याल नहीं है; क्योंकि
तुम्हारे बड़े अधर्म और भारी अपराधों की
वजह से मैंने दुश्मन बनकर तुम्हें मारा है;
मैंने निर्दयी बनकर तुम्हें मारा है। 15 अपने
ज़ख्म के कारण तुम क्यों चिल्लाती हो?
तुम्हारे दर्द की कोई दवा नहीं है। तुम्हारी
बड़ी बुराईयों और वज़नदार गुनाहों के कारण
मेरा ऐसा बर्ताव रहा है। 16 लेकिन जितने
तुम्हें अब खा लेते हैं, वे आप ही खा लिए
जाएँगे, तुम्हरे दुश्मन गुलामी में ले जाए
जाएँगे। तुम्हें लूटने वाले खुद ही लूटे जाएँगे।
जितने तुम्हारी दौलत छीनते हैं,उनकी दौलत
मैं छिनवाऊँगा। 17 मैं तुम्हारा इलाज करके
तुम्हारे ज़ख्मों को ठीक करुँगा, यह याहवे
कह रहे हैं; क्योंकि तुम्हारा नाम ठुकराई
हुआ पड़ा है: वह तो सिय्योन है, उसकी
चिन्ता कौन करता है? 18 प्रभु का कहना है:
मैं याकूब के तम्बू को बंधुआई से लौटाता
हूँ और उसके घरों पर दया करूँगा; और
नगर अपने ही खण्डहर पर ही फिर से
बसेगा, और राजभवन पहले अनुसार फिर
बन जाएगा। 19 तब उनमें से धन्य कहने और
खुशी मनाने की आवाज़ आएगी। 20 मैं उनका

यश बढ़ाऊँगा, और वे संख्या में कम न होंगे। उनके बाल-बच्चे पुराने समय की तरह होंगे। उनकी मण्डली मेरे सामने बनी रहेगी। जितने उन पर अन्धेर करते हैं, उनको मैं सज़ा दूँगा। 21 उनका महापुरुष उन्हीं में से होगा, और जो उन पर प्रभुता करेगा, वह उन्हीं में से पैदा होगा; मैं उसे अपने पास बुलाऊँगा और वह मेरे पास आ भी जाएगा, क्योंकि कौन है जो अपने आप मेरे पास आ सकता है? 22 उस वक्त तुम मेरे लोग ठहरोगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा। 23 देखो, याहवे की जलजलाहट की आँधी चल आ रही है! वह तेज आँधी है: दुष्टों के सिर पर वह तेज़ी से लगेगी। 24 जब तक प्रभु अपन कम पूरा न कर ले और अपनी युक्तियों को पूरी न कर चुके, तब तक उनका भड़का हुआ गुस्सा शान्त न होगा। आखिर के दिनों में तुम इस बात को समझ सकोगे।

31 याहवे कहते हैं, "उस वक्त मैं इस्राएल के सभी कुलों का याहवे होऊँगा।और वे मेरे लोग होवेंगे। 2 याहवे यह भी कहते हैं,"जो लोग मारे जाने से बच गए थे, उन पर कृपा हुई थी। अर्थात इस्राएल जब आराम पाने निकला, 3 याहवे ने यह कहते हुए उसे दूर से दर्शन दिया, कि मैंने तुम्हे सदा के प्रेम से प्रेम किया है। मैं करूणा करके तुम्हें अपने पास ले आया हूँ। 4 हे इस्राएल की कुंवारी, मैं फिर से तुम्हें बसाऊँगा। और तुम्हारा निर्माण फिर से होगा। तुम सुन्दर बनकर खुशी मनाने वालों के साथ डफ बजाते नाचते हुए निकलोगी। 5 तुम एक बार फिर सामरिया के पहाड़ पर अंगूर का बगीचा लगाओगी। उसे लगाने वाले उसके फल का मज़ा उठाएँगे। 6 ऐसा समय आएगा जबकि एप्रैम के पहाड़ों के पहरेदार पुकारेंगे,'उठो, हम अपने याहवे के पास सिय्योन जाएँगे।' 7 याहवे कहते हैं:याकूब के लिए खुशी मनाओ। खास-खास देशों के बीच ललकारो और ऊँची आवाज से बड़ाई करके कहो, "हे याहवे अपनी प्रजा के बचे लोगों को आज़ादी दें। 8 देखो, मैं उन्हें उत्तरी हिस्से से लाऊँगा। दुनिया के कोने-कोने से मैं उन्हें लाऊँगा। उनमें अन्धे, लँगड़े, गर्भवती तथा जच्चा महिलाएँ भी एक साथ होंगी। उनका एक बड़ा दल यहाँ आएगा। 9 वे लोग रोते हुए यहाँ आएँगे और उनके गिड़गिड़ाने के कारण मैं उनका मार्गदर्शन करूँगा। उन लोगों को मैं नदियों के किनारे- किनारे ऐसे रास्ते से ले आऊँगा जिसमें वे ठोकर न खाएँगे, क्योंकि मैं इस्राएल का पिता हूँ और एप्रैम मेरा पहलौठा है। 10 हे देश-देश के लोगो याहवे की बात सुनो और दूर -दूर के तटवर्ती स्थानों में एलान करके कहो, जिसने इस्राएल को इधर -उधर कर दिया है, वही उन्हें इकट्ठा भी करेंगे। जैसे चरवाहा अपने झुण्ड की देखभाल करता है, वैसे ही वह करेंगे। 11 क्योंकि याहवे ने याकूब के लिए फिरौती दी है और उसको उसके वश से आज़ाद किया है जो उस से ज़्यादा ताकतवर था। 12 इसलिए वे सिय्योन की चोटी पर आकर खुशी के नारे मारेंगे और याहवे से अन्न, दाखमधु, तेल, भेड़ बकरियों और गाय-बैल के बच्चे आदि बढ़िया बढ़िया दान पाकर खुश होंगे और उनकी जान सींचे हुए बगीचे की तरह होगी। उस समय से उनके दुख के दिन समाप्त हो जाएँगे। 13 तब कुंवारियाँ खुशी से नाचेंगी और जवान व बूढ़े एक साथ मिलकर खुश होंगे, क्योंकि उनके रोने को मैं खुशी में बदल डालूँगा। मैं उन्हें शान्ति दूँगा और दुख के बदले सुख। 14 मैं पुरोहितों को अच्छे खाने की चीज़े दूँगा और मेरी प्रजा मेरी उदारता का आनन्द उठाएगी। 15 याहवे

का कहना है,“रामा में एक चीत्कार, रोना और बड़ा दुख, राहेल अपनी सन्तान के लिए रोती रहती है ,क्योंकि उसके सन्तान है ही नहीं ।” 16 याहवे कहते हैं, “रोने- धोने को रोको, क्योंकि मैं तुम्हारी मेहनत का प्रतिफल तुम्हें देने वाला हूँ, वे दुश्मनों के देश से वापस आएँगे। 17 भविष्य में तुम्हारा अच्छा होगा, तुम्हारे वंश के लोग अपने देश में लौट आएँगे। 18 निश्चय, मैंने एप्रैम को दुखी होते यह कहते सुना है,“आपने मुझे डाँटा - डपटा है। आपकी ताड़ना एक ऐसे बछड़े की तरह रही है, जिसे कभी जुताई में इस्तेमाल न किया गया। मुझे वापस ले आईए आप मेरे याहवे और स्वामी हैं। 19 रास्ते से बहक जाने के बाद मैं मानसिक रीति से पीड़ित हुआ और सिखाए जाने के बाद मुझे आत्मग्लानि हुई, क्योंकि मैं अपनी जवानी की बदनामी सह रहा था। 20 क्या एप्रैम मेरा प्यारा बेटा नहीं है? क्या उसको मैं बहुत चाहता नहीं था। हालांकि उसके खिलाफ़ मैंने बहुत बार बहुत कुछ कहा, फिर भी मैं उसे याद करता रहा। इसलिए उसके लिए मेरा मन भर आता है। मैं उस पर दया करूँगा। 21 रास्ता दिखाने वाले निशान अपने लिए लगाओ। जिस राजमार्ग से होकर तुम गई थी, उस पर मन लगाओ वापस आ जाओ। इस्राएल की कुंवारी। अपने रहने के स्थान पर आ जाओ। 22 हे धोखेबाज बेटी, तुम कब तक इधर उधर भटकोगी? क्योंकि प्रभु की एक नई सृष्टि पृथ्वी पर प्रगट होगी, अर्थात नारी पुरुष की देखरेख करेगी। 23 याहवे का वचन है, “जब मैं उन्हें गुलामी से निकालकर ले आऊँगा, तब वे अपने देश यहूदा और उसके नगरों में कहा करेंगे, हे सच्चाई और न्याय के निवास स्थान, हे पवित्र पहाड़, याहवे तुम्हें अपनी भलाई चखाएँ। 24 यहूदा तथा उसके नगरों के लोग, किसान और चरवाहे जो अपने झुण्ड की देखभाल करने यहाँ-वहाँ जाते हैं, सभी एक साथ उसमें बसेंगे। 25 क्योंकि थक जाने वाले को मैं, आराम दूँगा और सभी शोकित को सुख।।” 26 इस बात से मैं जाग गया, हालांकि मेरी नींद मीठी थी। 27 याहवे कहते हैं,“ ऐसा समय आएगा, जब मैं इस्राएल और यहूदा के घराने के बच्चों और जानवरों की गिनती बढ़ाऊँगा। 28 उस समय ऐसा होगा कि जिन लोगों को मैं बर्बाद करने की सोचता रहा था, उन्हें बनाने और संभालने पर मन लगाऊँगा।” 29 याहवे कहते हैं, उन दिनों में वे फिर यह नहीं कहेंगे कि पूर्वजों ने तो जंगली अंगूर के बगीचे में से खाया, लेकिन उनके वशंजो के दाँत खट्टे हो गए। 30 परन्तु हर एक अपने अनुचित काम के कारण नाश होगा; खट्टे अंगूर खाने वाले के ही दाँत खट्टे होंगे। 31 देखो, ऐसा समय आएगा, “जब मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने से एक नया सम्बन्ध बनाऊँगा; 32 उस वाचा की तरह नही, जिसे मैंने उनके पूर्वजों से उस समय बाँधा था, जब मैं उन्हें गुलामी से निकाल कर लाया था। हालांकि मैं उनके लिए पति के समान था, फिर भी उन्होंने मेरे साथ अपने सम्बन्ध को तोड़ लिया था। 33 लेकिन जो वाचा में उन दिनों के बाद इस्राएल से बान्धूँगा वह यह है : मैं अपने नियम- आज्ञाओं को उनके मनों में डालूँगा और लिखूँगा। मैं उनका याहवे और वे मेरे लोग ठहरेंगे।” 34 तब उन्हें अपने -अपने पड़ोसी और अपने अपने भाई को फिर यह न सिखाना पड़ेगा कि याहवे को जाना जाए, क्योंकि मैं उनके अनुचित कामों को माफ करूँगा और फिर उन्हें याद न करूँगा।” 35 जिस ने दिन को रोशनी देने के लिए सूरज और रात को रोशनी देने के लिए चाँद और

तारे बनाए जो समुन्दर को उछालते और
उसकी लहरों को गरजाते हैंऔर जिनका नाम
सेनाओं का याहवे है। 36 यदि ये नियम मेरे
सामने से हट जाएँ, तभी इस्राएल के वंशज
भी मेरी निगाह में हमेशा के लिए एक देश
होने से मिट जाएँगे। 37 याहवे कहते हैं,“यदि
आकाश को नापा जा सके और पृथ्वी की
नींव की खोज की जा सके, तो मैं भी इस्राएल
के सारे वंशज को जो कुछ उन्होंने किया है,
उसके कारण बाहर निकाल दूँगा।” 38 देखा,
ऐसा समय आनेवाला, जब यह नगर हननेल
की गुम्मट से लेकर कोने के फाटक तक
याहवे के लिए फिर से बनाया जाएगा। 39 तब
नापने वाली डोरी गारेब की पहाड़ी तक सीधे
जाकर वहाँ से गोआ की ओर मुड़ जाएगी।
40 और लाशों तथा राख की पूरी घाटी और
किद्रोन के नाले तक की सारी ज़मीन जो पूरब
की ओर घोड़ा फाटक के सिरे तक फैली है,
याहवे की कहलाएगी। हमेशा तक वह नगर
फिर न कभी गिराया जाएगा, न ढाया जाएगा।

32 यहूदा के राजा सिदकिय्याह के
राज्य शासन के दसवें साल में जो
नबूकदनेस्सर के शासन का अठारहवां साल
था, याहवे की ओर से यर्मियाह के पास
यह समाचार आया। 2 उस समय बाबेल के
राजा की फौज यरूशलेम की नाकेबन्दी कर
चुकी थी। यर्मियाह यहूदा के राजा के भवन
में पहरे के आंगन में बन्दी था। 3 यहूदा
के राजा सिदकिय्याह का कहना था, कि
तुम इस तरह की नबूवत क्यों करते हो
कि इस नगर को याहवे बाबेल के राजा
नबूकदनेस्सर के सुपुर्द कर देंगे। 4 यह भी
कि यहूदा का राजा सिदकिय्याह कसदियों
के हाथ से बचेगा ही नहीं। दोनों का सामना
होगा ही। 5 उसे बाबेल ले जाया जाएगा, वह
वहीं रहेगा। यदि वे कसदियों से युद्ध भी
लड़ें, जीतेगा नहीं। 6 यर्मियाह बोला,“याहवे
का यह संदेश मुझे मिला था। 7 देखो तुम्हारे
चाचा सल्लम का बेटा हनमेल तुम्हारे पास
यह कहने आ रहा है कि, “मेरा खेत जो
अनातोत में है उसे तुम अपने लिए खरीद
लो, क्योंकि उसे मोल लेकर छुड़ाने का हक
तुम ही को है। 8 तब याहवे के वचन के
अनुसार मेरा चचेरा भाई हनमेल, पहरे के
आंगन में मेरे पास आकर कहने लागा, “मेरा
खेत बिन्यामीन के इलाके में अनातोत में
है। मेहरबानी से उसे खरीद लीजिए। उसे
ले लेने का और छुड़ाने का अधिकार आप
ही का है। 9 तब मैंने उस खेत को अपने
चचेरे भाई से खरीद लिया। मैंने उसे चांदी
के सत्रह शेकेल तौल कर दे दिए। 10 इसके
बाद मैंने बेनामे पर दस्तखत किए और मोहर
लगा दी। मैंने गवाहों को बुलवाकर चाँदी
तौल कर दे दी। 11 तब मैंने खरीददारी के
दस्तावेज़ को अर्थात मुहर लगा दस्तावेज़
जिस में मुहर लगी थी और दूसरा जिसमें
नहीं लगी थी शर्तों का बयान था और खुला
बैनामा दोनों को ले लिया। 12 उन्हें लेकर
अपने चचेरे भाई हनमेल के और उन गवाहों
के सामने जिन्होंने दस्तावेज़ में दस्तखत किए
थे, और उन सब यहुदियों के सामनेभी जो
पहरे के आँगन में बैठे थे, नेरिय्याह के बेटे
बारुक को जो महसेयाह का पोता था ,
सौंप दिया।। 13 उनके सामने मैंने यह कह
कर बाराक को आदेश दिया। 14 इस्राएल के
याहवे यह कहते हैं, इन मोहर लगे खरीददारी
के दस्तावेज़ तथा खुले दस्तावेज़, दोनों को
लेकर मिट्टी के बर्तन में डाल देते उसमें ये
बने रहेंगे। 15 इस्राएल के याहवे कहते हैं,
“मकान, खेत और अंगूर के बगीचे फिर से
उस देश में खरीदे जाएँगे। 16 नेरिय्याह के
बेटे बारूक को खरीददारी के बैनामों को

देने के बाद मैंने याहवे से प्रार्थना की। 17 “हे
प्रभु देखिए, आपने आकाश और पृथ्वी को
अपनी बड़ी ताकत और बढ़ाई हुई बाँह से
बनाया है। आपके लिए कुछ भी मुश्किल
नहीं है। 18 आप हज़ारों पर कृपा करते हैं,
लेकिन पूर्वजों के अनैतिक-अनुचित कामों
का बदला उनके सन्तानों को सहने देते हैं।
महान और शक्तिशाली याहवे, आप फौजों
के स्वामी हैं। 19 आप योजना बनाने में महान
और काम करने में ताकतवर हैं। इन्सान के
चरित्र पर आपकी आँखे लगी रहती है और
उनके चाल चलनऔर कामों के मुताबिक
आप व्यवहार करते हैं। 20 मिस्र में आपने
तमान निशान और अजीब काम दिखाए।
आज भी आप इस्त्रालियों और सभी लोगों
के सामने ऐसा करते हैं। इसलिए आपका
नाम आप तक मशहूर है। 21 आप अपनी
प्रजा इस्राएल को चिन्हों और चमत्कारों तथा
अपने बलवान हाथों और बड़े कामों के द्वारा
मिस्र देश से छुड़ा लाए हैं। 22 आपने उन्हें
यह देश दिया है जिसे देने के लिए आपने
उनके पूर्वजों से वायदा किया था। वह देश
सारी बहुतायत से भरपूर था। 23 उन लोगों
ने आकर इस देश पर कब्ज़ा किया, लेकिन
उन्होंने न आपकी बात मानी न आपके नियम
-आज्ञाओं की चिन्ता की । इसलिए आपने
उनके ऊपर इन मुसीबतों को आने दिया।
24 देखो, ये दमदमे नगर को काबू करने के
लिए तैयार ही हैं। तलवार, अकाल तथा
मरी के कारण यह नगर हमलावर कसदियों
के सुपुर्द कर दिया गया है। आप देख ही
रहे हैं कि जैसा आपने कहा था, वैसा हो
ही गया है। 25 हे प्रभु आपने मुझ से कहा
है कि यह नगर कसदियों के अधिकार में
आ चुका है, फिर भी उस खेत को गवाहों
के सामने खरीद लो। 26 तब याहवे का यह
संदेश यर्मियाह को मिला। 27 देखो, मैं सभी
जीवों का रचयिता हूँ, मेरे लिए क्या कुछ
मुश्किल है ? 28 इसलिए याहवे कहते हैं,
“देखो, मैं इस नगर को कसदियों अर्थात
बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ करने
के लिए तैयार हूँ और वह इसे ले भी लेगा।
29 कसदी जो इस नगर के खिलाफ़ युद्ध कर
रहे हैं। इस नगर में आएँगे। वे उन घरों सहित
जिनकी छतों पर लोगों ने बाआल के लिए
धूप जलाया और मुझे गुस्सा दिलाने के लिए
अन्य देवताओं को अर्घ उंडेला है, इस नगर
में आग लगाकर भस्म कर डालेंगा। 30 सच
में, इस्राएल और यहूदा के वंशज अपनी
जवानी से केवल अनैतिक और अनुचित
काम करते है। अपने हाथ से बनाई मूरतों
के कारण इस्राएली मुझे क्रोध दिलाते रहे हैं।
31 “सचमुच, यह नगर जब से बसा है, तब से
आज तक मेरे गुस्से और प्रक्रोप को भड़काने
का कारण ही बना है, इसलिए यह मेरे सामने
से हटा दिया जाएगा। 32 यह इस्राएलियों
और यहूदियों के उन बुरे कामों के कारण
होगा, जिन्हें उन सभी ने अपने राजाओ,
अधिकारियों, पुरोहितों, नबियों और यहूदा
के लोगों तथा यरूशलेम के निवासियों समेत
मेरे क्रोध को भड़काने के लिए किए ं।
33 मेरी ओर उन्होंने अपना मुँह नहीं पीठ
फेरी है। हालांकि मैं उन्हें सिखाता रहा हूँ,
लेकिन उन्होंने एक न सुनी और शिक्षा को
तुच्छ जाना। 34 लेकिन उन्होंने अपनी घिनौनी
वस्तुएँ उस भवन में जो मेरे नाम का कहलाता
हैं, स्थापित करके उसे अशुद्ध किया। 35 उन
लोगों ने बेन - हिन्नोम की तराई में बाअल
के लिए ऊँचे स्थान बनाए और अपने बेटे
बेटियों को मोलेक के लिए होम किया। उनसे
मैंने ऐसा करने को कभी नहीं कहा था, फिर
भी घिनौने काम करके फँस गए। 36 इसलिए

अब इस नगर के बारे में जिसके लिए तुम
कहते हो कि यह तो तलवार, अकाल और
मरी के कारण बेबिलोन के राजा के सुपुर्द
कर दिया है, इस्राएल के याहवे कहते हैं,
37 देखो, मैं उनको सब देशों से जिनमें मैंने
गुस्से में आकर उन्हें भगा दिया था। इकट्ठा
करके इस जगह लौटा लाऊँगा और सुरक्षित
बसाऊँगा। 38 और वे मरे लोग होंगे और
मैं उनका याहवे ठहरूँगां 39 और मैं उनको
एक ही मन और एक ही रास्ता दूँगा कि वे
सदा मुझसे डरें, जिससे उनका और उनकी
आनेवाली पीढ़ियों का भला हो। 40 मैं उनके
साथ अनन्तकाल की वाचा बान्धूँगा उनकी
भलाई करने से मुँह न मोड़ूँगा। मैं अपना डर
उनके अन्दर डालूँगा, जिससे वे वे मुझ से
न मुड़े। 41 मैं खुशी से उनकी भलाई करूँगा
और अपने सारे मन व जान से इस देश में
स्थायी रीति से बसा दूँगा। 42 याहवे कहते हैं
कि जैसे मैंने इस प्रजा पर ये मुसीबतें डाली है,
वैसे ही भलाई की बौछार का वायदा करता
हूँ। 43 जिस देश के उजाड़े जाने और इन्सान
- जानवर रहित होने की बात की जा रही
है और जो कसदियों के कब्जे़ में है उसी
में लोग खेत खरीदेंगे। 44 बिन्यामीन के देश
में, यरूशलेम के आस-पास यहूदा के नगरों
में अर्थात पहाड़ी, तराई, और दक्षिण देश
के नगरों में लोग मूल्य देकर खेत खरीदेंगे।
बैनामों पर हस्ताक्षर करके मुहर करेंगे और
गवाह ठहराएँगे। क्योंकि मैं उनके दिनों को
लौटा दूँगा, यह याहवे का कहना है।

33 तब याहवे का संदेश दूसरी बार
यिर्मयाह के पास आया। उस समय
वह आँगन में कैदी था; 2 याहवे जिन्होंने
पृथ्वी का निर्माण किया, हैं। याहवे जिन्होंने
उसे स्थिर करने के लिए एक शक्ल दी -
उनका नाम प्रभु है। वह कहते हैः 3 मुझ से
मांगो, और मैं तुम्हारी ओर कान लगाऊँगा।
मैं तुम्हें बड़ी और कठिन बातें बताऊँगा,
जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं है, 4 इस नगर के घर
और यहूदा के राजाओं के भवन जो दमदमों
और तलवारों के विरूद्ध रक्षा के लिए गिरा
दिए गए हैं, उनके सम्बन्ध में इस्त्राएल के
प्रभु कहते हैं। 5 जबकि वे कसदियों से युद्ध
करने आ रहे हैं, कि वे उन जगहों को उन
लोगों की लाशों से भर दे, जिन्हें मैंने अपने
गुस्से में मार डाला है और मैंने इस नगर से
इसकी सारी बुराई के कारण अपना चेहरा
छिपा लिया है। 6 देखो, मैं इस नगर को ठीक
कर दूँगा । मैं उन पर सच्चाई और शान्ति को
असीमित मात्रा में उण्डेलूँगां। 7 मैं इस्राएल
और यहूदा के गुलामों को वापस लाऊँगा
और फिर से उनके स्थान पर रखूँगा। 8 मैं
उन्हें उन अनुचित कामों से शुध्द करूँगा जो
उन्होंने मेरे विरूद्ध किए है। उन्हें मैं माफ
भी करूँगा। 9 मेरे लिए यह जगह उन सभी
देशों के सामने खुशी, बड़ाई और प्रशंसा का
कारण ठहरेगा जो उन सब भलाईयों की चर्चा
सुनेगा जो मैं उनके लिए करता आया हूँ। वे
देश सारी भलाई और शान्ति के कामों के
बारे में सुनेंगे और काँपेगे। 10 याहवे कहते
हैं, "तुम कहते हो कि स्थान उजड़ चुका
है। यहाँ यरूशलेम की गलियों में न जानवर
न इन्सान रहते हैं। 11 हर्ष और उल्लास की
आवाज, दुल्हे-दुल्हिन की आवाज और उन
लोगों की आवाज़ सुनाई देगी, जो कहते
हैं, "सेनाओं के याहवे का धन्यवाद करो,
क्योंकि वह भले हैं और उनकी कृपा सदा
तक ठहरने वाली है। 12 सेनाओं के प्रभु
कहते हैं, "यह स्थान उजड़ चुका है। इसमें
न ही मनुष्य है, न जानवर। इसके सभी
नगरों में फिर चरवाहों की चरागाहें होंगी,
जो अपनी भेड़ों को उसमें बैठाया करेंगे।

13 पहाड़ी पर बसे नगरों में घाटी के नगरों में,
दक्षिण के नगरों में, बिन्यामीन के देश में और
यरूशलेम के आसपास तथा यहूदा के नगरों
में फिर से भेड़-बकरियों गिनती करनेवाले के
हाथों द्वारा गिनकर ही गुज़रा करेंगे, 14 याहवे
कहते हैं, "देखा, ऐसा समय आएगा, जब मैं
इस्राएल और यहूदा के घरानों के बारे में दिए
गए भलाई के वचन को पूरा करूँगा। 15 तभी
मैं दाऊदवंशी एक धर्मी डाली को फूटने दूँगा।
वह इस दुनिया में न्याय और धार्मिकता के
काम करेगा। 16 उन दिनों यहूदा का उध्दार
होगा और यरूशलेम सुरक्षित बसी रहेगी।
वह प्रभु हमारी धार्मिकता के नाम से पहचानी
जाएगी। 17 प्रभु कहते है, दाऊद के कुल में
इस्राएल की राजगद्दी पर बैठानेवाले सदैव
बने रहेंगे। 18 लेवीय, याजकों में से मेरे लिए
हर दिन होमबलि, अन्नबलि और मेलबलि
चढ़ानेवाल सदा-सदा तक बने रहेंगे। 19 फिर
याहवे का यह संदेश यिर्मयाह के पास आया।
20 याहवे कहते हैं, "यदि मेरी वाचा जो मैंने
दिन और रात के बारे में कही है, तोड़ सको
कि दिन और रात अपने समय - से न हों,
21 तभी मेरी वह वाचा जो मैंने अपने दास
दाऊद के साथ बांधी थी, टूट सकेगी और
उसकी राजगद्दी पर बैठने के लिए उसका
कोई बेटा न होगा। मेरी वाचा तम्बू (भवन)
की सेवा करने वाले लेवीय याजकों के साथ
भी न बंधी रह सकेगी। 22 जिस तरह न तो
आकाश के तारों को कोई गिन सकता है औ
न समुद्र की बालू को कोई गिन सकता है,
उसी तरह मैं अपने दास दाऊद और सेवक के
वशंजो को बेगिनती कर डालूँगा। 23 तब प्रभु
ने यर्मियाह से कहा, 24 "क्यों तुमने इनकी
बातों को सुना, कि ये कह रहे हैं, "प्रभु ने
अपने चुने हुए कुलों को छोड़ दिया हे। ऐसा
कहकर वे मेरे लोगों को नीचा समझ रहे
हैं। 25 याहवे का कहना है,"यदि दिन-रात के
बारें में मेरी वाचा बनी न रहे और आकाश
पृथ्वी के बारे में बना नियम मेरे ठहराए हुए
न रह जाएँ। 26 तब ही मैं याकूब और अपने
दास दाऊद के वंश को त्याग दूँगा। और
उसके किसी वंशज को अब्राहम, इसहाक
और याकूब के वंशजों पर शासन करने के
लिए अलग नहीं करूँगा। लेकिन मैं उन्हें
गुलामी से छुड़ा लाऊँगा और दया करूँगा।

34 जब बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर
और उसकी पूरी फौज, उन सभी
लोगों और दुनिया के सभी राज्यों (देशों)
समेत जो उसके कब्जे में थे, यरूशलेम और
उसके सब नगरों के खिलाफ़ जंग कर रहे थे,
तब प्रभु का यह संदेश यर्मियाह को मिला।
2 "इस्राएल के याहवे कहते हैं,"यहूदा के
राजा सिदकिय्याह से कहो, कि याहवे का
कहना है, "मैं इस नगर को बाबेल के राजा
के अधिकार में कर दूँगा और वह इसे आग
से जला डालेगा। 3 लेकिन तुम उससे बच
न सकोंगे। तुम पकड़े जाकर उसके हाथ में
दे दिए जाओगे। तुम बाबेल के राजा को
देखोगे और तुम से बातचीत करेगा और फिर
उसके देश को जाओगे। 4 फिर भी हे यहूदा
के राजा सिदकिय्याह याहवे की बातों पर
ध्यान दो। उनका कहना है कि तुम तलवार
से न मरोगे। 5 तुम शान्ति के साथ मरोगे और
जैसे तुम्हारे पूर्वजों के लिए अर्थात जो तुम
से पहले राजा हो चुके हैं उनके लिए लोग
खुशबूदार चीजें जलाते थे, वैसे ही वे तुम्हारे
लिए भी जलाएँगे और हाय मेरे याहवे कहकर
रोएँगे। यह मैं नहीं याहवे कहते है। 6 तब
यिर्मयाह नबी ने यरूशलेम में यहूदा के राजा
सिदकिय्याह से ये सब कहा, 7 जब बाबेल
के राजा की सेना यरूशलेम और यहूदा के
बाकी बचे हुए नगरों लाकीश और अजेका से

लड़ रही थी क्योंकि यहूदा के नगरों में किले
बन्दी नगर केवल ये ही रह गए थे। 8 याहवे
का संदेश यिर्मयाह के पास उस समय आया
जब सिदकिय्याह यरूशलेम में उन सब लोगों
से यह वाचा बान्ध चुका था कि दासों के
आज़ाद किए जाने का एलान किया जाए।
9 कि हर एक अपने दास और अपनी दासी
को अर्थात इब्रानी पुरूष और महिला को
आज़ाद कर दे और उन्हें गुलाम की तरह
अपने पास न रखे। 10 तब सभी अधिकारियों
और सारी प्रजा ने जिन्होंने यह वाचा बान्धी
थी कि उनमें से हर एक अपने दास और
अपनी दासी को आज़ाद कर देगा, ऐसा ही
किया कि आने वाले समयों में कोई भी उन्हें
गुलामी में न रखे। उन्होंने वाचा का पालन
करके उन्हें आज़ाद कर दिया । 11 लेकिन
कुछ समय बाद वे मुकर गए और उन दास-
दासियों को जिन्हें उन्होंने आज़ाद कर दिया
था, वापिस ले आए और फिर से उन्हें गुलाम
बना लिया। 12 तब प्रभु की ओर से यिर्मयाह
को संदेश मिला: 13 "इस्राएल के परमेश्वर
कहते हैं, उस दिन जब मैं तुम्हारे पूर्वजों को
मिस्र देश से निकाल लाया था, उस समय
उन से यह वचा बान्धी थी कि, 14 सातवें
साल के अन्त में तुममें से हर एक अपने
इब्री भाई को जो तुम्हारे हाथ में बेचा गया
है और जिसने तुम्हारी सेवा छः साल तक
की है, उसे तुम अपने पास से आज़ाद करके
जाने देना, लेकिन तुम्हारे पूर्वजों ने नही मेरी
बातों को माना। 15 हालाँकि तुम हाल ही में
फिरे थे और जो तुम्हें करना चाहिए था, तुमने
किया था अर्थात अपने पड़ोसी को गुलामी से
आज़ाद करने का प्रचार किया था और तुमने
मेरे नाम के भवन के सामने वाचा बान्धी थी,
16 फिर भी तुमने मुँह मोड़ लिया और मेरे नाम
को बदनाम किया और हर एक मनुष्य अपने
दास और दासी को लौटा लाया जिन्हें तुमने
उनकी इच्छा के अनुसार आज़ाद कर दिया
था, तुमने उनको अपने अधीन करके अपने
दास और दासी बना लिया है। 17 इस कारण
याहवे कहते हैं: तुममें से हर एक ने अपने भाई
और अपने पड़ोसी के स्वतन्त्र किए जाने
का एलान करने के बारे में मेरे आदेश को
पूरा नहीं किया है, सुनो,प्रभु का कहना है, मैं
तुम्हारे लिए ऐसी आज़ादी का एलान करता
हूँ कि तुम तलवार, मरी और आकाल के हाथ
में पड़ो और मैं तुम्हें दुनिया के राज्यों के लिए
डर का कारण बनाऊँगा। 18 मैं उन लोगों को
जिन्होंने मेरी वाचा को तोड़ा है और उसका
पालन नहीं किया है जिसे उन्होंने बछड़े को
दो हिस्सों में काटकर और उन हिस्सों के
बीच से गुज़र कर मुझ से बाँधी थी- 19 अर्थात
यहूदा के अधिकारी, खोजे, पुरोहित और देश
के उन सभी लोगों को जो बछड़े के दोनों
हिस्सों में से होकर गुज़रे थे, 20 उनके दुश्मनों
के हाथों में अर्थात जो उनके प्राण के खोजी
हैं उन सभी को उनके हाथों में कर दूँगा और
उनकी लाशें आकाश के पक्षियों और मैदान
के जानवरों का खाना बन जाएँगे। 21 मैं यहूदा
के राजा सिदकिय्याह और अधिकारियों को
उनके प्राण के खोजियों के अर्थात बेबिलोन
के राजा की फौज के हाथों में कर दूँगा, जो
तुम्हारे पास से चली गई है। 22 याहवे का
वचन है, देखो, मैं उन्हें इस नगर में लौटा ले
आऊँगा। वे इस नगर के खिलाफ़ लड़ेंगे, इसे
जीत लेंगे और जलाकर फूँक डालेंगे, और मैं
यहूदा के नगरों को ऐसा उजाड़ डालूँगा कि
इस में कोई बसने न पाएगा।

35 योशिय्याह के बेटे, यहूदा के राजा
यहोयाकीम के राज्य के दिनों में जो
संदेश प्रभु की ओर से यिर्मियाह को मिला,
वह यह है, 2 रेकाबियों के घराने के पास

जाकर उन्हें याहवे के घर के एक हिस्से
लाकर शराब पिलाओ। 3 तब मैं यर्मियाह के
बेटे अर्थात हबस्सिन्याह के पोते याजन्याह
को और उसके भाईयों तथा सभी बेटों और
रेकाबियों के सारे घराने को साथ लेकर,
4 उनको याहवे के भवन में, यिग्दल्याह के
बेटे हानान नामक, परमेश्वर के एक जन के
कक्ष में ले आया। यह कक्ष अधिकारियों के
कक्ष के पास था और डेवढ़ी के रखवाले
शल्लूम के बेटे मासेयाह की कोठरी के ऊपर
थी। 5 तब मैंने रेकाबियों के घराने के लोगों
को शराब से भरी सुराहियां और कटोरे देकर
उनसे कहा, "लो पिओ शराब" 6 लेकिन वे
बोले, नहीं, हम नहीं पिएँगे, क्योंकि रेकाब
के बेटे योनादाब ने जो हमारा पूर्वज था, हमें
आदेश दिया था, कि हम ओर हमारी सन्तान
शराब को हाथ भी न लगाएँ। 7 तुम अपने
लिए घर मत बनाना, बीज न बोना, अंगूर
का बगीचा मत लगाना और न उनके मालिक
बनना। लेकिन जीवन भर तम्बुओं में रहना,
ताकि उस देश में जहाँ परदेशी की तरह रहते
हो, बहुत समय तक रह सको। 8 हमने रेकाब
के बेटे अपने पूर्वज योनादाब की उन सभी
बातों को माना है, जिसके उसने आदेश दिया
था। वह आदेश यह था कि हम और हमारा
परिवार शराब न पिए। 9 न ही हमने अपने
लिए घर बनाया, अंगूर के बगीचे । न ही
खेत में बीज बोए। 10 हमारे पूर्वज योनादाब
के आदेश के अनुसार हम करते आए है।
11 जब बाबेल के बादशाह नबूकदनेस्सर ने
इस देश पर हमला बोला था, तब हमने कहा
था, "आओ कसदियों और अरामियों की
फौज से भागकर यरूशलेम चले, इस तरह
हम यरूशलेम में बस गए। 12 तब याहवे का
यह संदेश यर्मियाह को मिला : 13 सेनाओं
के और इस्राएल के प्रभु कहते है, "जाकर
यहूदा और यरूशलेम के लोगों से कहो, मेरी
बातों को सुनने के बावजूद तुम मनमानी
करोगे ? 14 रेकाब के बेटे योनादाब ने जो
आदेश अपने वंश को दिया था कि शराब न
पी जाए, उसे तो आज तक माना जाता है।
लेकिन मैं दोहरात रहा और तुम्हारे कान में
जूं तक नहीं रेंगी। 15 इसके अलावा मैं तुम्हारे
पास भविष्यद्वक्ताओं को भेजता रहा कि तुम्हें
गलत रास्ते में चलने से रोंके और देवताओं
को न पूजें, ताकि उस देश में बहुत समय
तक रहने पाएँ, लेकिन तुमने एक न सुनी ।
16 देखो, रेकाब के बेटे योनादाब के वंश को
जो जो आज्ञा उनके पुरखों ने दी थी उसका
उन्होंने पालन किया, लेकिन इन लोगों ने मेरी
बात मानी ही नहीं। 17 इसलिए सेनाओं के
प्रभु कहते हैं: देखो, मैं यहूदा और यरूशलेम
के सभी रहनेवालों पर ऐसी मुसीबतें डालने
पर हूँ जिनके बारे में पहले ही से मैंने बताया
था और पुकारा था, लेकिन इनकी ओर से
जवाब न मिला। 18 तब रेकाबियों के घराने
से यिर्मयाह ने कहा, "सेनाओं के याहवे यों
कहते हैं : क्योंकि तुमने अपने पूर्वज योनादाब
की सभी आज्ञाओं का माना है। 19 इसलिए
सेनाओं के प्रभु यह कहते है कि रेकाब के
बेटे योनादाब के वंश में हमेशा मेरे सामने
खड़े रहने के लिए किसी इन्सान की कमी
न होगी।

36 फिर हुआ ऐसा कि योशिय्याह के
बेटे यहूदा के राजा यहोयाकीम के
राज्य के चौथे साल में प्रभु की ओर से
यिर्मयाह के पास यह संदेश आया। 2 एक
किताब लेकर उस पर उन बातों को लिखो,
जिनको मैंने तुम से इस्राएल, यहूदा और सभी
देशों के बारे में जिस दिन मैंने पहले तुम
से बातें की, योशिय्याह के समय से लेकर
आज के दिन तक , उन सभी को लिख

लो। 3 कदाचित यहूदा का घराना उन सब
मुसीबतों के बारे में सुनकर जो मैंने उन पर
डालने के लिए सोची थीं कि हर इन्सान
अपनी बुराई को छोड़े । 4 तब यिर्मयाह ने
नेरिय्याह के बेटे बारूक को बुलाया, और
बारूक ने प्रभु की उन सब बातों को यिर्मयाह
के मुँह से सुनकर एक किताब में लिख दिया।
5 तब यिर्मयाह ने बारूक को आदेश दिया
और कहा, "मैं कैदी हूँ मैं प्रभु के भवन में नहीं
जा पाऊँगा। 6 इसलिए तुम उपवास के दिन
याहवे के भवन में जाकर याहवे के जो वचन
तुमने मेरे मुँह से सुने हैं, उन्हें उस किताब में
से पढ़कर सभी लोगों को सुनाओ। तुम उन
लोगों को भी पढ़कर सुनाना जो यहूदा के हैं।
7 हो सकता है वे याहवे से रो -रोकर बिनती
करें और अपने बुरे रास्ते को छोड़ दें, क्योंकि
जो गुस्सा याहवे अपनी प्रजा पर भड़काना
चाहते थे, वह भयंकर है। 8 यिर्मियाह के इस
आदेश के अनुसार नेरिय्याह के बेटे बारूक
ने, याहवे के घर में उस किताब में से पढ़कर
सुनाया। 9 योशिय्याह के बेटे यहूदा के राजा
यहोयाकीम के राज्य के पाँचवे साल के नौंवे
महीने में यरूशलेम में जितने लोग थे, और
यहूदा के नगरों से जितने लोग यरूशलेम में
आए थे, उन्होंने याहवे के सामने उपवास
की घोषणा की। 10 तब बारूक ने प्रभु के
घर में सभी लोगों को शापान के बेटे गमर्याह
जो प्रधान था, उसकी कोठरी में जो ऊपर
के आँगन में प्रभु के घर के नए फाटक के
पास थी, यिर्मयाह के सभी वचन पढ़कर
सुनाए। 11 तब शापान के बेटे मीकायाह ने
प्रभु की सारी बातों को किताब से सुना।
12 वह राजमहल के प्रधान की कोठरी में
उतरा वहाँ एलीशामा प्रधान, शमायाह का
बेटा दलायाह, अबबोर का बेटा एलनातान,
शापान का बेटा गमर्याह, हनन्याह का बेटा
सिदकिय्याह और सभी गर्वनर बैठे हुए थे।
13 बारूक के पुस्तक में से पढ़े गए सभी
वचन, जिन्हें मीकायाह ने सुना था, उन सभी
को बताया। 14 उन्हें सुनकर सभी हाकिमों ने
यहूदी को जो नतन्याह का बेटा, शेलेम्याह
का पोता और कूशी का परपोता था, बारूक
के पास यह कहने को भेजा,"जिस किताब
में से तुमने सब लोगों को पढ़कर सुनाया
है, उसे अपने हाथ में लेते आओ।" इसलिए
नेरिय्याह का बेटा बारूक अपने हाथ में
उस किताब को लेकर आया। 15 तब वे
उससे बोले,"बैठकर पढ़ कर सुनाओ।"
तब बारूक ने वैसा ही किया। 16 वह सब
सुनने के बाद थरथराते हुए एक दूसरे को
देखने लगे। उन्होंने बारूक से कहा,"हम
ज़रूर राजा से ये वचन बताएँगे।" 17 फिर
उन्होंने बारूक से कहा," हमें बताओ, क्या
तुमने यह बाते उसके मुँह से सुनकर लिखीं?
18 बारूक बोला,"वह इन बातों को मुँह से
कहता गया और मैं स्याही से लिखता गया।"
19 तब हाकिमों ने बारूक से कहा, "जाओ,
तुम अपने आप को और यिर्मयाह को छिपा
लो। कोई यह न जाने कि तुम यहाँ हो। 20 तब
वे किताब की एलीशामा प्रधान की कोठरी
में रखकर राजा के पास आँगन में आए और
सब कुछ बता दिया। 21 तब राजा ने यहूदी
को किताब ले आने के लिए भेज दिया। उसने
उसे एलीशामा प्रधान को कोठरी में से लेकर
राजा को और जो गवर्नर राजा के आस-पास
खड़े थे उनको भी पढ़ कर सुनाया। 22 राजा
सर्दियों के भवन में बैठा हुआ था, क्योंकि यह
नवाँ महीना था। उसके सामने जलती अँगठी
भी रखी हुई थी। 23 यहूदी के तीन चार पन्ने
पढ़ चुकने के बाद राजा ने उसे चाकू से कांट
कर अंगीठी में फेंक दिया। वह किताब जल
कर राख हो गई। 24 यह सब देख, किसी को

डर नहीं लगा, न ही किसी ने अपने कपड़े फाड़े, जिन लोगों ने किताब में लिखी बातों को सुना था। 25 एलनातान और दलायाह और गर्मयाह ने राजा से प्रार्थना की थी, कि किताब के साथ ऐसा न करें, लेकिन राजा ने उनकी बात पर ध्यान न दिया। 26 राजा ने राजपुत्र यरहमेल को अज्रीएल के बेटे सरायाह को और अब्देल के बेटे शेलेम्याह को आदेश दिया था कि बारूक लेखक और यिर्मयाह नवी को पकड़ लें, लेकिन प्रभु ने उन्हें छिपा रखा था। 27 जब राजा ने उन वचनों की किताब को जो बारूक ने यिर्मयाह के मुँह से सुनकर लिखी थी, राख कर डाला, तब याहवे का यह संदेश यिर्मयाह मिला। 28 "एक और किताब लेकर उसमें यहूदा के राजा यहोयाकीम की जलाई हुई किताब की सभी बातों को लिख दो। 29 और यहूदा के राजा यहोयाकीम से कहो, "याहवे ऐसा कहते है तुमने उस किताब को यह कहकर जला दिया था, कि उसमें यह क्यों लिखा गया कि बेबिलोन का राजा, ज़रूर आएगा और इस देश को बर्बाद करेगा। वह इन्सान और जानवर दोनों को नाश करेगा। 30 इसलिए याहवे यहूदा के राजा यहोयाकीम के बारे में यह कहते हैं उसका कोई दाऊद की राजगद्दी पर न बैठेगा। उसकी लाश ऐसी फेंकी जाएगी कि वह दिन की धूप और रात की ठण्ड में पड़ी रहेगी। 31 उसको और उसके वंश और कर्मचारियों को उनकी बुराई की सज़ा दूँगा। जितनी मुसीबतें मैंने उन पर और यरूशलेम के रहनेवालों पर डालीं थी और यहूदा के सब लोगों पर डालने को कहा है, और जिसको उन्होंने सच नहीं माना था, उन सभी को उन पर डालूँगा। 32 तब यिर्मयाह ने दूसरी किताब लेकर नेरिय्याह के बेटे बारूक लेखक को दी और जो किताब यहूदा के राजा यहोयाकीम ने आग में जलाई थी, उसमें लिखी सभी बातों को बारूक ने यिर्मयाह के मुँह से सुनकर उसमें लिख दिए और उन वचनों में उनके समान और भी बहुत सी बातें बढ़ा दी गई।

37 यहोयाकीम के बेटे कोन्याह की जगह पर योशिय्याह का बेटा सिदकिय्याह शासन करने लगा, क्योंकि बेबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने उसी को यहूदा देश में राजा ठहरा दिया था। 2 लेकिन न तो उसने, न उसके काम करनेवालों ने और न साधारण लोगों ने याहवे का वचन माना, जो उसने यिर्मयाह नबी के द्वारा दिया था। 3 सिदकिय्याह राजा ने शेलेम्याह के बेटे यहूकूल और मासेयाह के पुत्र सपन्याह पुरोहित को यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास यह कहलाकर भेजा, "हमारे लिए प्रभु याहवे से बिनती करो।" 4 उस समय तक यिर्मयाह जेल में न डाला गया था और लोगों के बीच आया जाया करता था। 5 तभी फिरौन की फौज हमले के लिए मिस्र से निकली। तब कसदी जिन्होंने यरूशलेम को घेरा हुआ था, उसका समाचार सुनकर यरूशलेम के पास से चले गए। 6 तब याहवे का संदेश यिर्मयाह को मिलाः 7 "इस्राएल के परमेश्वर याहवे कहते हैं:यहूदा के जिस राजा ने तुम्हें बिनती करने के लिए मेरे पास भेजा है उससे कहा, "देखो, फिरौन की जो फौज तुम्हारी मदद के लिए निकली है वह अपने देश मिस्र को लौट जाएगी। 8 कसदी वापस आकर, इस नगर से लड़ेंगे वे इसे ले लेंगे और आग से जला डालेंगे। 9 याहवे यो कहते हैं : तुम ऐसा कहकर मूर्ख न बनो ,'कसदी हमारे पास से जा चुके हैं' क्योंकि वे अब तक गए नहीं है। 10 क्योंकि यदि तुमने कसदियों की सारी फौज को जो तुम से लड़ती है, इस तरह से हरा भी दिया होता,

कि उनमें केवल ज़ख्मी लोग ही रह जाते, तौभी वे अपने अपने तम्बू में से उठकर इन नगर को जला डालते। 11 जब कसदियों की फौज, फिरौन की फौज के कारण यरूशलेम के पास से निकल पड़ी। 12 तब यिर्मयाह यरूशलेम से निकलकर बिन्यामीन के देश की ओर इसलिए जा निकला, कि वहाँ से और लोगों के संग अपना हिस्सा लें। 13 जब वह बिन्यामीन के फाटक में पहुँचा, तब यिरिय्याह पहरूओं का एक सरदार वहाँ था जो शेलेम्याह का बेटा और हनन्याह को पोता था, उसने यिर्मयाह नबी को यह कहते हुए पकड़ा, 'तुम कसदियो के पास भाग रहे हो।' 14 तब यिर्मयाह ने कहा, यह सरासर गलत है, मैं कसदियों के पास नहीं भाग रहा था।" लेकिन यिरिय्याह का उसकी बात स्वीकार न हुई। उसने उसे पकड़ा और गवर्नर के पास ले गया। 15 तब गवर्नरों ने यिर्मयाह को पिटवाया। और योनातान प्रधान के घर में कैदी बनाकर डलवा दिया; क्योंकि उन्होंने उसे मामूली जेल बना डाला था। 16 जिस तलघर (तैखाने) में बहुत कोठरियाँ थीं, उसमें यिर्मयाह रहने लगा। 17 काफी दिनों के बाद सिदकिय्याह राजा ने उसे बुलाया ओर अपने भवन में उससे छिपकर यह सवाल किया,"क्या याहवे ने कोई संदेश भेजा है? यिर्मयाह बोला,"हाँ पहुँचा है। वह यह है कि तुम बेबिलोन के अधिकार में कर दिये जाओगे।" 18 फिर यिर्मयाह ने सिदकिय्याह राजा से कहा, "मैंने तुम्हारा, तुम्हारे कर्मचारियों का व तुम्हारी प्रजा के विरोध ऐसा बुरा क्या किया है, कि मुझे तुम लोगों ने जेल में डलवाया है? 19 तुम्हारे वे भविष्यद्वक्ता जो झूठ - मूठ कहते थे, कि बेबिलोन का राजा हमला नहीं करेगा, अब कहाँ हैं? 20 अब हे मेरे प्रभु, मेरे राजा, मेरी दोहाई सुनकर मुझे योनातान प्रधान के घर में फिर से न भेज, नहीं तो मैं जीविन न रहूँगा। 21 तब सिदकिय्याह राजा के आदेश से यिर्मयाह पहरे के आँगन में रखा गया। जब तक नगर का सारा खाना समाप्त न हुआ, तब तक उसको खाने वालों की दुकान में से हर दिन एक रोटी मिलती थी।

38 फिर जो संदेश यिर्मयाह सब लोगों को देता था, उसे मतान के बेटे शपन्याह, पशहूर के बेटे गदल्याह, शेलेम्याह के बेटे यूकल और मिल्कय्याह के बेटे पशहूर ने सुना; 2 याहवे का कहना है, कि जो कोई इस नगर में रहेगा, वह तलवार, महँगाई और मरी से नाश होगा, लेकिन जो कोई कसदियों के पास निकलकर जाए, वह जान बचाकर ज़िन्दा रहेगा। 3 याहवे कहते हैं, यह नगर बेबिलोन के राजा की फौज के वश में कर दिया जाएगा और वह इसको ले लेगा।" 4 इसलिए उन गर्वनरों ने राजा से कहा, 'उस आदमी को मरवा डालो, क्योंकि वह नगर में बचे सैनिकों और अन्य लोगों से ऐसी ऐसी बातें कहता है, जिससे उन लोगों को घबराहट होने लगती है। क्योंकि वह आदमी इस प्रजा के लोगों की भलाई की नहीं बुराई ही चाहता है। 5 सिदकिय्याह राजा बोला, सुनो, वह तो तुम्हारे वश में हैः क्योंकि राजा तुम्हारे खिलाफ़ कोई कदम न उठाएगा।" 6 तब उन लोगों ने यिर्मयाह को राजपुत्र मल्किय्याह के उस गड्ढे में जो पहर के आंगन में था, रस्सियों से उतार दिया। गड्ढे में कीचड़ होने की वजह से वह दलदल में फंस गया। 7 उस समय राजा बिन्यामीन के फाटक के पास बैठा था, इसलिए जब राजभवन के खोजे एबेदमेलेक का मालूम पड़ा कि यिर्मयाह को गड्ढे में ढकेल दिया गया है। 8 तो वह राजमहल से निकला और

जाकर राजा से मिला। 9 उसने कहा,“मेरे
मालिक, मेरे राजा जी, यिर्मयाह को गड्ढे में
डालकर उन लोगों ने बुरा किया है। नगर में
भोजन न होने के कारण वह भी भूखा मरेगा।
10 तब राजा ने उसको आदेश दिया,“जल्दी
से तीस लोगों के साथ जाओ और उसे गड्ढे
में से निकालो। 11 इसलिए उसने वैसा ही
किया और जाकर रस्सी के सहारे फटे-पुराने
कपड़े और चिथड़े उतार दिए। 12 एबेदमेलेक
ने यिर्मयाह से कहा, “अपनी दोनों बगलों
में रस्सी के नीचे इन कपड़ों को रख लो।
“ यिर्मयाह ने उसकी बात मान भी ली।
13 उन लोगों ने मिलकर यिर्मयाह को बाहर
निकाल लिया। तब से वह पहरे के आँगन में
रहने लगा। 14 सिदकिय्याह राजा ने यिर्मयाह
भविष्यद्वक्ता को याहवे के भवन के तीसरे
दरवाजे में अपने पास बुलवाया। राजा ने
यिर्मयाह से कहा, मुझ से कुछ छिपाना नहीं,
एक बात मैं पूछता हूँ।” 15 यिर्मयाह का उत्तर
था,“ यदि मैं तुम्हें बताऊँ, तो क्या तुम मुझे
मरवा नहीं दोगे ? मैं यदि तुम्हें सलाह दूँ तब
भी तुम मेरी मानोगे नहीं। 16 तब सिदकिय्याह
राजा ने अकेले में यिर्मयाह से वायदा किया,
“याहवे, जिन्होंने हमें बनाया है, उनके जीवन
की सौगन्ध, न ही मैं तुम्हारी जान लूँगा,
न उन लोगों के हाथ सुपुर्द करूँगा, जो
तुम्हारे खून के प्यासे हैं। 17 तब यिर्मयाह ने
सिदकिय्याह से कहा,“सेनाओं के प्रभु याहवे
जो इस्राएल के स्वामी हैं, उनका कहना है,
यदि तुम बेबिलान के राजा के गवर्नरों के
पास से चले जाओ, तो यह नगर जलाया
नहीं जाएगा और तुम अपने परिवार सहित
जीवित रहोगे। 18 लेकिन यदि तुम बेबिलोन
के राजा के गवर्नरों के पास न जाओ, तो
यह नगर कसदियों के अधिकार में चला
जाएगा वे इसे जला डालेंगे और तुम बच न
पाओगे। 19 सिदकिय्याह यर्मियाह से बोला,
“जो यहूदी कसदियों के पास भाग गए हैं,
उनसे मुझे डर लगता है। ऐसा न हो कि मैं
उनके कब्जे में आ जाऊँ और वे मेरा मज़ाक
उड़ाएँ।” 20 यर्मियाह का जवाब था, “तुम
उनके कब्जे में न आओगे। जो मैं तुम से
कहता हूँ उसे याहवे की बात जानकर मान
लो, तब तुम्हारा भला होगा और तुम्हारी जान
बच जाएगी। 21 लेकिन यदि तुम निकल जाना
ठीक न समझो, तो जो बात याहवे प्रभु ने
मुझे दर्शन से बताई है वह यह है 22 देखो,
यहूदा के राजा के रनवास में जितनी महिलाएँ
रह गई है; वे बेबिलोन के राजा के गवर्नरों
के पास निकाल कर पहुँचाई जाएगी और
वे तुम से कहेंगी, “तुम्हारे दोस्तों ने तुम्हें
बहकाया और उनकी इच्छा पूरी हो गई है।
जब तुम्हारे पाँव कीचड़ में धँस गए, तो वे
पीछे फिर गए हैं। 23 तुम्हारी सारी महिलाएँ
और बाल-बच्चे कसदियों के पास निकाल कर
पहुँचाए जाएँगे। और तुम भी कसदियों के
हाथ से बचोगे नहीं। लेकिन तुम पकड़कर
बेबिलोन के राजा के वश में करे जाओगे
और इस नगर के भस्म किए जाने का कारण
तुम ही होगे । 24 तब सिदकिय्याह से कहा,
“सावधान, कोई यह सब न जाने, नही तो
तुम अपनी जान गवाँ दोंगे। 25 यदि गवर्नर
लोग यह सुनकर कि मैंने तुम से बातचीत
की है, तुम्हारे पास आकर कहने लगे, “हमें
बताओ कि तुमने राजा से क्या कहा, हमसे
कुछ छिपाओ मत, हम तुम्हें मरवाएँगे नहीं।
यह भी बताओ कि राजा ने तुम से क्या
कहा। 26 तो तुम उनसे कहना,“मैंने राजा
से गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की थी कि मुझे
योनातान के घर में फिर वापस न भेजे, नहीं
तो मैं वही मर जाऊँगा।” 27 तब सभी गवर्नरों
ने यिर्मयाह के पास आकर पूछा, और जैसा

राजा ने उसको आदेश दिया था, ठीक वैसे ही उसने उनको जवाब दिया। इसलिए वे उससे और कुछ न बोले और भेद न खुल सका।
28 इस तरह जिस दिन यरूशलेम ले लिया गया, उस दिन तक वह पहरे के आँगन ही में रहा।

39 यहूदा के राजा सिदकिययाह के शासन के नौंवे साल के दसवें महीने में बेबिलोन के राजा नबूकदेनेस्सर ने अपनी पूरी फौज के साथ यरूशलेम पर हमला
बोलकर, घेर लिया। 2 सिदकिय्याह के राज्य
के ग्यारहवें साल के चौथे महीने के नौवे दिन को उस नगर की शहरपनाह तोड़
दी गई। 3 जब यरूशलेम को जीत लिया गया, तब नेर्गलसरेसेर आदि बेबिलोन के राजा के सब गवर्नर बीच के फाटक में
दाखिल होकर बैठ गए। 4 जब यहूदा के राजा सिदकिय्याह और सभी सैनिकों ने उन्हें देख लिया तब रात ही रात राजा के बगीचे से दोनों दीवारों के बीच के फाटक से होकर नगर से निकलकर भाग चले और अराबा का
रास्ता लिया। 5 लेकिन कसदियों की फौज ने उनको खदेड़ा और सिदकिय्याह को यरीहो के अराबा में ले लिया। उनको बेबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर के पास हमात देश के रिबला में ले गए। उसने उसे वहाँ सज़ा
का हुक्म दिया। 6 तब बेबिलोन के राजा ने सिदकिय्याह के बेटों को उसके देखते मार डाला। वहाँ सभी अमीर यहूदियों को भी मारा
गया। 7 उसने सिदकिय्याह को आँखो को फुड़वा डाला और उस बेबिलोन ले जाने के
लिए जंजीरों से जकड़ दिया। 8 कसदियों ने राजभवन और प्रजा के घरों को आग लगाकर फूँक दिया और यरूशलेम की शहरपनाह को
तोड़ डाला। 9 तब गार्ड के मुखिया नबूजरदान प्रजा के बचे हुओं को जो नगर में रह गए थे, और जो लोग उसके पास भाग आए थे, उनको अर्थात प्रजा में से जितने रह गए, उन सभी को बन्दी बनाकर बेबिलोन को ले
गया। 10 लेकिन प्रजा में से कुछ बहुत गरीब थे। उनको अंगरक्षकों के मुखिया नबूज़रदान ने यहूदा ही में छोड़ दिया। लेकिन जाते समय उनको अंगूर के बगीचे और खेत दे
दिए। 11 बेबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने गार्ड (अंगरक्षकों) के मुखिया नबूज़रदान को
यिर्मयाह के बारे में आदेश दिया। 12 "उसको लेकर उस पर दया बनाए रखना और उसका कुछ नुक्सान मत करना। वह तुमसे जैसा
कहे, वैसा ही बर्ताव करना। 13 इसलिए गार्ड लोगों के मुखिया नबूज़रदान और खोजो के प्रधान नबूसजबान और मगों के प्रधान
नेर्गलसरेसेर ज्योतिषियों के सरदार 14 और बेबिलोन के राजा के सभी प्रधानों ने लोगों को भेजकर यिर्मयाह को पहरे के आँगन में से बुलवाया और गदल्याह को जो अहीकाम को बेटा और शापान का पोता था सौंप दिया कि वह उसे घर पहुँचा दे। उस समय वह
लोगों के साथ रहने लगा। 15 जब यिर्मयाह पहरे के आंगन में कैद था, तभी याहवे को
यह संदेश उसे मिला। 16 "जाकर एबेदमेलेक कूशी से कहो, इस्राएल और सेनाओं का प्रभु याहवे कहते हैं, देखो, मैं अपनी बातों को जो इस नगर के बारे में कहीं है, इस तरह पूरा करुँगा कि ये भलाई न देखेंगे। इनका नुक्सान होगा। तुम भी उन बातों को पूरा होते देखोगे।
17 लेकिन प्रभु कहते हैं, मैं उस समय तुम्हें बचाऊँगा। मैं ही तुम्हें मरने से बचाऊँगा। ऐसा इसलिए होगा क्योंकि तुमने मुझ पर भरोसा
रखा है। तुम उनके वश में के जाओगे। 18 मैं तुम्हें ज़रूर बचाऊँगा , तुम तलवार से न मारे जाओगे, यह प्रभु कहते हैं। यह इसले होगा क्योंकि तुमने मुझ पर तकिया किया है।

40 जब गार्ड लोगों के मुखिया ने यिर्मयाह को सभा में उन सभी यरूशलेमी और यहूदी बन्दियों के बीच हथकड़ियों से जकड़ा हुआ पाकर जो बेबिलोन जाने को थे, छुड़ा लिया, उसके बाद ही प्रभु का वचन उसे मिला। 2 गार्ड लोगों के मुखिया नबूज़रदान ने यिर्मयाह को उस वक्त अपने पास बुलाया और कहा,"इस जगह पर यह जो मुसीबत आई है, उसके बारे में तुम्हारे प्रभु ने पहले ही से बताया था। 3 उन्होंने अपनी कही बात के अनुसार ही किया तुम लोगों ने जो प्रभु के खिलाफ़ गुनाह किया और इनकी बात नहीं माना, इसलिए तुम्हारी यह हालत है। 4 अब मैं इन हथकड़ियों को काट रहा हूँ। यदि तुम्हें मेरे साथ बेबिलोन जाना अच्छा लगे तो चलो। मेरी दया-दृष्टि तुम पर वहाँ बनी रहेगी। यदि तुम्हें वहाँ जाना मंज़ूर नहीं, तो यहीं रहो। पूरा देश तुम्हारे साम्हने है, तुम्हें जिस ओर जाना अच्छा लगे चले जाओ।" 5 कुछ ही समय में नबूज़रदान ने फिर उससे कहा,"गदल्याह जो अहीकाम का बेटा और शापान का पोता है, जिसको बेबिलोन के राजा ने यहूदा के नगरों पर अधिकार दिया है, उसके पास लौट जाओ और उसके संग लोगों के बीच रहा । या जहाँ कहीं जाना तुम्हें अच्छा लगे, चले जाओ।" इसलिए अंगरक्षकों के प्रधान ने खाना और पानी देकर विदा किया। 6 तब यिर्मयाह अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास मिस्पा को गया, वहीं बाकी बचे लोगों के बीच वह रहने लगा। 7 जब देहात में रहनेवाले सैनिको और उनके प्रधान को जानकारी मिली कि बेबिलोन के राजा ने अहीकाम के बेटे गदल्याह को देश का अधिकारी बनाया है, और देश के जिन गरीबों को वह बेबिलोन नहीं ले गया, उन सभी को सुपर्द कर दिया है। 8 तब नतन्याह का बेटा इश्माइल कारेह के बेटे योहानान, योनातान और तन्हूसेत का बेटा सरायाह, एपै नेतोपावासी के बेटे और किसी माकावासी का बेटा याजन्याह अपने लोगों सहित गदल्याह के पास मिस्पा में आए। 9 गदल्याह अहीकाम का बेटा और शापान का पोता था, उसने उनसे और उनके लोगों से कसम खाई, "कसदियों के वश में रहने से डरना मत। इसी देश में रहते हुए बेबिलोन के राजा के आधीन रहो, इसी में तुम्हारी भलाई है। 10 मैं मिस्पा में इसलिए रहता हूँ कि जो कसदी लोग हमारे यहाँ आए, उनके सामने हाज़िर होऊँ, लेकिन तुम दाखमधु और गरमी के दिनों के फल और तेल को इकट्ठा करके अपने बर्तनों में रखो और अपने लिए हुए नगरों में बसे रहो।" 11 जब मोआबियों, अम्मोनियों, एदोमियों और दूसरे देशों के रहनेवालों ने सुना कि बेबिलोन के राजा ने यहूदियों में से कुछ लोगों को बचा लिया हे और उनके ऊपर गदल्याह को जो अहीकाम का बेटा और शापान का पोता है, अधिकारी ठहराया है। 12 तब वे सभी यहूदी जो इधर-उधर बिखर गए थे, वहाँ से लौट कर यहूदा देश के मिस्पा नगर में गदल्याह के पास आए, और बहुत दाखमधु तथा गर्मियों के फल बटोरने लगे। 13 तब कोरह का बेटा योहानान और मैदान में रहनेवाले सैनिकों के सभी दलों के मुखिया मिस्पा में गदल्याह के पास आकर कहने लगे, 14 "क्या तुम्हें मालूम है कि अम्मोनियों के राजा बालीस ने नतन्याह के बेटे इश्माएल को तुम्हें मार डलने के लिए भेजा है ?" लेकिन इस बात पर अहीकाम को बेटे को विश्वास न हुआ। 15 फिर कारेह के बेटे योहानान ने गदल्याह से मिस्पा में छिपकर कहा, "मुझे जाकर नतन्याह के बेटे इश्माएल

को मार डलने दे, और यह बात कोई भी न
जान सकेगा। वह तुम्हारी जान क्यों ले ? और
इकट्ठे हुए यहूदी तितर-बितर क्यों हों और
बचे यहूदी क्यों बर्बाद हों ? 16 अहीकाम के
पुत्र गदल्याह ने कारेह के बेटे योहानान से
कहा, ऐसा न करो, तुम इश्माएल के बारे में
झूठ बोलते हो"

41 सातवे महीने में इश्माएल जो
नतन्याह का पुत्र और एलीशामा का
पोता और राजा के वंश और राजा के खास
पुरूषों में से था, दस लोग साथ लेकर मिस्पा
में अहीकाम के बेटे गदल्याह के पास आया।
वहीं उन्होंने एक साथ खाना भी खाया। 2 तब
नतन्याह के बेटे इश्माएल और उसके साथ
दस लागों ने गदल्याह को जो अहीकाम का
बेटा और शापान का पोता था, तलवार से
मार डाला। उसे बेबिलोन के राजा ने देश
का अधिकारी बनाया था। 3 इश्माएल ने
गदल्याह के संग जितने यहूदी मिस्पा में थे
और जो कसदी सैनिक वहाँ मिले उन सभी
की जान लेली। 4 गदल्याह के मारे जाने के
दूसरे दिन, जब किसी को मालूम नहीं नहीं
था, 5 तब शेकेम और शीलो और शोमरोन से
अस्सी आदमी दाड़ी बनवाकर कपड़ों को
फाड़े , देह को चीरे हुए और हाथ में अन्नबलि
और लोबान लिए हुए, प्रभु के भवन में
दाखिल होने के लिए आते दिखाई दिए। 6 तब
नतन्याह का बेटा इश्माएल उनसे मुलाकात
करने मिस्पा से रोता हुआ निकल पड़ा।
जब वह उनसे मिला, तब कहा,"अहीकाम
के बेट गदल्याह के पास चलो।" 7 जब
वे उस नगर में आए तब नतन्याह के बेटे
इश्माएल ने अपने साथियों सहित उनको
मारा और गड्ढे में फेंक दिया। 8 लेकिन उनमें
से दस लोग इश्माएल से बोले," हमें मारो
मत, क्योंकि हमारे पास मैदान में रखा हुआ
गेहूँ, जौ तेल और शहद है।" इसलिए उसने
उन्हें छोड़ दिया और उनके भाईयों के साथ
मारा नहीं। 9 जिस गड्ढे में इश्माएल ने उन
लोगों की लाशों को जिन्हें उसने गदल्याह
के साथ मारा था, फेंक दिया था। (यही वही
गड्ढा है, जिसे आसा राजा ने इस्राएल के
राजा बाशा के डर से खुदवाया था), उसको
नतन्याह के बेटे इश्माएल ने मारे हुओं से
भर दिया । 10 तब जो लोग मिस्पा में बचे
हुए थे, अर्थात राजकुमारियाँ और जितने और
लोग मिस्पा में रह गए थे जिन्हें जल्लादों
के मुखिया नबूजरदान ने अहीकाम के बेटे
गदल्याह को सौंप दिया था, उन सभी को
नतन्याह का बेट इश्माएल गुलाम बनाकर
अम्मोनियों के पास ले जाने को चला। 11 जब
कारेह के पुत्र योहानान ने और योद्धाओं के
झुन्डों के उन सभी प्रधानों ने जो उसके
संग थे, सुना, कि नतन्याह के बेटे इश्माएल
ने यह सब बुराई की है, 12 तब वे सभी
लोगों को लेकर नतन्याह के बेटे इश्माएल
से लड़ने के लिए निकले और उसको उस
बड़े जलाशय के पास पाया जो गिबोन में है।
13 कारेह के बेटे योहानान को और दलो के
सभी प्रधानों को देखकर जो उसके संग थे,
इश्माएल के साथ जो लोग थे, वे सभी खुश
हुए। 14 जितने लोगों को इश्माएल मिस्पा
से कैद कर लिए जा रहा था, वे पलटकर
कारेह के बेटे योहानान के पास चले आए।
15 लेकिन नतन्याह का बेटा इश्माएल आठ
आदमियों सहित योहानान के हाथ से बचकर
अम्मोनियों के पास चला गया। 16 तब प्रजा
में से जितने बच गए थे, अर्थात जिन सैनिकों,
महिलाओं, बच्चों और खोजों को कारेह का
पुत्र योहानान, अहीकाम के पुत्र गदल्याह
के मिस्पा में मारे जाने के बाद नतन्याह के
बेटे इश्माएल के पास से छुड़ाकर गिबोन से

वापस ले आया था। उनको वह अपने सब
साथ के दलों के प्रधानों सहित लेकर चल
दिया। 17 बेतलेहम के पास जो किम्हाम की
सराय है, उसमें वे इसलिए टिके ताकि मिस्र
को जाएँ। 18 क्योंकि वे कसदियों से डरते थे।
इसका कारण यह था कि अहीकाम का बेटा
गदल्याह जिसे बेबिलोन के राजा के देश का
अधिकारी ठहराया था, उसे नतन्याह के पुत्र
इश्माएल ने मार दिया था।

42 जब कारेह का बेटा योहानान,
होशायाह का बेटा याजन्याह, दलों
के सब प्रधान और छोटे से लेकर बड़े
तक सभी लोग, 2 यिर्मयाह के पास आकर
बोले, "हमारी प्रार्थना स्वीकार करके अपने
सृष्टिकर्ता से हम सभी बचे हुओं के लिए
प्रार्थना करो, क्योंकि तुम अपनी देख ही
रहे हो, कि हम जो पहले गिनती में अधिक
थे अब कम हो गए है। 3 इसलिए प्रार्थना
करो, कि तुम्हारे प्रभु हम को जानकारी दे
कि हम किस रास्ते से जाएँ और क्या करें
? 4 यिर्मयाह नबी उनसे बोला,"तुम्हारी बात
मैंने सुन ली है। तुम्हारे कहने के अनुसार मैं
तुम्हारे प्रभु से बिनती करूँगा और जो जवाब
तुम्हारे लिए मुझे मिलेगा, बिना छिपाए सब
कुछ बता दूँगा। 5 तब वे यिर्मयाह से बोले,
"यदि आपके प्रभु के पास हमारे लिए कुछ
संदेश है और हम उसके अनुसार न करें, तो
प्रभु हमारे बीच में सच्चे और ईमानदार गवाह
हों। 6 चाहे वह भली बात हो या बुरी, तौभी
हम अपने प्रभु का आदेश, जिसके पास हम
तुम्हें भेजते हैं, मानेंगे, क्योंकि प्रभु की बात
को मानने में हमारी भलाई है।" 7 दस दिन के
बाद प्रभु का संदेश यिर्मयाह को मिला। 8 तब
उसने कारेह के बेटे योहानान को, उसके
साथ के दलों के प्रधानों को और छोटे से
लेकर बड़े तक जितने लोग थे, उन सब को
बुलाकर उनसे कहा, 9 " इस्राएल के रचयिता
याहवे, जिनके पास तुमने मुझे इसलिए भेजा
है कि मैं तुम्हारी बिनती उनके आगे रखूँ,
कहते हैः 10 यदि तुम इसी देश में रह जाओ,
तब तो मैं तुम्हें बर्बाद नहीं करूँगा, न ही
उखाड़ूँगा। मैंने जो तुम्हारा नुक्सान किया है,
वैसा न करूँगा। 11 तुम बेबिलोन के राजा
से डरते हो, मत डरो, क्योंकि मैं सृष्टिकर्ता
तुम को उस से बचाने के लिए तुम्हारे साथ
हूँ। 12 तुम पर मैं दया करूँगा, ताकि वह भी
दया करके तुम्हारी ज़मीन पर तुम्हें बसा दे।
13 लेकिन यदि तुम यह कहकर कि हम इस
देश में नहीं रहेंगे, अपने प्रभु की बात न मानों
और कहा, कि हम मिस्र देश जाएँगे और
वहीं रहेंगे। 14 क्योंकि वहाँ युद्ध का सामना न
करना पड़ेगा, नरसिंगे की आवाज न आएगी।
खाने की कमी भी न होगी, तो हे बचे हुए
यहूदियो, प्रभु का संदेश सुनो। 15 इस्राएल का
प्रभु सेनाओं के याहवे का कहना है : यदि
तुम सचमुच मिस्र को जाने के लिए अपना
रूख करो, और वही रहने के लिए जाओ,
16 तो ऐसा होगा कि जिस हिंसा से तुम डरते
हो, वही मिस्र में तुम्हारे ऊपर आएगी। जिस
महँगाई से तुम्हें डर लगता है वह मिस्र में
भी तुम्हारा पीछा करती रहेगी और तुम्हारी
मौत वहीं हो जाएगी। 17 जितने लोग मिस्र
में रहना चाहेंगे, वे सभी तलवार, महँगाई
और मरी से बर्बाद हो जाएँगे। जो मुसीबत
मैं उन पर डालूँगा, उस से उन्हें कोई बचा न
पाएगा। 18 इस्राएल के रचयिता, सेनाओं के
प्रभु याहवे कहते है : जिस तरह मेरा गुस्सा
यरूशलेम के लोगों पर भड़का था, उसी
तरह यदि तुम मिस्र में जाओ, तो मेरे भड़के
गुस्से को देखकर लोग दाँतो तले उँगली दबा
लेगें। वे तुम्हारा उदाहरण देकर शाप देंगे और
तुम्हारी बुराई की जाएगी। इस जगह को तुम

फिर देख न सकोगे। 19 हे बचे हुए यहूदियों,
याहवे ने तुम्हारे बारे में कहा है :"मिस्र में
दाखिल मत हो।' यह मैं चेतावनी तुम्हें दे
रहा हूँ। 20 जब तुमने यह कहकर अपने प्रभु
याहवे के पास भेज दिया, 'हमारे लिए हमारे
सृष्टिकर्ता याहवे से बिनती करो और जो कुछ
वह कहे, हमें बताना और हम वैसा ही करेंगे'
उस समय तुम जानते बूझते अपने को धोखा
देते थे। 21 देखो, मैं आज यह कह रहा हूँ,
लेकिन और जो कुछ तुम्हारे प्रभु याहवे ने तुम
से कहने के लिए मुझे भेजा है, उसमें से तुम
कोई बात नहीं मानते। 22 अब यह जान लो,
कि जिस जगह तुम परदेशी होकर रहने की
कामना करते हो, उसमें तुम तलवार, महँगाई
और मरी से नष्ट हा जाओगे।

43 जब यिर्मयाह उनके रचयिता याहवे
को उन बातों को कह चुका, जिनके
कहने के लिए उन्होंने उसको उन सभी लोगों
के पास भेजा था, 2 तब होशियाह के बेटे
अजर्याह और कारेह के बेटे योहानान और
सभी घमण्डी लोगों ने यिर्मयाह से कहा," तुम
झूठ बोलते हो। हमारे प्रभु याहवे ने तुम्हें यह
कहने के लिए नहीं भेजा,"मिस्र में रहने के
लिए नहीं जाओ। 3 लेकिन नेरिय्याह का बेटा
बारूक तुम को हमारे खिलाफ़ उकसाता है
कि हम कसदियों के हाथ में पड़े और वे हम
को मार डाले या कैद कर बेबिलोन ले जाएँ।
4 इसलिए कारेह का बेटा योहानान और दलों
के सभी प्रधानों और उन सब लोगों ने प्रभु के
इस आदेश का पालन नहीं किया, कि यहूदा
के देश ही में रहें। 5 लेकिन कारेह का बेटा
योहानान और दलो के और सभी मुखिया उन
सब यहूदियों को जो दूसरे देशों के लोगों के
बीच बिखर गए थे, और उनमें से लौटकर
यहूदा देश में रहने लगे थे, वे उनको ले
गए। 6 पुरूष, महिलाएँ, बच्चे, राजकुमारियाँ
और जितने प्राणियों को अंगरक्षकों के प्रधान
नबूज़रदान ने गदल्याह को जो अहीकाम का
पुत्र और शापन का पोता था, सुपुर्द किया
था, उनको और यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता और
नेरिय्याह के पुत्र बारूक को वे ले गए।
7 और प्रभु की आज्ञा के खिलाफ़ वे मिस्र
देश में तहपन्हेस नगर तक आ गए।" 8 तब
प्रभु का यह संदेश तहपन्हेस में यिर्मयाह को
मिला। 9 "अपने हाथ में बड़े बड़े पत्थर लो
और यहूदी पुरूषों के सामने उस ईंट के
चबूतरे में जो तहपन्हेस में फिरौन के भवन
के घर के पास है, चूना लीपकर छुपा दो।
10 और उन लोगो से कहना, "इस्राएल के प्रभु
कहते हैं, देखो, मैं बबिलोन के राजा अपने
सेवक नबूकदनेस्सर को बुलवा लूँगा। वह
अपना राजासन इन पत्थरों के ऊपर जो मैंने
छिपाई हुई है रखेगा, और इनके ऊपर अपना
छत्र बनवाएगा। 11 वह आकर मिस्र देश को
मारेगा, तब जो मरनेवाले हों, वे मौत के मुँह
में और जो कैदी होनेवाले हों, वे गुलामी में
और जो तलवार के लिए हैं, वे तलवार से
मारे जाएँगे। 12 मैं मिस्र के देवताओं में आग
लगाऊँगा, वह उन्हें फूँक देगा और गुलाम
बनाकर ले जाएगा। जिस तरह से चरवाहा
अपना कपड़ा ओढ़ लेता है, वैसा ही वह
मिस्र देश को समेट लेगा, तब बिना किसी डर
के चला जाएगा। 13 वह मिस्र देश के सूर्यगृह
के खम्भों को तुड़वा डालेगा। वह मिस्र के
देवालयों को आग लगवाकर फुँकवा देगा।

44 जितने यहूदी मिस्र देश में मिग्दोल,
तहहपन्हेस और नोप नगरों और
पत्रोस देश में रहते थे, उनके बारे में
यिर्मयाह को यह संदेश मिला। 2 इस्राएल के
परमेश्वर, सेनाओं के प्रभु कहते हैं : जो
परेशानी मैं यरूशलेम और यहूदा के सभी
नगरों पर डाल चुका हूँ, उन सब के तुम

गवाह हो। आँखे खोल कर देखो, कि वे
कैसे सुनसान और उजाड़ पड़े हैं। 3 क्योंकि
वहाँ के लोगों ने बुराई करके मेरे गुस्से को
भड़काया वे दूसरे देवताओं का आदर मान
और पूजा करते थे। ऐसे देवी-देवताओं को
तो उनके पुरखे भी नही जानते थे। 4 फिर भी
मैं अपने सभी दास भविष्यद्वक्ताओं को बड़ी
कोशिश से यह कहने के लिए भेजता रहा
कि यह घिनौना काम मत करो, जिससे, मुझे
भी नफ़रत है। 5 लेकिन मेरी बातों पर उन्होंने
ध्यान न दिया कि दूसरे देवताओं के लिए
धूप जलाना बन्द करें। 6 इसलिए मेरा गुस्सा
यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों
पर भड़क गया। आज तक वे उजाड़ और
सुनसार पड़े हैं। 7 अब सेनाओं के प्रभु कहते
हैं; तुम लोग अपना नुक्सान क्यों कर रहे
हो। आदमी, औरत, बच्चे, दूध पीते बच्चे, तुम
सभी बार्बाद किए जाओगे। 8 इस मिस्र देश
में जहाँ तुम गुलाम होकर आए हो, तुम अपने
कामों के द्वारा अर्थात दूसरे देवी-देवताओं
को धूप जलाकर, मुझे चिढ़ दिलाते रहे हो,
जिससे तुम बर्बाद हो जाओगे। और इस
दुनिया के सभी देशों में तुम्हारी बदनामी
होगी। वे लोग तुम्हारा उदाहरण देकर तुम्हें
बुरा-भला कहेंगे। 9 जो -जो बुराईयाँ तुम्हारे
पूर्वज, यहूदा के राजा, उनकी पत्नियाँ और
तुम्हारी पत्नियाँ और तुम जो यहूदा और
यरूशलेम की सड़कों पर किया करते थे,
क्या उसे भूल चुके हो? 10 आज के दिन तक
उनका मन नम्र न हुआ, न ही टूटा और न
उनके अन्दर कुछ डर है। वे लोग मेरे द्वारा
दिए आदेशों और निर्देशों की परवाह नहीं
करते है, जो मैंने तुम्हें और पूर्वजों को दिए।
11 इसलिए इस्राएल के स्वामी सेनाओं के प्रभु
कहते हैं:देखो मैं तुम्हारे विरूद्ध होकर तुम्हारा
नुकसान करूँगा, ताकि सभी यहूदियों को
समाप्त कर दूँ। 12 शेष यहूदी, जो ज़िद्द में
आकर मिस्र में रहने लगे हैं, वे सभी खतम
हो जाएँगे। इस मिस्र देश में छोटे से लेकर
बड़े तक तलवार और महँगाई से मरेगा। लोग
उन्हें कोसेंगे और आश्चर्य करेंगे। उनका
उदाहरण दे देकर शाप देंगे और बुराई करेंगे।
13 जिस तरह से मैंने यरूशलेम को तलवार,
मँहगाई और मरी के द्वारा सज़ा दी है, वैसे ही
मैं मिस्र देश में रहने वालों को भी सज़ा दूँगा।
14 जो बचे हुए यहूदी मिस्र देश में परदेशी
होकर रह रहे हैं, यद्यपि वे यहूदा देश में रहने
के लिए लौटने की कामना करते हैं, फिर
भी उनमें से एक भी बच कर वहाँ लौटने
न पाएगा। कुछ भागे हुओं को छोड़ कोई
भी वहाँ वापस न लौटेगा। 15 तब मिस्र देश
के पत्रोस में रहने वाले जितने आदमी जानते
थे, कि उनकी महिलाएँ दूसरे देवताओं के
लिए धूप जलाती हैं, और जितनी बड़ी सभा
में पास खड़ी थीं, उन सभी ने यिर्मयाह को
जवाब दिया। 16 "जो बातें तुमने हमें प्रभु
के नाम से सुनाई हैं, उन पर ध्यान न देंगे।
17 हम स्वर्ग की रानी के लिए धूप जलाएँगे
और पूजा-पाठ करेंगे, जैसे हमारे पूर्वज और
हम भी अपने राजाओं और दूसरे गवर्नरों
सहित यहूदा के नगरों में और यरूशलेम
की सड़कों में करते थे, क्योंकि उन दिनों
में हम पेट भर खाते थे और हमारी सेहत
अच्छी थी। उस समय हम पर कोई मुसीबत
भी नहीं पड़ती थी। 18 लेकिन जब से हमने
स्वर्ग की रानी की वन्दना करना और भेट
चढ़ाना छोड़ दिया , तब से हम कमी में से
गुज़र रहे हैं। तलवार और महँगाई ने हमें
चौपट कर डाला है। 19 महिलाएँ बोली, "ये
सब जब हम किया करते थे, तो हमारे पति
लोगों को मालूम था। 20 तब यिर्मयाह ने सभी
लोगों से कहा, 21 "जब तुम्हारे पूर्वज और

तुम, तुम्हारे राजा तुम्हारे गवर्नर नगरों और
सड़को पर पूजापाठ किया करते थे, तो
प्रभु देख नहीं रहे थे क्या ? 22 क्या उन्होंने
उसको याद नहीं किया ? इसलिए जब प्रभु
तुम्हारे घिनौने कामों को सह न सके, तब
तुम्हारा देश बिल्कुल सुनसान हो गया। यहाँ
तक कि लोग उपमा देकर शाप भी देते है।
23 पूजा-पाठ कर तुम सुश्टिकर्ता के खिलाफ़
अपराध करते थे। तुम उनके बताए गए रास्ते
पर नहीं चले, इसी का परिणाम ये मुसीबतें हैं।
24 फिर यिर्मयाह ने उन लोगों और महिलाओं
से कहा,"सारे मिस्र में रहनेवाले यहूदियों,
परमात्मा की वाणी को सुनो। 25 इस्राएल के
प्रभु सेनाओं के प्रभु कहते हैं, "तुमने और
तुम्हारी महिलाओं ने मन्नते मानी है और यह
कहकर उन्हें पूरा करते हैकि इमने स्वर्ग की
रानी के भजन कीर्तन की जो मन्नत मानी है,
उन्हें हम पूरा ज़रूर करेंगे और तुमने किया
भी। 26 लेकिन हे मिस्र देश में रहने वालें
सभी यहूदियो, प्रभु कहते क्या है, उस पर
कान लगाओ, आज के बाद पूरे मिस्र देश में
कोई यहूदी आदमी, मेरा नाम लेकर यह न
कह सकेगा, "प्रभु के जीवन की सौगन्ध"।
27 सुनो, अब मैं उनकी भलाई नहीं, नुकसान
ही की सोचूँगा। मिस्र देश में रहनेवाले, सभी
यहूदी, तलवार, महँगाई तब तक सहेंगे, जब
तक बर्बाद न हो जाएँ। 28 जो लोग तलवार
से बचकर और मिस्र देश में रहने के लिए
आए हुए सभी यहूदियों में से जो बच जाएँगे,
उन्हें मालूम पड़ेगा कि किसकी बात पूरी हुई,
उनकी या मेरी। 29 मैं इस बात का निशान
देता हूँ, प्रभु का कहना है, "मैं तुम्हें इसी
जगह सज़ा दूँगा। जिस से तुम्हें मालूम हो
जाएगा कि तुम्हारे नुक्सान के बारे जो मैंने
कहा है, वह पूरा होगा। 30 प्रभु कहते हैं देखो,
जैसा मैंने यहूदा के राजा सिदकिय्याह को
उसके दुश्मन अर्थात उसकी जान के खोजी
बेबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर के सुपुर्द कर
दिया, वैसे ही मैं मिस्र के राजा फिरौन होप्रा
को भी उसके दुश्मनों के अर्थात उसकी जान
के खोजियों के हाथ में कर दूँगा।

45 योशिय्याह के बेटे यहूदा के राजा
यहोयाकीम के राज्य के चौथे साल
में, जब नेरिय्याह क बेटा बारुक यिर्मयाह
नबी से भविष्यद्वक्ता से भविष्यद्वाणी की
ये बातें सुनकर किताब में लिख चुका था,
2 तब उसने उस से यह कहा, कि इस्राएल के
परमेश्वर याहवे तुम से यह कहते हैं, 3 "हे
बारुक, तुमने कहा, हाय मुझ पर! क्योंकि
याहवे ने मुझे दुख पर दुख दिया है; मैं कराहते
कराहते थक गया और मुझे कुछ सुकून नहीं
है। 4 तुम इस तरह से कहो, याहवे का कहना
है, कि देखो, इस पूरे देश को जिसे मैंने बनाया
है, उसे खुद बर्बाद कर डलूँगा। जिसे मैंने रोपा
था, उसे मैं खुद उखाड़ फेकूँगा। 5 इसलिए
सुनो, क्या तुम अपने लिए बड़ाई खोज रहे
हो? उसकी तलाश में मत रहो; क्योंकि याहवे
का कहना यह है, कि मैं सभी लोगों पर
मुसीबत डालूँगा; लेकिन जहाँ तुम जाओगे,
वहाँ मैं तुम्हारी जान बचाकर तुम्हें ज़िन्दा
रखूँगा।"

46 जिस संदेश को प्रभु ने तमाम देशों
के बारे में, यिर्मयाह को दिया, वह
यह है। 2 मिस्र के लिए, मिस्र के राजा फिरौन
नको की फौज जो फ़रात महानदी के किनारे
पर कर्कमीश में थी, और जिस पर बेबिलोन
के राजा नबूकदनेस्सर ने योशिय्याह के बेटे
यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे
साल में विजय हासिल की थी, उसी फ़ौज
के बारे में : 3 "ढालें और फरियाँ तैयार
करके युद्ध करने पास आ जाओ। 4 घोड़ो को
जुतवाओ और हे सवारो, घोड़ों पर चढ़कर,

टोप पहनकर खड़े हो जाओ। भालों को
तेज करो, झिलमों को पहन लो। 5 मैं उन्हें
क्यो घबराया हुआ देखता हूँ ? वे आश्चर्य
चकित होकर पीछे हट गए। उनके बहादुर
लोग गिरा दिए गए और उतावली से ऐसे
भागे, कि पीछे देखा तक नहीं। प्रभु कह रहे
हैं, कि चारों ओर डर ही डर है। 6 तेज से
चलनेवाला, भाग न सकेगा, न ही बहादुर
बच सकेगा, क्योंकि उत्तर दिशा में फरात
नदी के किनारे उन सभी ने ठोकर खाई और
गिर पड़े। 7 "यह कौन है, जो नील नदी की
तरह है और लहरों की तरह ऊपर बढ़ा चला
आता है ?" 8 मिस्र नील नदी की तरह बढ़ता
है और उसका पानी समुद्र की तरह उछाल
मारता है। उसका कहना है, मैं चढ़कर पृथ्वी
को मार दूँगा। मैं नगरों को वहाँ रहनेवालों
सहित बर्बाद कर डालूँगा। 9 हे मिस्री सवारो,
आगे बढ़ो, हे रथियों, रफ्तार तेज करो। हे
ढाल पकड़ने वालो कूशी और पूती वीरो, हे
धनुर्धारी लूदियो, चले आओ। 10 क्योंकि वह
समय प्रभु के बदला लेने का होगा, जिस में
वह अपने दुश्मनों से बदला लेंगे। तलवार
खाकर तृप्त होगी और उनका खून पीकर
छक जाएगी। क्योंकि उत्तर के देश में फ़रात
महानद के तट पर सेनाओं के याहवे प्रभु का
यश है। 11 हे मिस्र की कुमारी कन्या, गिलाद
को जाकर बलसान दवाई लो। तुम बेकार ही
में इधर-उधर इलाज कराती फिरती हो, तुम
ठीक न हो सकोगी। 12 क्योंकि सभी देशों के
लोगों ने सुना है कि तुम नीच हो गई हो और
पृथ्वी तुम्हारी चिल्लाहट से भर गई है। वीर
से वीर ठोकर खाकर गिर पड़े। वे दोनों एक
संग गिर पड़े। 13 प्रभु ने यिर्मयाह से यह भी
कहा कि बेबिलोन का राजा नबूकदेनेस्सर
किस तरह आकर मिस्र देश को मार लेगा।
14 "मिस्र में एलान करो, और मिग्दोल में
सुनाओ, हाँ और नोप तथा तहपन्हेस में यह
सुनाकर यह कहो कि खड़े होकर तैयार हो
जाओ, क्योंकि तुम्हारे चारों ओर सब कुछ
तलवार खा चुकी है। 15 तुम्हारे ताकतवर
लोग खतम क्यों हो गए ? इसलिए कि प्रभु ने
उन्हें ढकेल दिया। 16 उसने बहुतों को ठोकर
खिलाई। वे एक दूसरे पर गिर पड़े और
कहने लगे, उठो, चलो हम अन्धेर करने वाले
की तलवार के डर से अपने -अपने लोगों
और अपनी अपनी जन्मभूमि में फिर लौट
जाँए। 17 वहाँ वे ऊँची आवाज़ में कहते हैं,
मिस्र का राजा फिरौन बर्बाद हुआ, क्योंकि
उसने अपना कीमती वक्त खो दिया है।
18 वह राजाधिराज जिनका नाम सेनाओं का
प्रभु है, उनका कहना है, जैसा ताबोर दूसरे
पहाड़ो में, और कर्मल समुद्र के किनारे, वैसा
ही वह आएगा। 19 हे मिस्र की रहनेवाली
बेटी गुलामी में जाने का सामान तैयार करो,
क्योंकि नोप नगर उजाड़ और ऐसा भस्म
होगा कि उसमें कोई रहेगा नहीं। 20 मिस्र
खूबसूरत बछिया है, लेकिन उत्तर दिशा से
बर्बादी आ रही है, यहाँ तक कि आ ही गई
है। 21 उसके जो सिपाही किराए पर आए हैं,
वे पाले पोसे बछड़े की तरह हैं। उन्होंने मुँह
मोड़ा और एक संग भाग गए, वे खड़े नहीं
रहे, क्योंकि उनकी मुसीबत का दिन और
सज़ा पाने का समय आ चुका है। 22 "उसकी
आहट साँप के भागने की तरह होगी, क्योंकि
वे पेड़ों के काटने वालो की फौज और
कुल्हाड़ियाँ लिए हुए उसके खिलाफ़ चढ़
आएँगे। 23 प्रभु का कहना है, "चाहे उसका
जंगल बहुत घना भी हो, लेकिन फिर भी
काट डाला जाएगा, क्योंकि उनकी गिनती
बड़ी है। 24 मिस्री कन्या शर्मिन्दा होगी; वह
उत्तर दिशा के लोगों के अधीन में कर दी
जाएगी।" 25 इस्राएल के परमेश्वर याहवे

का कहना है, "देखो, मैं नगरवासी आमोन और फिरौन राजा और मिस्र को उसके सभी देवताओं और राजाओं सहित और फिरौन को उन समेत जो उस पर भरोसा रखते हैं, सजा देने पर हूँ। 26 मैं उन्हें बेबिलोन के राजा और उसके कार्यकर्ता के अधीन कर दूँगा, जो उनकी जान के पीछे पड़े हैं। उसके बाद वह प्राचीन काल की तरह फिर से बसा दिया जाएगा। 27 "लेकिन हे मेरे दास याकूब, डरो नहीं, और हे इस्राएल, घबराना मत, क्योंकि मैं तुम्हें और तुम्हारे वंश को गुलामी से छुड़ाऊँगा। याकूब लौटकर निडर और सुखी रहेगा। उसे कोई डरा न सकेगा। 28 हे मेरे दास याकूब, प्रभु की यह वाणी है, कि तुम डरो नहीं, क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूँ। हालांकि मैं उन सभी देशों के लोगों को खतम करूँगा, जिनमें मैंने तुम्हें ज़बरदस्ती निकाल दिया है, तौभी तुम्हारा अन्त न करूँगा। तुम्हारी ताड़ना संभलकर करूँगा, लेकिन तुम्हें बिना दण्ड दिए न छोड़ूँगा।

47 फिरौन द्वारा ग़ज्जा नगर पर विजय से पहले पलिश्तियों के लिए यिर्मयाह नबी के पास प्रभु का यह संदेश पहुँचा। 2 प्रभु कहते हैं: देखो, उत्तर दिशा से उमण्डनेवाली नदी देश को उस सब समेत जो उसमें है, और निवासियों समेत नगर को डुबो लेगी। तब मनुष्य चिल्लाएँगे और हाय -हाय करेंगे। 3 दुश्मनों के ताकतवर घोड़ो की टाप, रथों के तेज से चलने और उनके पहियों के चलने की आवाज़ सुनकर पिता इतना परेशान हो जाएगा, कि अपना मुँह मोड़कर अपने बच्चों को देखेगा ही नहीं। 4 सभी पलिश्तियों की बर्बादी का समय पास आ चुका है। सोर और सिदोन के सभी बचे हुए रहने वाले हैं, उनको भी बर्बाद करने पर है। 5 गाज़ा के लोग सिर पर से बाल उतार चुके हैं।अश्कलोन जो उजड़ गया है। उनकी घाटियों में बचे हुए, हे लोगो,तुम कब तक अपनी देह चीरते रहोगे? " 6 हे याहवे की तलवार, तुम कब तक शान्त न होगी? अपनी मियान में चली जाओ, सुस्ताओ और थम जाओ! 7 तुम कैसे शान्त रह सकती हो? प्रभु ने तुम्हें आज्ञा देकर अश्कलोन और समुद्र तट के खिलाफ़ ठहराया है।

48 मोआब के बारे में इस्राएल के परमेश्वर का कहना हैः "नबो पर हाय, क्योंकि वह बर्बाद हो चुका है। किर्यातैम की आशा न रही, वह ले लिया गया है; ऊँचा किला मायूस हो चुका है। 2 मोआब की बड़ाई जाती रही। हेशबोन में उसके नुक्सान की कल्पना की गई है, आओ, हम उसे ऐसा नाश करें, कि वह राज्य न रहे। हे मदमेन, तुम भी वीरान हो जाओगे। तलवार तुम्हारे पीछे रहेगी। 3 "होरोनैम से चिल्लाहट की आवाज़ सुनो। नाश और बड़े दुख का शब्द सुनाई दे रहा है। 4 मोआब बर्बाद हो रहा है। उसके शिशुओं की चिल्लाहट सुनाई दे रही है। 5 क्योंकि लुहीत की चढ़ाई में लोग लगातार रोते हुए चढ़ेंगे। और होरोनैम की उतार में नाश की चिल्लाहट का संकट हुआ है। 6 भाग जाओ, अपनी जान बचाओ। उस अधमूए पेड़ की तरह बन जाओ, जो जंगल में पाया जाता है। 7 क्योंकि तुम जो अपने कामों और दौलत पर भरोसा रखते हो, इसी वजह से भी पकड़े जाओगे। कमोश देवता भी अपने पुरोहित और गवर्नरों सहित गुलामी में जाएगा। 8 प्रभु के कहने के अनुसार, बर्बाद करने वाले तुम्हारे हर एक नगर पर हमला करेंगे और कोई नगर बच न सकेगा। घाटी वाले और पहाड़ की चौरस ज़मीन वाले दोनों ही नष्ट किए जाएँगे। 9 "मोआब के पंख लगा दो, ताकि वह उड़कर दूर हो जाए, क्योंकि

उसके नगर ऐसे उजाड़ हो जाएँगे कि उनमें
कोई न बसने पाएगा। 10 जो व्यक्ति प्रभु का
काम आलस्य से करता है। सज़ा के लायक
है और वह भी जो युद्ध में दुश्मन को मारने
में ढीला है। 11 मोआब बाल्यकाल से सुख में
है। उसके नीचे तलघट है, उसे एक बर्तन से
दूसरे बर्तन में उण्डेला नहीं गया है और न ही
वह गुलामी में गया है। इसीलिए उसका स्वाद
बना हुआ है। उसकी महक भी वैसी ही बनी
रहती है। 12 इसलिए प्रभु कहते हैं; ऐसा समय
आने वाला है, कि उसे उण्डेलने के लिए मैं
लोगों को भेजूँगा ,वे लोग उसे उण्डेलेंगे। जिन
घड़ो में रखा हुआ है, उनको छूछा करके
छोड़ दिया जाएगा। 13 तब जैसे इस्राएल के
कुनबे को बेतेल से शर्मिन्दा होना पड़ा जिस
पर वे भरोसा रख रहे थे, वैसे ही मोआबी
लोग कमोश से शर्मिन्दा होंगे। 14 तुम यह
कहने की हिम्मत कैसे करोगे कि तुम लोग
बहादुर और अच्छे लड़ाकू हो। 15 मोआब तो
बर्बाद हुआ, उसके नगर जलाए जा चुके हैं।
उसके चुने हुए जवान मारे जाने को उतर गए।
यह संदेश उस प्रभु का है, जो राजा की तरह
विराजमान है। 16 मोआब की मुसीबत पास
आ चुकी है। ऐसे दिन बहुत जल्दी आने वाले
है। 17 उसके आस-पास के सभी रहनेवालो,
और उसके मशहूरपन को जाननेवालो, उसके
लिए विलाप करो। हाय कहकर दुखित हो,
कि वह मजबूत सोंटा और खूबसूरत छड़ी
टूट कैसे गई? 18 हे दीबोन की निवासनी,
तुम अपना बड़पन छोड़कर प्यासी बैठी रहो।
क्योंकि मोआब का नाश करनेवाले ने तुम पर
हमला करके तुम्हारे किलों को बर्बाद किया
है। 19 हे अशेएर की रहनेवाली, तुम रास्ते
में खड़ी होकर ताकती रहो। जो भागता है
उससे और जो बच निकलती है, उस से पूछो
कि हुआ क्या। 20 मोआब की उम्मीद जाती
रहेगी, वह घबरा गया। तुम हाय हाय करो
और चिल्लाओ; अर्नोन में भी यह एलान करो,
कि मोआब नष्ट हुआ है। 21 चौरस ज़मीन
के देश में होलोन, यहसा, मेपात, 22 दीबोन,
नबो, बेतिदिबलातैम 23 और किर्य्यातैम,
बेलगामूल, बेतमोन, 24 और करिय्योत,
बोस्रा और क्या दूर क्या पास, मोआब देश के
सभी नगरो में सज़ा का आदेश पूरा हुआ है।
25 प्रभु कहते है, "मोआब की सींग कट गई
और हाथ कट गया है। 26 उसको मतवाला
करो, क्योंकि उसने प्रभु के खिलाफ़ घमण्ड
किया है, इसलिए मोआब अपनी उल्टी में
लौटेगा और उसकी हँसी उड़ेगी। 27 क्या
तुमने भी इस्त्राएल की हँसी नहीं उड़ाई थी?
क्या वह चोरों के बीच पकड़ा गया था कि
जब तुम उसकी चर्चा करते, तब तुम सिर
हिलाते थे ? 28 "हे मोआब के रहनेवालो,
अपने अपने नगर को छोड़कर चट्टान की
दरार में बसो। उस पण्डुकी की तरह हो जो
गुफा के मुँ की एक ओर घोंसला बनाती
हो। 29 हमने मोआब के घमण्ड के बारे में
सुना है। सभी लोग भी उसके अहंकार के
बारे में जानते हैं। 30 प्रभु कहते है, मैं उसके
गुस्से को भी जानता हूँ, कि वह बेकार
है। उसके ज़्यादा बक-बक करने से कुछ
अन्तर नहीं। 31 इसलिए मैं मोआबियों के
लिए हाय-हाय करूँगा। मैं सारे मोआबियों
के लिए चिल्लाऊँगा; कीर्हेरेस के लोगों के
लिए विलाप किया जाएगा। 32 हे सिमबा
की दाखलता, मैं तुम्हारे लिए याजेर से भी
ज़्यादा रोऊँगा तुम्हारी डालियाँ तो तालाब
के पार तब बढ़ गयी। यहाँ तक कि याजेर
के ताल तक भी पहुँची थी, लेकिन नाश
करनेवाला तुम्हारे गर्मी के मौसम के फलो
पर और तोड़ी हुई दाखों पर भी टूट पड़ा
है। 33 फलवाले बगीचों से और मोआब के

देश से खुशी जा चुकी है। मैंने ऐसा भी किया
कि दाखरस के कुण्डों में कुछ भी अंगूर
का रस बाकी न रहा। लोग ललकारते हुए
अंगूर न कुचलेंगे। जो ललकार होनेवाली है
वह अब न होगी। 34 हेशबोन की चिल्लाहट
सुनकर लोग एलाले और यहस तक, और
सोआर से होरोनैम और एग्लतलीशिया तक
भी शोर मचाते हुए भागते गए। क्योंकि निम्रीम
का पानी भी सूख चुका है। 35 प्रभु का कहना
है, कि मैं ऊँचे स्थान पर चढ़ावा चढ़ाने और
देवताओं के लिए धूप जलाना, दोनों ही को
खतम कर दूँगा। 36 इसलिए मेरा मन मोआब
और कीर हेरेस के लोगों के लिए बाँसुली की
तरह रो-रोकर अलापता है; क्योंकि उन्होंने
जो कुछ कमाकर बचाया है, वह बर्बाद हा
चुका है। 37 क्योंकि सभी के सिर गँजे किए
गए और सभी की दाढ़ियाँ नोची गई। सभी
के हाथ चिरे हुए और कमरों में टाट बन्धा
हुआ है। 38 मोआब के सभी घरों की छतों
पर और सभी चौराहों में रोना -धोना मचा
हुआ है, क्योंकि मंने तुच्छ बर्तन की तरह
तोड़ डाला है। 39 मोआब घबरा कैसे गया!
हाय, हाय करो! क्योंकि उसने शर्मिन्दा होकर
किस तरह पीठ फेर ली है। इस तरह मोआब
के चारों ओर के सभी रहनेवाले उसकी हँसी
उड़ाएँगे और घबरा जाएँगे। 40 क्योंकि प्रभु
कहते हैं, "देखो, वह उकाब की तरह उड़ेगा
और मोआब के ऊपर अपने पंख फैलाएगा।
41 करिय्येत लिया जा चुका है और गढ़वाले
दूसरे नगरों के हाथ में पहुँच गया है। उस
दिन मोआबी वीरों के मन जच्चा महिला के से
हो जाएँगे। 42 मोआब इस तरह तितर -बितर
होगा, कि उसका दिल टूट जाएगा, क्योंकि
उसने प्रभु के विरोध में सिर उठाया है। 43 प्रभु
कहते हैं, "हे मोआब के रहनेवाले, तुम्हारे
लिए डर गड्ढे और फन्दे ठहराए गए हैं।
44 व्यक्ति इस से भागेगा, वह गड्ढे में गिरेगा
और जो कोई गड्ढे में से निकल, वह फन्दे में
फँसेगा, क्योंकि मैं मोआब के दण्ड का दिन
उस पर लाऊँगा। 45 जो भागे हुए हैं, उन्होंने
हेशबोन में शरण ली है, लेकिन हेशबोन से
आग और सीहोन के बीच से लौ निकली,
जिससे मोआब देश के कोने और बलवैयों
के चोण्डे भस्म हो गए हैं। 46 हे मोआब तुम
पर हाय! कमोश की प्रजा बर्बाद हो चुकी है
क्योंकि तुम्हारी महिलाएँ और पुरूष दोनों ही
गुलामी में गए हैं। 47 तौभी प्रभु का कहना है,
कि अन्त के समय में मैं मोआब को गुलामी
से लौटा लाऊँगा।

49 अम्मोनियों के बारे प्रभु का संदेश;
"क्या इस्राएल के पास बेटा नहीं है
? क्या उसका कोई वारिस नहीं है ? फिर
मिल्काम क्यों गाद के देश का अधिकारी
हुआ ? उसकी प्रजा उसके नगरों में क्यों
बस गई है? 2 प्रभु की वाणी यह है ऐसा
समय आएगा कि मैं अम्मोनियों के रब्बा
नामक नगर के खिलाफ़ जंग की ललकार
सुनवाऊँगां वह उजड़ेगा और खण्डहर बनेगा
उसकी बस्तियों में आग लगा दी जाएगी। तब
जिन लोगों ने इस्राएलियों के देश को अपना
लिया है, उनके देश को इस्राएली अपना लेंगे।
3 हे हेशबोन, हाय-हाय करो, क्योंकि यह
नगर बर्बाद हो चुका है। हे रब्बा की बेटियो,
आवाज ऊँची करो, कमर में टाट बाँधो,
छाती पीटते इधर दौड़ो, क्योंकि मल्काम
अपने पुरोहितों और गवर्नरों के साथ गुलामी
में जाएगा। 4 हे भटकने वाली बेटी तुम्हें
अपने देश की तराईयों पर विशेषकर अपनी
अच्छी फसल देनेवाली तराई पर घमण्ड
क्यों है ? अपनी दौलत पर भरोसा रखते
हुए क्योंकहती हो, कि मेरे ऊपर कौन हमला
करेगा। 5 प्रभु सेनाओं के याहवे एलान करते

हैं; "देखो मैं तुम्हारे चारों ओर के सभी
रहनेवालों की ओर से तुम्हारे मन में डर
पैदा करने पर हूँ और तुम्हारे लोग अपने
-अपने सामने की ओर ढकेले जाएँगे। जब
वे मारे-मारे फिरेंगे, कोई उन्हें एक जगह न
लाएगा। 6 लेकिन उसके बाद में अम्मोनियों
को गुलामी से वापस लाऊँगा, यह प्रभु का
कथन है। 7 सेनाओं के प्रभु एदोम के बारे
में कहते हैं, "क्या तेमान में कुछ बुद्धि नहीं
रही? क्या वहाँ के ज्ञानियों की चाल बेकार
हो गई ? 8 हे ददान के निवासियो, भागो, लौट
आओ, वहीं छिपकर बस जाओ। क्योंकि
जब मैं एसाव को सज़ा देने लगूँगा, तब उस
पर भारी मुसीबत आ पड़ेगी। 9 यदि अंगूर
तोड़नेवाले तुम्हारे पास आते, तो क्या कहीं
कहीं उन्होंने अंगूर को छोड़ न दिया होता
? यदि चोरों का आना रात में होता तो
अपने जी भर रक्कम लूट कर न ले जाते
? 10 क्योंकि मैंने ऐसाव को उघारा है, मैंने
उसकी छिपने की जगहों को प्रगट किया
है, यहाँ तक कि वह छिप न पाया । उसके
वंश, भाई और पड़ोसी सभी खतम हो चुके
हैं। 11 अपने अनाथ बच्चों को छोड़ जाओ,
मैं उन्हें जिला दूँगा। तुम्हारी विधवाओं को
मुझ पर भरोसा रखना चाहिए। 12 क्योंकि प्रभु
कहते हैं, देखो, जो इसके लायक न थे, कि
कटोरे में से पीएँ, उन्हें ज़रूर पीना पड़ेगा।
फिर तुम क्या बिना आरोप ठहराए जाकर
बच सकोगे ? 13 प्रभु कहते हैं, मैंने इरादा
कर लिया है, कि बोस्त्रा इस तरह उजड़
जाएगा, कि लोग दाँतो तले उँगली दबा लेंगे।
वे उसका उदाहरण देकर उसकी बुराई करेंगे
और कोसेंगे। उसके सभी गाँव हमेशा के
लिए वीरान हो जाएँगा। 14 मैंने प्रभु से संदेश
पाया है और साथ ही एक संदेशवाहक को
भी ठहराया गया है, कि इकट्ठे होकर एदोम
पर हमला बोल दें और उस से लड़ने के
लिए उठें। 15 मैंने तुम्हें देशों में छोटा और
मनुष्यों में तुच्छ कर दिया है। 16 हे चट्टान
की दरारों में बसे हुए, हे पहाड़ी के शिखर
पर किला बनानेवाले तुम्हारे भयानक चेहरे
और घमण्ड ने तुम्हें धोखा दिया है। चाहे
तुम उकाब की तरह अपना अड्डा ऊँची जगह
पर बनाओ फिर भी मैं तुम्हें उतार लाऊँगा
, यह प्रभु कहते हैं। 17 एदोम के उजाड़े
जाने के बाद वहाँ से गुज़रने वाले आश्चर्य
से भर जाएँगे और उसके दुख को देखकर
खुश होंगे। 18 प्रभु कहते हैं, " जो हालात
सदोम, अमोरा और उसके आस-पास के
शहरों की हुई थी, वैसी ही उसकी होगी।
उसमें कोई इन्सान नहीं टिकेगा। 19 देखो,
वह शेर की तरह यर्दन नदी के आस-पास
के घने जंगलों से सदा की चराई पर हमला
बोलेगा। मैं उन्हें उनके सामने से तुरन्त भगा
दूँगा। तब मैं अपनी इच्छा से किसी को भी
उनके ऊपर अधिकारी बना डालूँगा। मेरी
तरह और कौन है ? क्यों कोई मुझ पर
मुकदमा दायर कर सकता है? वह गड़रिया
कहाँ है जो मेरा मुकाबला कर सके? 20 देखो,
प्रभु ने एदोम के विरूद्ध क्या योजना बनाई
है। तेमान के रहनेवालों के विरूद्ध कैसी
कल्पना की है? वह भेड़ -बकरियों को
ज़रूर घसीट ले जाएगा। वह चराई जाने
वाली भेड़-बकरियों से ज़रूर खाली करेगा।
21 उनके गिरने के शब्द से पृथ्वी थरथरा
जाएगी ।ऐसी चिल्लाहट मच जाएगी, जिसकी
आवाज़ लाल समुद्र तक पहुँचेगी। 22 देखो,
वह उकाब की तरह उड़कर बोस्त्रा पर पंख
फैलाएगा। उस दिन एदोमी शूरवीरों का मन
जच्चा का सा हो जाएगा। 23 हमात और अर्पद
की आशा, दमिश्क के बारे में टूट चुकी है,
क्योंकि उन्होंने अच्छा समाचार नहीं सुना है।

वे गल चुके हैं, समुद्र पर चिन्ता है, वही
कभी भी शान्त न होगा। 24 कमज़ोर होकर
दमिश्क भागता-फिरती है। वह थर -थर काँप
रही है। उसे जच्चा की तरह दर्द हो रहा है।
25 हाय, वह प्रशंसा की वह नगरी मेरी खुशी
का नगर.कैसा उजड़ गया है! 26 सेनाओं के
प्रभु का कहना है, "उसके जवान चौराहों
पर गिराएँ जाएँगे। सभी सैनिक शक्तिहीन हो
जाएँगे। 27 मैं दमिश्क की शहरपनाह में आग
लगा दूँगा, जिससे बेन्हदद के राज भवन जल
जाएँगे। 28 केदार और हासोर के राज्यों के
बारे जिन्हें बेबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर
ने मार लिया, प्रभु कहते हैं। उठो और केदार
पर हमला बोल दो, पूरब के लोगों को बर्बाद
करो। 29 वे उनके डेरे और भेड़-बेकरियाँ ले
जाएगा। उनके तम्बू और सभी बर्तन उठाकर
ऊँटो को भी हाँक ले जाएँगे, और उन लोगों
से पुकार कर कहेंगे, चारो तरफ डर ही डर
है। 30 प्रभु कहते हैं: हे हासोर के निवासियो
भाग जाओ। दूर - दूर मारे फिरो, कहीं
जाओ और छिप जाओ। क्योंकि बेबिलोन
के राजा नबूकदनेस्सर ने तुम्हारे खिलाफ़
सोचा है और योजना बनाई है। 31 प्रभु कहते
हैं, उठकर उन चैन से रहनेवाले देश- देश
के लोगों पर चढ़ाई करो, जो डरते नहीं है,
और बिना दरवाज़े और बेण्डे के यों ही बसे
हुए हैं। 32 उनके ऊँट और बड़ी संख्या में
गाय- बैल और भेड़ बकरियाँ लूट में जाएगी,
क्योंकि मैं उनके गाल के बाल मुंडानेवालों
को उड़ाकर सब दिशाओं में तितर- बितर
करूँगा और चारों ओर से उन पर मुसीबत
डालूँगा, यह प्रभु कहते है। 33 हासोर गीदड़ों
के रहने की जगह होगी और सदा के लिए
उजाड़ हो जाएगा, वहाँ न कोई मनुष्य रहेगा,
और न कोई इन्सान उसमें टिकेगा। 34 यहूदा
के राजा सिदकिय्याह के राज्य को शुरूआत
में प्रभु का यह संदेश यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता
के पास एलाम के बारे पहुँचा। 35 सेनाओं के
प्रभु कहते हैं:मैं एलाम के धनुष को जो उनके
पराक्रम का खास कारण है, तोड़ूँगा 36 और
मैं आकाश के चारों ओर से हवा बहाकर उन्हें
चारो दिशाओं की ओर यहाँ तक तितर-बितर
करूँगा कि ऐसा कोई देश न होगा, जिसमें
एलामी भागते हुए न आएँ। 37 मैं एलाम को
उनके दुश्मनों और उनकी जान के खोजियों
की तरह परेशान करूँगा, और उन पर अपना
गुस्सा भड़काकर मुसीबत लाऊँगा। प्रभु का
कहना है कि तलवार को उन पर चलवाते
चलवाते मैं उन्हें समाप्त कर डालूँगा। 38 मैं
एलाम में अपना राजासन रखकर उनके राजा
और गवर्नरों को नष्ट करूँगा। 39 लेकिन प्रभु
का यह संदेश भी है कि आखिर के दिनों में
मैं एलाम को गुलामी से लौटा ले आऊँगा।

50 बेबीलोन और कसदियों के देश के
बारे में प्रभु ने यिर्मायाह भविष्यद्वक्ता
के मुँह से यह कहलाया, 2 "सभी देशों में
एलान करो और झण्डा गाड़े। कुछ छिपाओ
मत कि बेबिलोन लिया जा चुका है। बेल
देवता को शर्म का मुकाबला करना पड़ा।
भरोदक घबरा उठा। बेबिलोन की मूर्तियाँ
शर्मिन्दा हुई हैंऔर बेडौल मूर्तियाँ परेशान हो
गयीं। 3 क्योंकि उत्तर दिशा से एक देश के
लोग उस पर हमला बोलकर उसके देश को
यहाँ तक उजाड़ देगी कि क्या इन्सान, क्या
जानवर, उन में से कोई भी न बचेगा, सभी
नौ दो ग्यारह ही जाएँगे। 4 प्रभु की वाणी है
कि उन दिनों में इस्राएली और यहूदा एक
साथ आएँगे। रोते बिलखते वे अपने प्रभु
याहवे को ढूँढने के लिए आ जाएँगे। 5 वे
सिय्योन की ओर चेहरा किए हुए उसका
रास्ता पूछते और आपस में यह कहते हुए
आएँगे, आओ हम प्रभु से मेल कर ले। हम

उनसे ऐसी वाचा बाँधे, जिसे कभी भुलाया
न जा सके और सदा बनी रहे। 6 मेरी प्रजा
खोई भेड़ों की तरह है। उनके चरवाहों ने
उन्हें गुमराह कर दिया और पहाड़ों पर भटका
दिया। वे इधर-उधर घूम रहे हैं। 7 जितनों
ने उन्हें पा लिया, वे उनको खा गए। उनके
सताने वाले बोले, "इसमें हमारा कोई गुनाह
नहीं है।; क्योंकि उन लोगों ने प्रभु के विरोध
में काम किया है जो हमारे आधार थे। वही
हमारे पुरखों का सहारा थे। 8 बेबिलोन के
बीच मे से निकलो। कसदियों के देश से
बाहर आओ। जिस तरह बकरे और अपने
झुण्ड के अगुवे होते है। , उस तरह के बनो।
9 क्योंकि देखो, मैं उत्तर के देश से शक्तिशाली
लोगों को उनकी मण्डली बेबिलोन पर चढ़ा
ले आऊँगा। वे उसके खिलाफ़ खड़े होंगे।
उसी दिशा से वह ले लिया जाएगा। उसके
तीर चालक बहादुर व्यक्ति की तरह होंगे।
उनमें से कोई भी बिना कारण न जाएगा।
10 कसदियो का देश ऐसा लुटेगा कि सभी
लूटने वाले तृप्त हो जाएँगे, यह प्रभु का
कहना है। 11 हे मरे हिस्से लूटनेवालो, तुम
जो मेरे लोगों पर खुशी मनाते और घमण्ड
करते हो और घास चरनेवाली बछिया की
तरह उछलते और ताकतवर घोड़ों की तरह
हिनहिनाते हो, 12 तुम्हारी माँ बहुत शर्मिन्दा
होगी और उसक मुँह काला हो जाएगा,
क्योंकि सभी देशों में वह तुच्छ होगी। वह
जंगल, सूखी ज़मीन और मरुस्थल ठहरेगी।
13 प्रभु के गुस्से की वजह से वह देश सूख
जाएगा वह उजाड़ होगा। जो कोई बेबिलोन
के पास से गुजरेगा, वह अचम्भा करेगा और
उसे पीड़ित देखकर ताली बजाएगी। 14 हे
सभी धनुष चलाने वालो, बेबिलोन के चारों
ओर इकट्ठा हो जाओ। उस पर तीर चलाओ,
उन्हें मत रख छोड़ो, क्योंकि उसने प्रभु के
खिलाफ़ अपराध किया है। 15 चारों ओर से
उस पर ललकार सुनाओ, उसने हार मान
ली है। उसके कोट गिरा दिए गए है उसकी
शहरपनाह ढा दी गई है, क्योंकि प्रभु उससे
अपना बदला लेंगे। इसलिए तुम भी उससे
अपना बदला लो। जिस तरह उसने किया,
तुम भी उसके साथ करो। 16 बेबीलोन में से
बोने वाले और काटने वाले, दोनों ही को
नष्ट कर डालो। वे दुख देनेवाली तलवार के
डर से अपने लोगों की ओर फिरें और अपने
देश को भाग जाएँ। 17 इस्राएल भगाई हुई
भेड़ों की तरह है। शेरों ने उसे दौड़ा दिया।
पहले अश्शूर के राजा ने उसे खाया, तब
बेबिलान के राजा नबूकदनेस्सर ने उसकी
हड्डियाँ तोड़ीं। 18 इसलिए इस्त्राएल के स्वामी
का कहना है, "देखो जैसे मैंने अश्शूर के राजा
को सज़ा दी थी, वैसे ही देश समेत बेबिलोन
के राजा को सज़ा दूँगां 19 हरी चरागाह मैं
इस्राएल को वापस लाऊँगा। वह कर्मेल और
बाशान में फिर चरेगां और एप्रैम के पहाड़ों
पर और गिलाद में मन भर कर खा सकेगा।
20 प्रभु कहते हैं, "उस समय इस्राएल का
अपराध ढूँढने पर भी न मिल सकेगा। यहूदा
के गुनाह की तलाश किए जाने पर हाथ
कुछ न लगेगा, क्योंकि जिनको मैं बचाऊँ
उनके अपराध भी माफ कर दूँगा। 21 तुम
मरातैम देश और पकोद नगर में रहनेवालों
पर हमला कर दो। इन्सानों की जान ले लो,
दौलत को बर्बाद कर डालो। मेरे आदेश
के अनुसार तुम करो। 22 कान लगाओ, उस
देश में जंग और बर्बादी की सी आवाज़ आ
रही है। 23 जो हथौड़ा सारी दुनिया के लोगों
को मिटा डालता था, वह किस तरह काट
डाला गया है। बेबीलोन सभी देशों के बीच
उजाड़ पड़ा है। 24 हे बेबिलोन, मैंने तुम्हारे
लिए जाल बिछाया है और तुम बिना जाने

बूझे उस में फँस गए । ढूँढकर तुम्हें पकड़ लिया गया है, क्योंकि तुम सृष्टिकर्ता की
खिलाफ़त करते थे। 25 प्रभु ने अपने हथियारों
का भण्डार खोलकर अपना गुस्सा प्रगट
करने का सामान निकाल लिया है। क्योंकि
उन्हें कसदियों के देश में एक काम करना
है। 26 दुनिया के दूर कोने से आओ और
उसकी बखारियों को खोलो। उसको ढेर बना
डालो। ऐसा नाश करो, कि कुछ भी न बचे।
27 बैलों को मार डालो, वे मारे जाने की जगह
उतर जाएँ। उन पर अफसोस, क्योंकि उनकी
सज़ा पाने का समय आ गया है। 28 सुनो,
बेबिलोन के देश में से भाग जाने वालों की
सी आवाज़ सुनाई देती है, जो सिय्योन में यह
समाचार देने के लिए दौड़ते -भागते आए है
कि हमारे सृष्टिकर्ता अपने भवन का बदला ले
रहे हैं। 29 सभी धनुर्धारियों को बेबिलोन के
विरोध जमा करो। उनके चारों ओर छावनी
बिछाओ। वहाँ से कोई बच कर न निकले।
उसके काम का बदला उसे दो। उसने जैसा
किया है, वैसा ही उसके साथ किया जाए।
उसने सृष्टिकर्ता के विरोध में घमण्ड किया
है। 30 इसलिए उसके जवान चौकों में गिराए
जाएँगे और सभी सैनिकों की आवाज़ बन्द
हो जाएगी। 31 सेनाओं के प्रभु कहते हैं, हे
घमण्डी, मैं तुम्हारे खिलाफ़ हूँ। तुम्हारी सज़ा
का समय आ गया है। 32 घमण्डी ठोकर
खाएगा और गिरेगा। उसे कोई नहीं उठाएगा।
मैं उसके नगरों में आग लगाऊँगा, और चारों
आरे जो भी है भस्म हो जाएगा। 33 सेनाओं
का प्रभु कहते है, इस्राएल और यहूदा, दोनों
ही पिसे हुए है। जिन्होंने उसे गुलाम बनाया,
वे उन्हें पकड़े रहते हैं और जाने नहीं देते।
34 उनको छुड़ा लेनेवाले ताकतवर है। उनका
नाम सेनाओं के याहवे (प्रभु) है। वह उन
लोगों का मुकदमा अच्छी तरह से लड़ेंगे,
ताकि पृथ्वी को चैन दें। लेकिन बेबिलोन
के रहने वालो को घबरा दें। 35 याहवे प्रभु
का कहना है, "कसादियो और बेबिलोन के
हाकिम, पण्डित आदि सभी रहनेवालो को
हिंसा का सामना करना पड़ेगा। 36 ज्यादा
बढ़ा-चढ़ाकर बोलनेवालो को तलवार का
मुकाबला करना पड़ेगा और वे बेवकूफ
बनेंगे। उसके बहादुर लोगों पर भी तलवार
चलेगी और वे घबरा जाएँगे। 37 उसके सवारों
और रथियों तथा दूसरे तमाम लोग घात किए
जाएँगे। वे स्त्रियों की तरह हो जाएँगे। उसके
भण्डारों पर तलवार चलेगी। वे लुट जाएँगे।
38 उसके तालाब सूख जाएँगे, क्योंकि वह
खुदी हुई मूरतों से भरा देश है। वे अपने
डरावनी मूर्तियों पर दिवाने हैं। 39 इसलिए
सूखे देश के जानवर सियारों से मिलकर वहीं
रहेंगे। उसमें शुतुमुर्ग रहेंगे, हमेशा-हमेशा तक
वह वीरान ही रहेगा। 40 प्रभु का कहना है, कि
सदोम और अमोरा और उसके आस-पास
की जगहों की जैसी हालत उस समय हुई
थी, जब प्रभु ने उन्हें उलट दिया था, वैसी
ही हालत बेबिलोन की होगी, यहाँ तक कि
उस में कोई इन्सान रह न पाएगा। 41 "सुनो,
उत्तर की ओर से एक देश के लोग आते
हैंऔर दुनिया के कोने से एक बड़ी संख्या
में एक देश के लोग और बहुत से राजा
हमला बोल देंगे। 42 वे धनुष और बर्छी लिए
हुए हैं वे जालिम हैं और समुन्दर की तरह
गरजते है। वे घोड़ों पर चढ़े हुए तुम्हें बेबिलोन
की बेटी (लोग) के खिलाफ़ खड़े होंगे।
43 उनकी खबर सुनते ही बेबिलोन का राजा
घबरा जाएगा। और उसको जच्चा का सा दर्द
होगा। 44 "सुनो, वह शेर की तरह आएगा,
जो यर्दन के आस-पास के घने जंगल से
निकलकर मजबूत भेड़शाला पर चढ़े, लेकिन
मैं उनको उसके सामने से तुरन्त भगा दूँगा,

तब जिसका चुनाव मैं कर लूँ उसी को उन
पर अधिकारी ठहराऊँगा। देखो, मेरी तरह
है कौन ? क्या कोई मुझ पर मुकदमा दायर
करेगा? कौन सा चरवाहा मेरा मुकाबला कर
सकेगा? 45 इसलिए सुनो कि प्रभु ने बेबिलान
के विरूद्ध क्या कल्पना की हैः ज़रूर वह
भेड़ बकरियों के बच्चों को घसीट लाएँगे। वह
उनकी चराईयों को भेड़ -बकरिया से खाली
कर डालेंगे। 46 बेबिलोन के लूट लिए जाने
के शब्द से पृथ्वी काँप उठी है, और उसकी
चिल्लाहट देशों में सुनाई पड़ती है।

51 प्रभु कहते हैं, मैं बेबिलोन और
लेबकामै के निवासियों के विरोध
में एक बर्बाद करनेवाली हवा चलाऊँगा।
2 ऐसे लोगों को बेबिलोन के पास भेजूँगा,
जो उसको पटक-पटककर उड़ा देंगे। इस
तरह उनका देश सुनसान हो जाएगा। चारों
ओर से उसके लिए मुसीबत का समय होगा।
3 ऐसे धनुर्धारी जो झिलम पहने हैं, उनके
विरोध में धनुर्धारी उठ खड़े हुए। उसके
जवानों पर दया मत दिखाना। उसकी पूरी
फौज को बर्बाद कर डालो। 4 कसदियों के
देश में मरे हुए और उसकी सड़कों में छिदे हुए
लोग गिरेंगे। 5 क्योंकि इस्राएल और यहूदा के
देश इस्राएल के पवित्र के विरूद्ध किए हुए
अपराधों से भरपूर हो गए हैं, फिर भी उनके
परमेश्वर ने उन्हें छोड़ा नहीं। 6 “ बेबिलोन
में से भागो, अपनी अपनी जान बचाओ।
उसके नाजायज़ कामों में शामिल होकर तुम
भी न मर मिटो, क्योंकि यह प्रभु के बदला
लेने का समय है। 7 बेबिलोन, प्रभु के हाथ
में एक सोने की तरह कटोरा था। उससे
सारी दुनिया के लोगों को नशा आता था।
देश -देश के लोगों ने उसके दाखमधु में से
जो पिया; इसीलिए वे भी बावले हो गए।
8 बेबीलोन को अचानक ही ले लिया गया
और नष्ट किया गया। उसके लिए हाय-हाय
करो। उसके ज़ख्मों के लिए बलसान दवाई
लाओ, हो सकता है कि वह ठीक हो जाए।
9 बेबिलोन का हमने इलाज तो किया लेकिन
वह ठीक न हुआ। इसलिए आओ, उसे
त्याग कर हम अपने -अपने देश को चले
जाएँ। क्योंकि उस पर किए गए इन्साफ
का फैसला आकाश, यहाँ तक कि स्वर्ग
तक पहुँच गया है। 10 प्रभु ने हमारे अच्छे
कामों को दिखा दिया है। इसलिए आओ, हम
सिय्योन में अपने प्रभु के कामों का बखान
करें। 11 तीरों की धार बढ़ाओ, ढालें थामे
रहो, क्योंकि प्रभु ने मादी राजाओं के मन
को उभारा है, उसने बेबिलोन को बर्बाद
करने की कल्पना की है, क्योंकि प्रभु अर्थात
उसके मन्दिर का यही बदला है। 12 बेबिलोन
की शहरपनाह के विरोध में झण्डा खड़ा
करो। ढेर सारे सुरक्षाकर्मी बैठाओ। जान लेने
वालों को बैठाओ, क्योंकि प्रभु ने बेबिलोन
के रहनेवालों के खिलाफ़ जो कुछ कहा
था, वह अब करने पर हैं, वरन किया भी
है। 13 हे बहुत से जलाशयों के बीच बसी
हुई और बहुत भण्डार रखने वाली, तुम्हारा
आखिरी वक्त आ चुका है। 14 सेनाओं के प्रभु
ने अपनी शपथ खाई है कि निश्चय मैं तुम
को टिड्डियों की तरह अनगिनित लोगों से भर
दूँगा वे तुम्हारे खिलाफ़ ललकारेंगे। 15 अपनी
ताकत से उन्होंने पृथ्वी को बनाया और
अपनी बुद्धि से स्थिर किया और आकाश को
अपनी समझ से ताना है। 16 उनके बोलने पर
आकाश में पानी की सी बड़ी आवाज़ गूँजती
है। वह पृथ्वी के छोर से कुहरा उठाते हैं।
बरसात के लिए वह बिजली बनाते हैं और
भण्डार से हवा निकाल ले आते हैं। 17 सभी
इन्सान जानवर की तरह ज्ञान से खाली हैं।
सभी सोनारों को अपनी खोदी गई मूरतों के

कारण शर्मिन्दा होना पड़ेगा। उनकी ढाली
हुई मूरतें धोखा देती हैं। वे सांस भी नहीं लेती
हैं। 18 वे तो बेकार और ठट्ठे के लायक हैं।
उनकी बर्बादी का समय आने पर वे बर्बाद
होंगी ही। 19 लेकिन याकूब का अपना हिस्सा
है, वह उनकी तरह नहीं। उन्होंने सब को
बनाया है और इस्राएल उनका अपना हिस्सा
है। वह फौजों के स्वामी हैं। 20 "आप मेरे
लिए फरसा और युद्ध के लिए हथियार हैं।
आपके द्वारा मैं देश-देश को तितर-बितर कर
दूँगा। आपके द्वारा ही मैं राज्य -राज्य को
नष्ट करूँगा। 21 आपके द्वारा मैं सवार सहित
घोड़ों को टुकड़े-टुकड़े करूँगा। 22 आपकी
ही मदद से सवारों समेत रथ को भी टुकड़े
-टुकड़े करूँगा। मैं आपके द्वारा महिला और
पुरूष दोनें ही को टुकड़े-टुकड़े करूँगा।
आपकी सहायता ही से मैं जवान पुरूष
और जवान महिला दोनों को टुकड़े-टुकड़े
करूँगा। 23 आपके द्वारा ही मैं भेड़ बकरियों
समेत चरवाहे के समाम हिस्से कर डालूँगा।
मैं किसान और बैल जोड़ियों के भी टुकड़े
- टुकड़े करूँगा। अधिपतियों और गवर्नरों
का भी मैं यही हाल करूँगा। 24 "मैं बेबिलोन
और सारे कसदियों को भी उनके बुरे कामों
की सज़ा दूँगा, जो उन लोगों ने तुम लोगों
के देखते सिय्योन में की है। 25 हे नाश करने
वाले पहाड़, जिसके द्वारा सारी पृथ्वी बर्बाद
हुई, प्रभु कहते हैं, कि "मैं तुम्हारा मुकाबला
करूँगा, मैं तुम्हें चट्टानों पर से लुढ़का दूँगा
और जला हुआ पहाड़ बनाऊँगा। 26 लोग
तुम से न तो घर के कोने के लिए पत्थर
लेंगे, और न नींव के लिए क्योंकि तुम सदा
उजड़े रहोगे। 27 "देश में झण्डा खडा करो,
देश-देश में नरसिंगा फूंको। उसके विरूद्ध
देश -देश को तैयार करो। अरारात, मिन्नी
और अशकनज नामक राज्यों को उसके
विरूद्ध बुलाओ। उसके विरूद्ध सेनापति भी
ठहराओ। घोड़ों को शिखरवाली टिड्डियों की
तरह अनगिनित चढ़ा ले आओ। 28 उसके
विरूद्ध देशों को तैयार करो। मादी राजाओं
और उनके अधिपतियों; सब गर्वनरों सहित
उस राज्य के सारे देश को तैयार करो।
29 प्रभु ने सोचा है कि वह बेबिलोन के
देश को ऐसा उजाड़ करे कि उस में कोई
न रहे। इसलिए पृथ्वी काँपती और दुखित
होती है। 30 बेबिलोन के बहादुर लोग किलों
में रहकर, लड़ने को स्वीकार नहीं करते।
उनकी बहादुरी जाती रही है। यह देखकर कि
उनके निवास स्थानों में आग लग चुकी है।
वे स्त्री की तरह हो गए हैं। उसके फाटक
के बेण्डे तोड़े जाए। 31 एक हरकारा दूसरे
हरकारे से और एक समाचार देनेवाला दूसरे
समाचार देनेवाले से मिलने और बेबिलोन
के राजा को यह संदेश देने के लिए दौड़ेगा
कि तुम्हारा नगर चारों ओर से ले लिया
गया है। 32 घाट दुश्मनों के अधिकार में
हो गए हैं, तालाब भी सुखाए गए और
सैनिक घबरा गए हैं। 33 क्योंकि इस्राएल के
परमेश्वर प्रभु कहते हैं:बेबिलोन की बेटी
दाँवते समय के खलिहान के समान है। कुछ
ही दिनों में उसकी कटनी का समय आएगा।
34 "बेबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने मुझे
खा लिया है, मुझे पीस डाला है। उसने
मुझे छूछे बर्तन की तरह कर दिया। उसने
मगरमच्छ के समान मुझ को निगल लिया है
और मुझे जायकेदार खाना समझकर अपना
पेट मुझ से भर लिया है। उसने मुझे ज़बरदस्ती
निकाल दिया है। 35 सिय्योन की रहनेवाली
कहेगी, "जो उपद्रव मुझ पर और मेरी देह
पर हुए हैं, वह बेबिलोन पर आ पड़े।" और
यरूशलेम कहेगी, "मुझे में की हुई हत्याओं
का आरोप कसदियों के देश के रहनेवालों

पर लगे।” 36 इसलिए प्रभु कहते हैं, “मैं
तुम्हारा मुकदमा लड़ूँगा और बदला लूँगा।
मैं उसके तालाब और सोते को सुखा दूँगा।
37 बेबिलोन खण्डहर और गीदड़ों के रहने
की जगह होगी। लोग देखकर दाँतो तले
उँगली दबाएँगे और ताली बजाएँगे। उसमें
कोई रहेगा भी नहीं। 38 लोग इस तरह गर्जेंगे
और गुर्राएँगे जैसे जवान शेर व शेर के बच्चे
शिकार करते समय करते हैं। 39 लेकिन वे
जब जोश में हों, तब मैं खाना तैयार करके
उन्हें इस तरह मतवाला करूँगा कि वे सदा
की नींद में पड़ेंगे और कभी न जागेंगे। 40 मैं
उन्हें भेड़ों के बच्चो और मेढ़ों और बकरों
की तरह घात करा दूँगा। 41 शेशक, जिसकी
बड़ाई सारी दुनिया में होती थी, कैसे ले लिया
गया ? वह कैसे पकड़ा गया ? 42 बेबिलोन
के ऊपर समुद्र चढ़ आया है, वह उसकी ढेर
सारी लहरों में डूब गया। 43 उसके नगर उजड़
गए हैं। पानी का नामों निशान नहीं रहा, न ही
वहाँ जीवन रहा। 44 मैं बेबिलोन में बेल को
सज़ा दूँगा, उसने जो कुछ निगल लिया है,
वह उसके मुँह से उगल लाऊँगा। देश-देश
के लोग फिर पंक्ति बांधे न चलेंगे। बेबिलोन
की शहरपनाह गिरा दी जाएगी। 45 हे मेरी
प्रजा, उसमें से निकल आओ, अपनी अपनी
जान को प्रभु के भड़के गुस्से से बचाओ।
46 जब उस देश में उड़ती हुई बात सुनाई दे,
तब तुम्हारा मन न घबराए। और जो उड़ती
हुई चर्चा पृथ्वी पर सुनी जाएगी, उससे तुम
न डरना। उसके एक साल बाद एक और
बात उड़ती हुई आएगी, तब उसके बाद दूसरे
साल में एक और बात उड़ती हुई आएगी
और उस देश में बवाल होगा और एक गवर्नर
दूसरे के विरूद्ध होगा। 47 इसलिए देखो, ऐसा
समय आएगा, जब बेबिलोन की खुदी मूरतों
पर सज़ा का हुक्म दिया जाएगा। उस पूरे देश
को शर्मिन्दा होगा पड़ेगा। उसके मारे लागे
उसमें पड़े रहेंगे। 48 तब स्वर्ग और पृथ्वी में
सभी रहने वाले बेबिलोन पर खुशी मनाएँगे,
क्योंकि उत्तर दिशा से नाश करनेवाले उस
पर हमला करेंगे, यह प्रभु का कहना है।
49 जिस तरह बेबिलोन ने इस्राएल के लोगों
को मारा, उसी तरह सारे देश के लोग उसी में
मारे जाएँगे। 50 हे तलवार से बच जाने वाले
लोगो, भागो, खड़े न रहो। प्रभु को दूर से
याद करो और यरूशलेम का ध्यान रखो।
51 हम परेशान हैं, क्योंकि हमने अपनी निन्दा
सुनी है। प्रभु के घर में दुष्ट घुस आए हैं।
इसलिए हम शर्मिन्दा हैं। 52 इसलिए देखो,
प्रभु के अनुसार ऐसा समय आनेवाला है कि
मैं उसकी खुदी मूरतों को सज़ा दूँगा। 53 चाहे
बेबिलोन ऐसा ऊँचा बन जाए कि आकाश
से बातें करे और उसके ऊँचे किले और भी
मजबूत किए जाए, तौभी मैं उसे नष्ट करने
के लिये लोगों को भेजूँगा। 54 बेबिलोन से
चिल्लाहट का शब्द सुनाई पड़ता है। कसदियों
के देश से सत्यानाश का बड़ा कोलाहल
सुनाई देता है। 55 क्योंकि प्रभु बेबिलोन का
नाश कर रहे हैंऔर उसके बड़े शोर को
बन्द कर रहा है। और उसके बड़े कोलाहल
को बन्द कर रहा है। इस से उनका शोर
महासागर का सा सुनाई देता है। 56 बेबिलोन
पर भी नाश करने वाले चढ़ आए हैं, और
उसके बहादुर जवान पकड़े गए हैं। उनके
धनुष तोड़ डाले गए, क्योंकि प्रभु बदला
देनेवाले प्रभु हैं, वह जरूर ही बदला लेगा।
57 मैं उसके गवर्नरों, पण्डितों, अधिपतियों,
रईसो और शूरवीरों को इस तरह नशे में
डालूँगा कि वे हमेशा की नींद में सो जाएँगे,
वे फिर जागेंगे नहीं। सेनाओं के प्रभु, जिनका
नाम राजाधिराज हैं, यही कहते हैं। 58 यह
भी कि बेबिलोन की चौड़ी शहरपनाहें नेव

से ढाई जाएँगी, और उसके ऊँचे फाटक आग लगाकर जलाए जाएँगे। उसमें राज्य -राज्य के लोगों की मेहनत बेकार ठहरेगी और देशों की मेहनत आग का कौर हो जाएगी और वे थक जाएँगे। 59 यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के चौथे साल में जब उसके साथ सरायाह भी बेबिलोन को गया था; जो नेरिय्याह का बेटा महसेयाह का पोता और राजभवन का अधिकारी भी था। 60 तब यिर्मयाह नबी ने उसको ये बातें बताई अर्थात वे सभी बातें जो बेबिलोन पर पड़नेवाली मुसीबत के बारे में लिखी हुई है; यिर्मयाह ने उन्हें अपनी किताब में लिखा है। 61 यिर्मयाह ने सरायाह से कहा,"जब तुम बेबिलोन में पहुँचो, तब इन बातों को पढ़ना ज़रूर, 62 और यह कहना,'हे प्रभु आपने तो इस जगह को मिटा डालने के बारे में कहा था, और यह भी कि यहाँ कोई इन्सान या जानवर ज़िन्दा न रहेगा यह जगह उजाड़ हो जाएगी।" 63 जब तुम इस किताब को पढ़ चुको, तब एक पत्थर के संग बाँधकर फरात महानद के बीच में फेंक देना, 64 और यह कहना, "ऐसे ही बेबिलोन डूब जाएगा और मैं उस पर ऐसी मुसीबत डालूँगा कि वह फिर कभी न उठेगा। इस तरह उसकी सारी मेहनत बेकार ठहरेगी और वे थके रहेंगे। यहाँ तक यिर्मयाह के वचन हैं।

52 जब सिदकिय्याह गद्दी पर बैठा, तब उसकी उम्र इक्कीस साल थी। उसने यरूशलेम में ग्यारह साल तक शासन किया उसकी माता का नाम हमूतल था। वह लिब्नावासी यिर्मयाह की बेटी थी। 2 उसने यहोयाकीम के सभी कामों की तरह वहीं किया जो प्रभु की निगाह में गलत था। 3 प्रभु की सजा के कारण यरूशलेम और यहूदा की हालत यह हुई कि अन्त में उसने उन्होंने उनको अपने सामने से दूर किया । सिदकिय्याह ने बेबिलोन के राजा से बगावत की। 4 उसके राज्य के नौंवे साल के दसवें महीने के दसवें दिन को बेबिलोन के राजा नबूकद्नेस्सर ने अपनी पूरी फौज लेकर यरूशलेम पर हमला बोल दिया। उसने उसके आस-पास छावनी करके उसके चारों ओर किला बनाया। 5 नगर घेर लिया गया और सिदकिय्याह राजा के ग्यारहवें साल तक घिरा रहा। 6 चौथे महीने के नौंवे दिन से नगर में महंगाई इतनी हो गई कि खाना न था। 7 तब नगर की शहरपनाह में दरार बनाई गई और दोनों दीवारों के बीच जो सभी सैनिक भागकर रात ही में निकले और अराबा का रास्ता लिया। 8 लेकिन उनकी फौज ने राजा का पीछा किया और उसे यरीही के पास अराबा में पकड़ लिया। तब उसकी पूरी फौज उसके पास तितर-बितर हो गई। 9 तब वे राजा को पकड़कर हमात देश के रिबला में बेबिलोन के राजा के पास ले गए और वहाँ उसने राजा को आदेश दिया। 10 बेबिलोन के राजा ने सिदकिय्याह के बेटों को उसके सामने मार डाला। 11 फिर बेबिलोन के राजा सिदकिय्याह की आँखों को फुड़वा दिया। उसको जंजीर से बाँधकर बेबिलोन ले गया। वहाँ उसे जेल में डाल दिया। मरने तक वह वही रहा। 12 फिर उसी साल अर्थात बेबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर के राज्य के उन्नीसवें साल के पाँचवे महीने के दसवें दिन को अंगरक्षकों का प्रधान नबूज़रदान जो बेबिलोन के राजा के सामने खड़ा रहता था, यरूशलेम में आया। 13 उसने प्रभु के भवन और राजभवन और यरूशलेम के सभी बड़े घरों को आग से फुँकवा दिया। 14 कसदियों की पूरी सेना ने जो अंगरक्षकों के प्रधान के संग थी, यरूशलेम के चारों

ओर की सब शहरनपानह को ढा दिया।
15 अंगरक्षकों का प्रधान नबूजरदान कंगाल
लोगों में से कितनों को, और जो लोग नगर
में रह गए थे, और जो लोग बेबिलोन के
राजा के पास भाग गए थे, और जो कारीगर
रह गए थे, उन सभी को गुलाम बना कर
ले गया। 16 लेकिन देशके गरीबों में से कुछ
को अंगरक्षकों के प्रधान नबूज़रदान ने दाख
की बारियों की देखरेख करने और खेती-
बाड़ी करने के लिए छोड़ दिया। 17 प्रभु के
भवन में जो पीतल के खम्भे थे, और कुर्सियों
और पीतल के हौज जो प्रभु के भवन में थे;
उन सभी को कसदी लोग तोड़कर उनका
पीतल बेबिलोन को ले गए। 18 और हांड़ियों,
फावड़ियों, कैचियों, कटोरों, धूपदानों और
पीतल के सभी बर्तनों को जिनसे लोग सेवा
का काम किया करते थे, वे ले गए। 19 तसले,
करछों, कटोरियों, हांडियों, दीवटों, धूपदानों
और कटोरों में से जो कुछ सोने का था,
उनके सोने को, और कुछ चाँदी का था,
उनकी चाँदी को भी अंगरक्षकों का मुखिया
ले गया। 20 दोनों खम्भे, एक हौज और पीतल
के बारहों बैल जो पायों के नीचे थे, इन
सभी को सुलेमान राजा ने प्रभु के घर के
लिए बनवाया था- इन सब का पीतल तौल
से बाहर था। 21 जो खम्भे थे उन में से एक
-एक की ऊँचाई अठारह हाथ और घेरा बारह
हाथ और मोटाई चार अंगुल की थी और
वे सभी भीतर से खोखले थे। 22 एक-एक
की कंगनी पीतल की बनी थी। हर -एक
कंगनी की ऊँचाई पाँच हाथ की थी। उस
पर चारों ओर जाली और अनार पीतल धातु
के थे। 23 कंगनियों के चारों ओर छियानवे
अनार बने थे। जाली के ऊपर चारों ओर एक
सौ अनार थे। 24 सुरक्षा कर्मियों के प्रधान
ने सरायाह महापुरोहित और उसके नीचे के
सपन्याह पुरोहित और तीनों डेवढीदारों की
पकड़ लिया। 25 और नगर में से उसने एक
खोजा पकड़ लिया, जो सैनिकों के ऊपर
ठहराया गया था। जो आदमी राजा के सामने
रहा करते थे, उनमें से सात व्यक्ति जो
नगर में मिले और सेनापति का मुन्शी जो
साधारण लोगों को फौज में भर्ती करता था
और साधारण लोगों में से साठ आदमी जो
नगर में मिले, 26 इन सभी को सुरक्षा कर्मियों
का मुखिया नबूज़रदान रिबला में बेबिलोन
के राजा के पास ले गया। 27 तब बेबिलोन
के राजा ने उन्हें हमात देश के रिबला में
ऐसा हमला किया कि वे मर गए। इस तरह
यहूदी अपने देश से गुलाम के रूप में चले
गए। 28 जिन लोगों को नबूकदनेस्सर गुलाम
बनाकर ले गया, वे ये हैं, अर्थात उसके राज्य
के सातवे साल में तीन हज़ार तेईस यहूदी,
29 फिर अपने राज्य के अठारहवें साल में
नबूकदनेस्सर यरूशलेम से आठ सौ बत्तीस
लोगों को गुलाम बनाकर ले गया। 30 फिर
नबूकदनेस्सर के राज्य के तेईसवें साले में
सुरक्षा कर्मियों का प्रधान नबूज़रदान सात
सौ पैंतालीस लोगों को बंधुए के रूप् में ले
गया। कुल मिलाकर वे चार हज़ार छैः सौ
थे। 31 फिर यहूदा के राजा यहोयाकीन की
गुलामी के सैंतीसवें साल में अर्थात जिस वर्ष
बेबिलोन का राजा एबीलमरोदक राजासन
पर बैठा, उसी के बारहवें महीने के पच्चीसवें
दिन को उसने यहूदा के राजा यहोयाकीन
को कारावास से निकाल दिया। 32 और उस
से मीठी-मीठी बातें करके जो राजा उसके
साथ बेबिलोन में गुलाम थे, उनके राजासनों
से उसके राजासन को अधिक ऊँचा किया।
33 उसके जेल के कपड़े बदल दिए और वह
जीवन भर हर दिन राजा के साथ खाना खाया
करता रहा। 34 हर दिन के खर्च के लिए

बेबिलोन के राजा के यहाँ से उसके लिए कुछ वस्तुओं का इन्तजाम हुआ। ऐसा उसके मरने के दिन तक था।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com